वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL PATH

जनवरी-फरवरी 2024
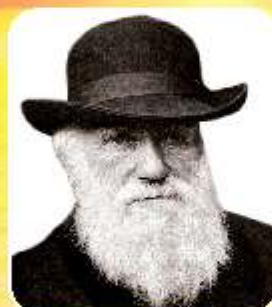
डार्विन से डर क्यों (11)

फ़ातिमा शेख़ को याद करें (5)

झांसी की रानी का पुर्नजन्म (6)

41 मजदूरों को बचाने वाले जांबाज मजदूर बने देश के असली हीरो (26)

बच्चों के लिए अर्थशास्त्र (37)

अंधविश्वास को खाद-पानी डालने वाली तथा कथित धार्मिक नीति मानसिक गुलामी का निर्माण करती है और अनैतिकता को जन्म देती है। – डा. नरेंद्र दाभोलकर

हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिए
हम लड़ेंगे साथी, ग़ुलाम इच्छाओं के लिए
हम चुनेंगे साथी, ज़िन्दगी के टुकड़े।

हथौड़ा अब भी चलता है, उदास निहाई पर
हल की लीकें अब भी बनती हैं, चीख़ती धरती पर
यह काम हमारा नहीं बनता, सवाल नाचता है
सवाल के कंधों पर चढ़कर
हम लड़ेंगे साथी

क़त्ल हुए जज़्बात की क़सम खाकर
बुझी हुई नज़रों की क़सम खाकर
हाथों पर पड़े गाठों की क़सम खाकर
हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे तब तक
कि बीरू बकरिहा जब तक
बकरियों का पेशाब पीता है
खिले हुए सरसों के फूल को
बीजने वाले जब तक ख़ुद नहीं सूँघते
कि सूजी आँखों वाली
गाँव की अध्यापिका का पति जब तक
जंग से लौट नहीं आता
जब तक पुलिस के सिपाही
अपने ही भाइयों का गला दबाने के लिए विवश हैं
कि बाबू दफ़्तरों के
जब तक रक्त से अक्षर लिखते हैं...
हम लड़ेंगे जब तक
दुनिया में लड़ने की ज़रूरत बाक़ी है...

जब तक बंदूक न हुई, तब तक तलवार होगी
जब तलवार न हुई, लड़ने की लगन होगी
लड़ने का ढंग न हुआ, लड़ने की ज़रूरत होगी
और हम लड़ेंगे साथी...

हम लड़ेंगे
कि लड़ने के बग़ैर कुछ भी नहीं मिलता
हम लड़ेंगे
कि अब तक लड़े क्यों नहीं
हम लड़ेंगे
अपनी सज़ा कबूलने के लिए
लड़ते हुए मर जानेवालों
की याद ज़िन्दा रखने के लिए
हम लड़ेंगे साथी...

पाश

मुख्य संपादक
बलबीर लौंगोवाल
balbirlongowal1966@gmail.com
98153 17028

संपादक
प्रा बलवंत सिंह
tarksheeleditor@gmail.com
94163 24802

संपादकी मंडल
अजायब जलालाना (94167 24331)
कृष्ण कायत (98961 05643)

विदेशी प्रतिनिद्धि
अवतार बाई कनेडा
प्रधान TRSC (+1-672-558-5757)
अछर सिंह खरलवीर कवैंटरी (इंगलैंड)
(+44-748-635-1185)
मा. भजन सिंह कनेडा, बलदेव रहिपा टोरांटो

पत्रिका शुल्क :-
वार्षिक : 150/- रू.
विदेश : वार्षिक : 40 यू.एस.डॉलर
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला-148101
01679-241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

प्रा. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक, मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क
पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400 में जमा करा सकते है।
एंव पत्रिका भेजने के लिए एड्रेस व शुल्क की स्क्रीन शॉट/रसीद मोबाइल नम्बर
+91 98156 70725 पर वट्सएप कर दें।

इस अंक में

आनलाईन पत्रिका को पढ़ने के लिए:
www.tarksheel.org,
http://tarksheelblog.wordpress.com
Tarksheel on Mobile App:
Readwhere.com

संपादकीय

2023 की दहलीज को लांघ कर ''उज्ज्वल सवेरों'' की उम्मीद के साथ हम 2024 के दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। मानवीय जीवन की सार्थकता ही इस बात में निहित है कि दु:खों, तकलीफों, चुनौतियों के रूबरू होते हुए, जहां पर भविष्य को मेहनत करते हुए/संघर्ष करते हुए अत्यन्त गर्मजोशी के साथ मिलना होता है अथवा टकराना होता है, वहीं पर बीते हुए समय को अथवा अतीत को भूलने या दफा करने के स्थान पर उससे एक दिशा प्राप्त करनी होती है, अपनी कमियों एवं कमजोरियों का निरीक्षण-परीक्षण करना होता है। जहां पर भविष्य हमारे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है, वहीं पर अतीत भी हमारी अमीर विरासत (अच्छी अथवा बुरी) होता है। प्रसिद्ध रूसी चिंतक रसूल हमजातोव ने वैसे ही तो नहीं कह दिया कि ''यदि तुम बीते हुए पर पिस्तौल के साथ गोली चलाओगे तो भविष्य तुम्हें तोप के साथ उड़ा देगा।'' वर्ष 2023 को पार करके बहुत बड़ी सामाजिक चुनौतियों के साथ हम 2024 में प्रवेश कर रहे हैं। गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, स्तरीय शिक्षा/स्वास्थ्य सुविधाओं की भारी कमी की भयानक मार झेल रहा है हमारा समाज। जिस समाज में समानता लेकर आगे के लिए, गुलामी को खत्म करने के लिए हमारे महान् शहीदों-प्रजामंडल, गदर पार्टी, जलियांवाला बाग, हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र संघ, मुजारा लहर के योद्धाओं ने अविस्मरणीय कुर्बानियां दी थीं, वहां पर आज श्रमिक वर्ग वैसे ही शोषण का शिकार हो रहा है, सामाजिक अन्याय से पीड़ित है। जाति-पाति एवं धार्मिक भेदभाव अभी भी जारी है। गरीब और अधिक गरीब तथा अमीर और अधिक अमीर होता जा रहा है। बीते समय की एक ईस्ट इंडिया कंपनी तो क्या, आज सैंकड़ों बहुराष्ट्रीय कंपनियां, कार्पोरेट घरानों को भारत के शासक अत्यन्त गर्मजोशी के साथ भारत भूमि पर आने के लिए बुलावा दे रहे हैं, तथा कितनी ही ऐसी कंपनियां यहां पर अपने पैर जमा चुकी हैं। आम जनता की मेहनत एवं धन के साथ निर्मित सार्वजनिक क्षेत्र को आज पूरी तरह से तबाह करने के पथ पर पड़े हुए हैं यहां के हुकमरान। देश के युवा जिन्होंने हमारे शहीदों-भगत सिंह, करतार सिंह सराभा, ऊधम सिंघ, खुदी राम बोस, अशफाक उल्ला खां इत्यादि के वारिस बनना था, उनको नशों के सागर में डुबोया जा रहा है। अब युवा वर्ग विदेशी धरती पर रोजगार के लिए प्रवास करने के लिए विवश हैं। उनके हाथों में तलवारें, त्रिशूल पकड़वा कर उनको एक दूरे के खून के प्यासे सांप्रदायिक जुनूनियों में तब्दील किया जा रहा है। ''यदि रोटी देता देश री माँ, तो मैं क्यों जाता परदेस री मां'' की मन को झकझोर कर देने वाली पुकार हमारे दिलों को चीर रही है। नवयुवकों के मुद्दों को इतना तिरस्कृत किया जा रहा है कि अब नौजवानों को अपने मुद्दों को बुलंद करने के लिए संसद की गैलरी से कूदना तक पड़ गया। हुकूमत ने उन पर यू.ए.पी.ए. तो लगा दिया परन्तु इस बात पर पार्लियामेंट में कोई बहस नहीं हुई कि नवयुवकों को ऐसा रास्ता क्यों अपनाना पड़ गया। जनविरोधी कानूनों के साथ जुबान को बंद करने का यह पहला यत्न

शेष पृष्ठ 36 पर

स्कूल में दौरा पड़ने का रहस्य सुलझाया

बलवन्त सिंह लेक्चरार

शुभम अपने शहर के एक नामी-गिरामी प्राईवेट स्कूल में चौथी कक्षा का विद्यार्थी था। उसका पिता राजेश तीन वर्ष पूर्व अमेरिका में चला गया था। शुभम अपने माता-पिता की इकलौती संतान था। राजेश अब अमेरिका में काफी अच्छी कमाई करने लग गया था। राजेश एवं उसकी पत्नी ममता की अभिलाषा थी कि वे अपने पुत्र को बेहतरीन शिक्षा दिलवाएंगे। इसी बात को ध्यान में रख कर उन्होंने अपने इलाके के एक प्रतिष्ठित स्कूल में उसका दाखिला करवा दिया था। राजेश का परिवार वैसे तो पहले से ही काफी संपन्न परिवार था। शहर के नजदीक ही गांव में उनकी काफी पुश्तैनी जमीन थी। इसलिए राजेश स्वयं ही शुभम को शहर के एक प्रतिष्ठित स्कूल में दाखिल करवा गया था। अब तो राजेश स्वयं अमेरिका में काफी अच्छी कमाई कर रहा था, इस लिए अब उन दोनों पति-पत्नी का एकमात्र उद्देश्य अपने लाडले को अच्छी से अच्छी शिक्षा ग्रहण करवाना था।

तीसरी कक्षा तक तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता जा रहा था। परन्तु चौथी कक्षा में दाखिला होने के दो-तीन महीने में उसे स्कूल में दौरा पड़ना शुरू हो गया। शुरू-शुरू में सप्ताह में एक-दो बार उसे दौरा पड़ा करता था, परन्तु अब धीरे-धीरे इसमें बढ़ौतरी होती चली जा रही थी। अब तो कई बार घर में स्कूल जाने की तैयारी करते समय भी उसे दौरा पड़ने लग गया था। जब वह स्कूल में जाता तो पहली अथवा दूसरी घंटी में उसे दौरा पड़ जाता। स्कूल से उनके घर में फोन आ जाता और घर वाले उसे ले कर पहले पहल तो डॉक्टरों के पास लेकर जाते रहे और शुभम के अनेकों प्रकार के टेस्ट करवाते रहे। परन्तु सभी टेस्टों में से किसी में भी किसी बीमारी के कोई भी लक्षण नहीं नज़र आए। परन्तु फिर भी एक डॉक्टर ने उसे मिर्गी का दौरा बता कर मिर्गी की दवाई शुरू करवा दी। वे लगातार कई महीने शुभम को मिर्गी की दवाई खिलाते रहे परन्तु आराम आने के बजाय उस के दौरों की समस्या बढ़ती ही चली जा रही थी।

डॉक्टरी इलाज के साथ-साथ अंधविश्वासी मानसिकता के कारण शुभम के घर वाले उसे उनके गांव में चौकी लगाने वाले बाबा के पास झाड़ा करवाने के लिए भी ले गये। उस बाबा ने शुभम का झाड़ा लगा दिया और साथ में घर वालों को बता दिया कि शुभम के ऊपर किसी ने कोई जादू-टोना करवाया हुआ है। उस बाबा से लगातार पांच बार झाड़ा करवा लेने के बाद भी शुभम को कोई आराम नहीं आया, परन्तु घर वालों के मन में बाबा की जादू-टोना किया होने की बात ने घर कर लिया। अब वे शुभम को लेकर अनेकों बाबाओं, तान्त्रिकों, मुल्ला-मौलवियों की शरण में जाते रहे। सभी बाबा लोग उनसे चौकियां भरवाते रहे और उनका खर्चा करवाते रहे। परन्तु शुभम को दौरों से आराम आने की बजाय मामला और अधिक बिगड़ता चला गया।

अन्त में उनके एक परिचित ने, जो कि तर्कशील सोसायटी द्वारा किये जाने वाले जनहित के कार्यों से परिचित था, उन्हें मेरा पता बता कर मेरे पास समस्या का समाधान करवाने के लिए भेज दिया। वे शुभम को लेकर परामर्श केन्द्र में मेरे पास आ गए। मैंने शुभम व उसकी मां को सामने बिठा कर उनसे मामले की शुरूआत से सारी जानकारी प्राप्त की। उनकी सभी बातों को ध्यानपूर्वक सुन कर और फिर उसका विश्लेषण करने के पश्चात् मैंने शुभम की समस्या के मर्म को पूरी तरह से समझ लिया और फिर मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग द्वारा उसका समाधान कर दिया। फिर उन्हें चार-पांच बार परामर्श केन्द्र में बुला कर पक्के तौर पर शुभम का मनोबल बढ़ाया और फिर उसके पश्चात् शुभम को स्कूल में अथवा घर में कभी भी दौरा नहीं पड़ा। इसके साथ-साथ मैंने उसकी मिर्गी की दवाइयां भी पूर्ण तौर पर बंद करवा दी गई।

दौरा पड़ने के कारण :-शुभम अपने मां-बाप की इकलौती संतान था, अतः वह अपने माता-पिता का अत्यंत लाडला था। अब जब उसका पिता राजेश अमेरिका में चला गया तो उसकी मां उससे और भी अधिक लाड-प्यार दर्शाने लग पड़ी थी। घर पर तो शुभम अपनी मां तथा दादा-दादी का अत्यन्त चहेता था परन्तु स्कूल में उसे पूरे अनुशासन में रहना पड़ता था। इसके साथ-साथ अपने देश में ज्यादातर प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूल अंग्रेजी मीडियम के होने के कारण अंग्रेजी भाषा पर ही अधिक ध्यान देते हैं। ऐसे में बहुत से

छात्र अपनी मातृ-भाषा में फिसड्डी होते चले जाते हैं। शुभम पर भी स्कूल में तथा घर में अंग्रेज़ी पर अधिक ध्यान दिया जाता था। अत: वह अपनी मातृ-भाषा हिन्दी में काफी पिछड़ गया था। चौथी कक्षा में दाखिल होने पर उसकी कक्षा की हिन्दी पढ़ाने वाली अध्यापिका काफी सख्त स्वभाव की थी। शायद वह बाल-मनोविज्ञान को समझने में पूरी तरह से असमर्थ भी हो। वह बात-बात पर बच्चों को झिड़क दिया करती थी। शुभम उसकी मानसिक प्रताड़ना का सबसे ज्यादा शिकार बन जाया करता था। कभी-कभी तो वह मैडम बच्चों को डंडे भी मार दिया करती थी। शुभम घर पर तो सब की आंखों का तारा था, परन्तु स्कूल में हिन्दी वाली मैडम का व्यवहार उसे मानसिक रोगी बनाता चला जा था। एक-दो बार जब हिन्दी वाली मैडम ने झिड़कने के साथ-साथ जब उसे डंडे भी मार दिये तो उसके अवचेतन मन में एक दहशत सी फैलती चली गई। उनकी हिन्दी विषय की दूसरी घंटी हुआ करती थी। इसीलिए शुभम को पहली घंटी में अथवा दूसरी घंटी में ही दौरा पड़ा करता था। तीसरी घंटी में अथवा उसके बाद में उसे कभी भी दौरा नहीं पड़ता था। हिन्दी वाली मैडम के निर्दयी व्यवहार के कारण अब शुभम स्कूल जाने में भी आना-कानी करने लग पड़ा था, परन्तु उसकी मां जबरदस्ती से उसे तैयार कर के स्कूल की वैन पर चढ़ा दिया करती थी। इसी कारण अब कभी-कभी उसे घर पर स्कूल के लिए तैयार होते समय भी दौरा पड़ जाया करता था।

दौरा पड़ने के बाद घर वाले उसे स्कूल से घर पर वापिस ले आया करते थे। इस प्रकार उसे स्कूल में हिन्दी वाली मैडम की क्रूरता से छुटकारा पा लेने की भावना बैठ गई और अवचेतन तौर पर वह इसे एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने लग गया था। परेशान हो कर जब घर वाले उसे डॉक्टरों के पास इलाज के लिए ले कर गये तो उन डॉक्टरों ने उसे अनेकों प्रकार के टेस्ट तो करवा लिए परन्तु उसके मन की भावना को नहीं समझ सके।

वास्तव में वे उसे किसी अच्छे मनोचिकित्सक के पास तो लेकर नहीं गये थे, बल्कि सामान्य डॉक्टरों से ही उसका इलाज करवाते रहे थे। सामान्य चिकित्सकों ने उसके बाल-मनोविज्ञान का विश्लेषण तो किया नहीं, बल्कि उसके दौरों को मिर्गी के लक्षण समझ कर उसकी मिर्गी की दवाई शुरू कर दी। लगभग 6 महीनों तक वे उसे मिर्गी की ही दवाई खिलाते रहे। बाबाओं ने तो मौके का फायदा उठाना ही था। जब बाबाओं ने देखा कि यह एक संपन्न परिवार का बालक है और उसका पिता अमेरिका में गया हुआ है तो उन्होंने परिवार वालों को गुमराह करके उनसे चौकियां भरवाते रहे और उनसे पैसे ऐंठते रहे।

मैंने शुभम की मां को तथा साथ में आए हुए परिवारजनों को सारी वस्तुस्थिति समझा कर उन्हें स्कूल में जा कर स्कूल के प्रिंसीपल से मिल कर उसे शुभम की इस मानसिक समस्या के बारे में बता कर हिन्दी वाली मैडम को अपना व्यवहार सुधारने का निर्देश देने का अनुरोध करने के बारे में कह दिया। अगले ही दिन परिवार के कुछ लोग स्कूल में जाकर प्रिंसीपल से मिले तथा उनकी बात सुनकर प्रिंसीपल ने अपने दफ्तर में हिन्दी वाली मैडम को फटकार लगाई तथा आगे से उसे अपने व्यवहार को बदल कर बच्चों के साथ सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करने के लिए कह दिया। उसके बाद शुभम लगातार स्कूल जाता रहा तथा फिर उसे कभी भी दौरा नहीं पड़ा।

नोट-यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिए गए हैं।

कविता

लगता है उन्हें डर

वतन

लगता है उन्हें डर
हमारे अलफाजों की तपिश से।
लगता है उन्हें डर
तबदीली की आहट से।
उन्हें जिंदा लोगों से नहीं
जिंदा जमीरों से डर लगता है।
उन्हें जवाबों से नहीं
सवालों से डर लगता है।
उन्हें हम से नहीं
हमारे अलफाजों से डर लगता है।
नफरत की दीवारें
हथियार हैं उनका।
मर चुकी जमीरें
खवाब हैं उनका।
उन्हें पंछियों से नहीं
पंछियों की उड़ान से डर लगता है।
उन्हें हमारे होने से नहीं,
हमारे बोलने से डर लगता है।

चार्ल्स डारविन : एक महान वैज्ञानिक

-श्वेता

तुमने चार्ल्स डारविन का नाम अपनी विज्ञान की पुस्तकों में जरूर ही पढ़ा होगा। डारविन को हम एक महान वैज्ञानिक के रूप में इसलिए जानते हैं क्योंकि उन्होंने ठोस तथ्यों के आधार पर यह पता लगाया था कि मनुष्य की उत्पत्ति इस धरती पर कैसे हुई है। उन्होंने यह भी पता लगाया कि पूरे प्राणी जगत के विकास के कुछ निश्चित नियम हैं और मनुष्य उस विकास प्रक्रिया का सबसे उन्नत कड़ी है। प्राणी एवं वनस्पति जगत दोनों ही निरंतर बदलते रहते हैं। वे अपने आपको वातावरण के अनुसार ढाल लेते हैं। जो अड़ियल होते हैं वह खत्म हो जाते हैं और जो अपने को बदल लेते हैं वे विकास की अगली मंजिल में पहुंच जाते हैं। जब तक और जहां तक उनका बदलना जारी रहता है, उनके विकास का सिलसिला भी तब तक आगे बढ़ता रहता है। डारविन की यह खोज 'विकासवाद' (Evolution) के नाम से जानी जाती है। उन्होंने अपनी इस खोज को प्रमाणों सहित 'प्रजातियों की उत्पत्ति' (Origin of Species) नामक पुस्तक में प्रकाशित भी किया। इस अंक में हम डारविन के जीवन व उनकी खोज के बारे में जानने की कोशिश करेंगे।

डारविन का जन्म **12 फरवरी 1809** को श्रुशबरी, इंग्लैंड में हुआ था। वे बचपन से ही शांत, गंभीर और पैनी दृष्टि वाले थे। उन्हें बचपन से ही छोटे-छोटे रंगीन पत्थर, सिक्के, पक्षी, अण्डे, फूल, कीट-पतंगे आदि इकट्ठा करने का शौक था। डारविन का परिवार काफी सम्पन्न था। उनके पिता एक सफल चिकित्सक थे। डारविन का हृदय अपनी माँ की तरह बेहद कोमल था। किसी पर भी अन्याय होता देख उन्हें बहुत तकलीफ होती थी।

जब डारविन आठ बरस के थे तब उनकी माँ चल बसी। उनके पिता ने उन्हें उस वक्त स्कूल में दाखिल करवाया। स्कूली पाठ्यक्रम में पढ़ाये जाने वाले विषय जैसे लैटिन, ग्रीक और गणित में उनका तनिक भी मन नहीं लगता। उनका मन तो कुछ दिलचस्प करने के लिए बेचैन रहता। डारविन ने अपने पिता के बगीचे में ही एक गुप्त प्रयोगशाला बना डाली। वे वहाँ तरह-तरह के रासयनिक प्रयोग करते रहे। डारविन द्वारा किए जाने वाले इन रासायनिक प्रयोगों के कारण स्कूल के लड़कों ने उन्हें ''गैस'' के नाम से पुकारना शुरू कर दिया।

डारविन के इन प्रयोगों से परेशान होकर उनके पिता ने उन्हें स्कूल से निकाल लिया और एडिनबरा विश्वविद्यालय में उनका दाखिला करवा कर चिकित्सा-शास्त्र की पढ़ाई के लिए भेज दिया। हालांकि डारविन को चिकित्सा-शास्त्र की पढ़ाई भी काफी अरुचिकर लगी। लेक्चरों को सुनना उन्हें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता।

एक दिन आपरेशन-कक्ष में एक बच्चे का आपरेशन हो रहा था। डारविन भी वहाँ मौजूद थे। उस समय तक बेसुध करने वाली दवा का आविष्कार नहीं हुआ था। यह दवा आपरेशन के पहले रोगी के अंगों को सुन्न करने के काम आती है जिससे आपरेशन में चीर-फाड़ के दौरान रोगी को कष्ट न हो। अंगों को बिना सुन्न किये आपरेशन करने से बच्चा तकलीफ से छटपटा रहा था। बच्चे की छटपटाहट डारविन से देखी न गयी और वे आपरेशन-कक्ष से बाहर आ गए। बाद में उन्होंने डॉक्टर बनने का विचार ही त्याग दिया।

इसके पश्चात् डारविन के पिता ने चाहा कि वे धर्मोपदेशक बनें। इसी उद्देश्य से वे कैम्ब्रिज में दाखिल हुए। हालांकि तीन वर्षों के दौरान वहाँ पढ़ते हुए उनके भीतर धर्मोपदेशक बनने की तनिक भी रूचि पैदा नहीं हुई। लेकिन यहाँ उनके साथ उनके जीवन की दिशा को मोड़ने वाली एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी। डारविन की मुलाकात यहाँ प्रो. हेन्सलो नामक वैज्ञानिक से हुई। प्रो. हेन्सलो की सिफारिश पर डारविन को बिना वेतन के सहायक के रूप में 'बीगल' नाम के जहाज़ पर काम मिला। इस जहाज़ का उद्देश्य था दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया और अन्य कई द्वीपों की भौगोलिक और प्राकृतिक जाँच-पड़ताल करना।

'बीगल' की यह समुद्री यात्रा पाँच *शेष पृष्ठ 10 पर*

फ़ातिमा शेख़ को याद करें

– इंद्रजीत

9 जनवरी फ़ातिमा शेख़ का जन्म दिन है। उन्होंने शिक्षा तथा समाज सुधार के क्षेत्र में व्यापक काम किया। खासकर ज्योति राव फुले और सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर हिंदू तथा मुस्लिम समाज में महिला शिक्षा के प्रसार की शुरूआत की थी।

फ़ातिमा शेख़ स्त्रियों और बच्चों को शिक्षित करने की बजाय पूरे समाज को शिक्षित करने में विश्वास रखती थीं। इस काम के लिए उन्हें जीवन भर समाज की प्रतिक्रियावादी शक्तियों से टकराना पड़ा लेकिन अफसोस की बात है कि उनके इस संघर्ष पर इतिहास में कम ही चर्चा होती है।

फ़ातिमा शेख़ अपने भाई उस्मान शेख के साथ रहती थीं। उस्मान शेख ज्योति बा फुले के दोस्त थे और उनके सामाजिक संघर्षों के हमराह थे। सामाजिक बदलाव के इस संघर्ष में उनके भाई ने फ़ातिमा का साथ दिया। सामाजिक गतिविधियों में अत्यधिक सक्रिय रहने के कारण ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले को उनके पिता ने घर से निकाल दिया। यही समय था फातिमा शेख ने अपने घर से इस कार्य को आगे बढ़ाया और ख़ुद उस अभियान की सक्रिय हिस्सेदार और अगुवा बनीं।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार से शुरू हुआ यह संघर्ष समाज में व्याप्त छुआछूत, जातीय घृणा और अलगाव के खिलाफ सामाजिक जागरूकता के अभियान के रूप में बदलता गया और आगे बढ़ा।

जिस दौर में ज्योति राव फुले और सावित्रीबाई हिन्दू ब्राह्मणवादी विचारों तथा सामंती समाज की तमाम प्रतिक्रियावादी, मनुष्य विरोधी परंपराओं, रीति-रिवाजों और कर्मकाण्डों को नंगा कर रहे थे उस दौर में मुस्लिम समुदाय भी स्त्री-विरोध और अनेक कुरीतियों से ग्रस्त था। इस स्थिति के ख़िलाफ़ फ़ातिमा शेख ने संघर्ष की एक मज़बूत नींव डाली।

इस दौर में एक तरफ अंग्रेज पूंजीपति भारत के पूंजीपतियों के साथ मिलकर उद्योग तथा यातायात का विस्तार कर रहे थे। इसके समानांतर पूंजी के मालिक भारत की प्रतिक्रियावादी शक्तियों की मदद से एक नई तरह की नौकरशाही के साथ हाथ मिलाकर शिक्षा व्यवस्था को आगे बढ़ा रहे थे। समाज में मेहनतकशों तथा वंचित समाज के लोगों की कोई जगह न थी। कुलीन घराने के लोग अंग्रेजी शिक्षा में दीक्षित होकर पूंजी की सेवा करने वाली नौकरशाही का विकास कर रहे थे। इस नौकरशाही में तमाम पुराने सामंती व पितृसत्तात्मक परंपरा तथा संस्कृति की रक्षा कर रहे थे। अंग्रेजों की शिक्षा व्यवस्था जिस नौकरशाही को तैयार कर रही थी वह भारतीय सामंतवाद तथा पूंजी के मालिकों के हितों के लिए मेहनतकशों को हर तरह से अलगाव में डाल रहा था। ऐसे में फ़ातिमा शेख़ तथा सावित्रीबाई फुले ने मेहनतकश समाज के बीच उनके जीवन से जुड़े ज्ञान को उद्घाटित करते हुए शिक्षा और ज्ञान की नई परम्परा बनाई।

आज एक बार फिर भारत के बड़े बड़े पूंजीपति तथा विदेशी पूंजीपति के मुनाफ़े को बढ़ाने के लिए सरकार शिक्षा के निजीकरण को बढ़ावा दे रही है। शिक्षा लगातार महंगी होती जा रही है और मेहनतकश वंचित समाज शिक्षा के क्षेत्र से बाहर धकेला जा रहा है। तमाम पुराने सरकारी स्कूल तथा संस्थाओं को बंद और तबाह किया जा रहा है। गांव-गांव और मोहल्लों में निजी स्कूलों की बाढ़ आ गई है। सरकारी स्कूल से शिक्षक गायब हो रहे हैं। शिक्षण संस्थाओं की फ़ीस में लगातार तीव्र वृद्धि हो रही है। सरकार की सारी नीतियां पैसे वालों के पक्ष में बन रही हैं। मेहनतकशों को कम से कम मजदूरी देकर काम करवाने तथा टुटपूंजिया उत्पादकों के रोजगार को तबाह करने की नीति को बढ़ावा दिया जा रहा है।

बनारस जिस ''बुनकर अर्थव्यवस्था'' के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता था, उसे तबाह करने और उस क्षेत्र में बड़ी पूंजी की पकड़ को बढ़ाने की तेज मुहिम चल रही है। बेरोजगार बुनकर मजदूर बन कर मुंबई, सूरत और बेंगलुरु जा रहे हैं। वहाँ उनके बच्चों के लिए न तो शिक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्था है न ही मजदूरों के लिए कोई शिक्षा प्रशिक्षण और भविष्य है। इन शहरों *शेष पृष्ठ 48 पर*

झाँसी की रानी का पुनर्जन्म

-डॉ. नरेंद्र दाभोलकर

सांगली की सौ. सरयू सहस्त्रबुद्धे बाल-बच्चों वाली गृहिणी थी। वह पति और बाल-बच्चों में व्यस्त रहती थी। 1982 के आसपास उसके साथ एक अजीब घटना घटित हुई। उसे आभास होने लगा कि उसके पीछे कोई घूमता है। एक दिन उसे उसका स्पष्ट दर्शन हुआ। वह प्रत्यक्षतः महालक्ष्मी थीं। झाँसी संस्थान की उस कुलदेवी ने कहा, ''तुम्हें बताने आई हूँ। ठीक से याद करो, तू पिछले जन्म में झाँसी की रानी थी। उस समय के दिन बड़े दौड़-धूप के थे। तुम्हारी मृत्यु भी असमय ही हो गई। इन सभी कारणों से रस्मो-रिवाज तथा परम्परानुसार धार्मिक कार्य करना तुमसे रह गया है। इस पुनर्जन्म में तुम्हें अब उन्हें सुनियोजित रूप से पूरा करना होगा।''

संकेत मिलते ही सहस्त्रबुद्धे बाई को धीरे-धीरे सब कुछ याद आने लगा। सांगली, कोकण से अकलूज तक उन्होंने भ्रमण किया। अलग-अलग जगहों पर उन्हें मूर्तियाँ मिल गईं, जिनकी उन्होंने नौ दिन की शांति की। सांगली के एक समय के सुप्रसिद्ध पहलवान विष्णु सावर्डे अपने समय के नानासाहब पेशवा हैं, इसका उन्हें स्मरण हुआ। शिवाजीराव सावर्डे रावसाहेब पेशवा हैं, इसकी उन्हें पहचान हुई। सांगली के एक सुपरिचित वकील, जान हथेली पर लेकर लड़ने वाले तात्या साहब टोपे हैं, उनकी स्मृति जाग्रत् होकर उन्हें यह समझाने लगी। 16 नवंबर, 1985 के दैनिक 'तरुण भारत' नामक मराठी अखबार में इससे संबंधित विस्तृत जानकारी प्रकाशित हुई, और सहस्त्रबुद्धे की चर्चा होने लगी। सातारा में ज्योतिष मंडल की ओर से उनके भाषण का भी आयोजन किया गया। उस समय गोरे रंग के, उभरी हुई नाक वाले गोडबोले नाम के एक गृहस्थ उपस्थित थे, जिन्हें सहस्त्रबुद्धे ने अपने पूर्वजन्म का सेवा का सरदार बताया।

'झाँसी की रानी का पुनर्जन्म हुआ, सहस्त्रबुद्धे बाई के अनुभव कथन' का सार्वजनिक कार्यक्रम 21 अगस्त, 1986 को सतारा नगरवाचनालय द्वारा आयोजित किया गया। भाषण को प्रसिद्धि मिली और लोगों की उत्सुकता बढ़ गई। चर्चाएँ शुरू हुईं।

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की साप्ताहिक बैठक में इस विषय पर चर्चा हुई। भाषण के समय बाँटने हेतु एक पर्चा तैयार किया गया। हमने तय किया कि पर्चे श्रोताओं को पहले ही दे दिए जाएँ, भाषण शाँति से सुना जाए, आवश्यकता के अनुसार प्रश्नोत्तर में हिस्सा लिया जाए।

कार्यक्रम शाम के साढ़े छह बजे था। साढ़े छह के समारोह के लिए श्रोतागण रेंगते हुए सात बजे तक इकट्ठे होंगे, ऐसा अनुमान था। लेकिन यह कार्यक्रम इसका अपवाद रहा। छह बजे ही भारी भीड़ से हॉल खचाखच भर गया। महिलाओं की भारी भीड़ थी। सभी की निगाहें झाँसी की रानी के आगमन पर टिकी हुई थीं।

उसी माहौल में हमारे कार्यकर्त्ताओं ने श्रोताओं के हाथ में पर्चे थमा दिए। संयोजकों को भी दे दिए गए। पर्चे का शीर्षक था :

'झाँसी की रानी का पुनर्जन्म-स्वयं का बुद्धिभ्रंश, दूसरों का बुद्धिभेद'

पर्चे में लिखा था-'मैं झाँसी की रानी हूँ। मेरी उस समय की पूर्वस्मृति जाग्रत् हुई है'-ऐसा दावा सांगली की सरयू सहस्त्रबुद्धे कर रही है। लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना, अंधविश्वास को बढ़ावा देना तथा मानसिक बीमारियों का उदात्तीकरण करने का यह गंभीर मामला है। इसे तुरंत बंद करने की माँग अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति करती है।

'देश के लिए जो वीरगति प्राप्त करते हैं, वे जन्म-मृत्यु के फेरे से मुक्त होते हैं, ऐसी इस देश के परम्परागत धर्मविचारों की मान्यता है। झाँसी की रानी जैसी असाधारण वीरांगना को इस आधार पर मोक्ष मिलने की बात बिलकुल स्पष्ट है। ऐसे समय उसे फिर एक बार जन्म-मृत्यु के फेरे में लटकाना लोगों की धार्मिक भावनाओं के साथ खेलने की घातक कोशिश है।'

इसके आगे जाकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस प्रश्न की ओर देखने से क्या नजर आता है? एकाध देवता, बाबा, पीर, मृत व्यक्ति, विशिष्ट दिन तथा कुछ समय के लिए 'भूत लगना', 'हिस्टीरिया' जैसी मनोविकृति का ही एक हिस्सा है। मैं ही पिछले जन्म का फलाँ मृत व्यक्ति हूँ, ऐसा

मानना उसके एक कदम आगे की मनोविकृति है। उसे चिकित्सा की भाषा में 'परानॉइड स्किवजोफ्रेनिया' कहते हैं। ऐसी मनोविकृतियों का सार्वजनिक प्रदर्शन आपत्तिजनक है।

नराधम खूनी रामन राघवन को लगता था कि उसे ईश्वर ने सृष्टि के उद्धार के लिए पृथ्वी पर भेजा है। ऊपरी तौर पर उसका बर्ताव पागलों जैसा न लगकर सुसंगत लगता था, लेकिन इसी मनोविकृति से उसने कई घृणित हत्याएँ की थीं। केवल मनोविकृति से उसने खून किए। इसी कारण इतने खून करने पर भी वह फाँसी न पाकर उम्रकैद ही भुगत रहा है। बातें किस हद तक जा सकती हैं, इसका यह सशक्त उदाहरण था।

पुनर्जन्म को विज्ञान ने साबित नहीं किया है। विश्व के किसी भी ज्ञानकोश के संदर्भ को देखकर इस बात को सहज समझा जा सकता है। मनुष्य की प्रतिभा, स्मृति, भावना, संवेदना-ये सारी बातें उसके दिमाग की नसों में रहती हैं। मृत्यु के पश्चात् दिमाग नष्ट हो जाता है। उसी समय ये सारी बातें खत्म हो जाती हैं। पीछे कुछ भी नहीं रहता। यह निर्विवाद सत्य है। इसी कारण आत्मा और उसके आधार पर बताई गई पुनर्जन्म की बातें वैज्ञानिक दृष्टि से असंभव हैं।

ऐसे में खुद को किसी विशेष व्यक्ति का पुन: अवतार या पुनर्जन्म बताने जैसा ऐलान या तो मानसिक विकृति है या ढोंग। किसी भी प्रकार से यह लोगों को गुमराह करना है। इसी कारण ऐसी बातें बंद करने के लिए जनजागृति फैलाना और इस दृष्टि से आवश्यकता के अनुसार समाचार-पत्र, सरकार पुलिस, न्याय व्यवस्था से सहयोग लेना अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति का कार्य है।'

इस प्रकार के पर्चे बाँटने के बाद वातावरण और भी जिज्ञासापूर्ण हो उठा। साढ़े छह बजे सुश्री सहस्त्रबुद्धे आईं। मंच पर चढ़ते समय उसके हाथ में भी पर्चा थमा दिया गया।

सहस्त्रबुद्धे भाषण करने के लिए खड़ी नहीं हुई। वस्तुत: अत्यंत बुजुर्ग वक्तागणों को छोड़कर अन्य सारे खड़े होकर ही बोलते हैं। उसमें भी वीरांगना झाँसी की रानी ने जिस देह में पुनर्जन्म लिया है, तो उससे स्वाभाविक रूप से खड़े होकर ही प्रखर, ओजस्वी भाषण की अपेक्षा थी। लेकिन श्रोताओं की अपेक्षा पर पानी फिर गया। सहस्त्रबुद्धे कुर्सी पर बैठकर बोलने लगी। सारा भाषण रटे-रटाए, ऊँघते सुर में चल रहा था, जैसे पाठशाला की कोई छात्रा बहुत बड़ा भाषण कंठस्थ कर किसी प्रतियोगिता में हिस्सा ले रही हो।

पीछे-पीछे घूमनेवाली औरत ने घर में किस रूप में दर्शन किया, झाँसी की रानी का पुनर्जन्म होने की जानकारी कैसे मिली, मुझे उस समय का इतिहास पढ़ने पर मेरी स्मृतियाँ कैसे जाग्रत् हुईं, जमीन से मूर्ति बाहर निकालते समय कैसे भूत सवार हुआ, छह-छह लोगों को भी मुझे सँभालना कैसे संभव न हुआ- ऐसी जानकारी देने के बाद उसने प्रत्यक्ष अनभूति के बारे में बताना शुरू किया :

'मैं तीन साल की थी, जब माँ भागीरथी की मृत्यु हुई। उस समय रो-रोकर उधम मचाने की अपनी बात याद है। बचपन में ब्रह्मावर्त में रावबाजी के पुत्र नाना और रावसाहब के साथ खेल कूद करती थी। पेशवा को शाप था कि उन्हें विवाहिता पत्नी से पुत्र की प्राप्ति नहीं होगी। इसलिए मेरी शादी गंगाधर पंत के साथ कराई गई। गंगाधर पंत पुरुष नहीं थे, महज गलत है। वे नाटक में काम करते थे। स्त्री की भूमिका करते थे इसलिए स्त्रियों के कपड़े पहनते थे। ... हमारे तांबे घराने की वंशतालिका इस प्रकार से रही....' ऐसा कहकर उसने सारी बातें तोता रटंत की तरह पढ़कर सुनाईं, ''दामोदर मेरा बेटा है। अभी उसने कर्नाटक में पुनर्जन्म लिया है। बीसवीं सदी के अंत में विश्वयुद्ध होगा और इससे हिंदुओं का साम्राज्य सारे विश्वभर में फैल जाएगा, ऐसा नास्ट्राडमस ने लिखकर रखा है। वह बहुत बड़ा भविष्यकर्त्ता था। उसकी अब तक की लगभग सारी भविष्यवाणी सच साबित हुई हैं। इस धर्मयुद्ध का नेतृत्व दक्षिण का कोई युवक करेगा, ऐसी भी भविष्यवाणी उसने की थी। मेरी दृष्टि से वह महापुरुष दामोदर ही होगा।...'

फिर कुछ समय बाद उस औरत को उस काल के अपने भाषण तथा गीत याद आने लगे। उसने मराठी में भाषण देना छोड़कर हिंदी को अपनाया।

श्रोताओं के उम्मीद टूटने की बात स्पष्ट नजर आ रही थी। उत्सुकता से आए श्रोताओं में से कुछ तो भाषण पूरा होने से पहले ही उठ खड़े हुए। इसके बावजूद अंत तक सुनने वालों की संख्या भी बड़ी थी और सहस्त्रबुद्धे का भाषण समाप्त होते ही अध्यक्ष ने प्रश्नोत्तर की अनुमति दी। प्रश्नों की झड़ी लग गई।

'आपको घोड़ा लाकर देंगे, उस पर आप सवार होंगी?'

उत्तर : 'नहीं!'

'तलवार लाकर देंगे, चलाना संभव है?'

उत्तर : 'नहीं!'

'युद्धभूमि में लड़ते समय आपको वीरगति प्राप्त हुई, मोक्ष की प्राप्ति हुई, फिर पुनर्जन्म क्यों लिया?'

'धार्मिक कार्य के लिए।'

'तो फिर धार्मिक कार्य करें, भाषण क्यों देती हैं।'

'झाँसी की रानी का मूल वंशज सतारा के नजदीक धावडशी के तांबे घराने का है। आपने वहाँ जाकर वंशतालिका प्राप्त की, क्या यह सच नहीं है?'

'सच है, मैं धावडशी गई थी।'

'आपके भाषण में लाइब्रेरी के संदर्भ कैसे आते हैं?'

'आप अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग कैसे करती हैं?'

उत्तर : 'मालूम नहीं।'

'आपने झाँसी की रानी के जन्म में दिया गया अपना हिंदी भाषण अभी सुनाया, यह हिंदी तो आज कल की है। डेढ़ सौ वर्ष पहले मध्यप्रदेश में प्रयुक्त होने वाली हिंदी का प्रयोग आप उस समय करती होंगी- फिर ये आधुनिक हिंदी कहाँ से आई?'

उत्तर : 'नहीं मालूम!'

'कुछ साल पहले सतारा के सुप्रसिद्ध चिकित्सक पेंढारकर जी से मानसिक बीमारी के लिए आपने दवा ली थी, क्या यह सच है?'

'हाँ, यह सच है।'

'1982 में पूर्वजन्म की स्मृतियाँ जाग्रत् होने पर मिरज के सुप्रसिद्ध मानसोपचार विशेषज्ञ देवसिकदार से आप मिली थीं, क्या यह सच है?'

'हाँ।'

प्रश्नों की इन झड़ियों की सरयू सहस्त्रबुद्धे ने अपेक्षा नहीं की थी। पिछले चार सालों में उसे कहीं भी इस प्रकार का अनुभव नहीं हुआ था।

स्वागत भाषण का अभिनंदन, पुनर्जन्म का सबूत मिलने का आनंद-ऐसा कुछ होने के बदले यहाँ सब कुछ विपरीत ही हो रहा था। लोग उस पर शक कर रहे थे। उसे कठघरे में खड़े कर प्रश्न पूछ रहे थे। उसमें उपहास की धार नज़र आ रही थी। सभा की हालत देखकर अध्यक्ष जी ने अपना भाषण न कर सभा विसर्जित कर दी।

यदि पुनर्जन्म नहीं होता है, तो फिर यह क्या है? मनगढ़ंत बातें? मन का भ्रम? मानसिक विकृति? मन ऐसा बर्ताव कैसे करता है? ऐसी अनेक बातें सतारा के लोगों को समझाने के लिए मानसोपचार विशेषज्ञ डॉ. प्रसन्न दाभोलकर के व्याख्यान का आयोजन अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति द्वारा किया गया। उसमें भारी भीड़ उमड़ी थी।

इन दोनों कार्यक्रमों के वृत्तांत समाचार-पत्रों में छपे। इससे गुस्साई सहस्त्रबुद्धे ने 26 दिसम्बर, 1986 को दैनिक 'सकाल, कोल्हापुर' के नाम एक पत्र लिखा।

पत्र का शीर्षक था-रानी का जन्म याद आना तो अनुसंधान का विषय है।

'मेरा 21 अगस्त के दिन सतारा में 'झाँसी की रानी का पुनर्जन्म' विषय पर भाषण हुआ, जिसका वृत्तांत 27 अगस्त के दैनिक 'सकाल' में छपा है। (वह अपने आप को झाँसी की रानी समझती है, लेकिन...) इस चीज के बारे में मेरी भूमिका इस प्रकार रही है-

मैंने स्वयं झाँसी की रानी होने की बात नहीं की है। लेकिन मुझे सब कुछ याद आता है। मेरे कहने का जो मतलब है, उस पर आप विचार करें, अनुसंधान करें तथा आप ही इसका फ़ैसला करें। प्रश्नोत्तर के समय अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के श्रोताओं ने उधम मचाया, ऐसी मेरी धारणा है।

इस समय जो प्रश्नोत्तर हुए, उनमें से कुछ ही प्रश्नोत्तर समाचार-पत्र में प्रकाशित हुए हैं। असल में वे सारे प्रकाशित होने चाहिए थे। यदि पुनर्जन्म झूठ है तो जो कुछ भी याद आता है, उसे केवल मानसिक विकृति ठहराकर अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के कार्यकर्त्ताओं द्वारा किया गया प्रतिपादन क्या उनकी ही मानसिक विकृति नहीं दर्शाता? एकाध बात को मानसिक विकृति ठहराकर उसके बारे में विचार न करना क्या समाज को दिग्भ्रमित करना नहीं है? यदि ऐसा नहीं था तो प्रत्यक्षत: अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के नरेंद्र दाभोलकर वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने स्वयं एक भी प्रश्न नहीं पूछा। अपने कार्यकर्त्ताओं द्वारा खड़े किए गए बवाल को 'श्रोताओं का बवाल' समझना कहाँ तक उचित है? इन सभी बातों पर पूर्णत: विचार होना चाहिए।

पूछे गए प्रश्नों के जवाब मैंने बड़ी तत्परता से दिए हैं। मानसिक विकृति से पीड़ित मनुष्य से यह कैसे संभव होगा? उन्होंने हंगामा किया, इसलिए कार्यक्रम को रोकना पड़ा। इनके कारण दूसरों को पीड़ा होती है, इसका भी अहसास इन पढ़े-लिखे श्रोताओं को नहीं रहा। श्रोता-रूपी छात्र हंगामा कर रहे थे। सभा समाप्ति के बाद भी श्रोताओं में बैठकर हंगामा करने वाले बच्चों ने प्रश्न पूछे, 'यह कैसे

संभव हुआ?'

युद्धभूमि में वीरगति प्राप्त करने वाले को मोक्ष मिलने की बात अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति ने अपने पर्चे में लिखी है। लेकिन क्या 'मोक्ष' संकल्पना विज्ञान की विषय-वस्तु है?

यदि अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति को यह संकल्पना स्वीकृत है तो पुनर्जन्म को नकारना केवल चतुराई है। बुवाबाजी तथा पाखंड किसे कहा जाता है? यदि मैं समाज को फँसाकर समाज से कुछ आर्थिक लाभ उठाती हूँ, तो उसे वे बुवाबाजी कह सकते हैं।

सतारा के लोगों ने इसका परिचय दिया है कि वे अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के नाम पर कितने नीचे गिर सकते हैं। समिति के अध्यक्ष के पास यदि अध्ययन तथा शोधक वृत्ति होती है तो मनोविज्ञान की समझ से वे स्वयं प्रश्न पूछते। उनके समर्थकों से मानसिक विकृति के प्रदर्शन की अपेक्षा नहीं थी।

सौ. सरयू सहस्रबुद्धे, सांगली।'

इस पत्र का मैंने इस प्रकार से उत्तर दिया :

'मा. सम्पादक,

दै.सकाल, कोल्हापुर

आपके 26 दिसम्बर, 1986 के अंक में प्रकाशित सांगली की सुश्री सरयू सहस्रबुद्धे का 'झाँसी की रानी का जन्म याद आना अनुसंधान का विषय है' शीर्षक से प्रकाशित निवेदन एक कार्यकर्त्ता द्वारा भेजने पर पढ़ने को मिला। सतारा में 'सकाल' का कोल्हापुर संस्करण नहीं मिलता। इस पत्र में उन्होंने अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के नरेंद्र दाभोलकर ने स्वयं एक भी प्रश्न न पूछकर (सतारा की सभा में) अपने सहयोगियों द्वारा हंगामा मचाने, सतारा के लोगों के द्वारा उन्हें नीचा गिराने, मानसिक विकृति का प्रदर्शन करने जैसे आरोप मुझ पर, अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति पर तथा सतारा के लोगों पर लगाए हैं, जो पूर्णत: असत्य तथा उनकी डरी हुई मानसिकता के द्योतक हैं। इसी कारण इस मामले की हकीकत प्रस्तुत कर रहा हूँ।

सौ. सहस्रबुद्धे ने सतारा के भाषण में करीब घंटे-भर यह बताया कि वह झाँसी की रानी थीं, तब की जो-जो बातें याद आईं, उनका वर्णन किया। इसमें उन्होंने बताया कि वह (झाँसी की रानी) तीन साल की थीं तब माँ की मृत्यु हो गई। उनके पति गंगाधर पंत पुरुष थे या नहीं जैसे नाजुक विषय तक बोलीं, रानी की वंशधरों से ब्रिटिशों के साथ हुए युद्ध की सारी जानकारी दी। यह सब उन्होंने उस काल की स्वानुभूति तथा उस जन्म की स्मृतियों के आधार पर बयान की। झाँसी की रानी के जीवनपट के संदर्भ में स्कूल की छात्रा द्वारा रटे-रटाए, उबाऊ ढंग से एक सुर का उनका भाषण रहा।

भारी भीड़ और जिज्ञासा के रहते हुए बड़ी मात्रा में उम्मीद पूरी न करने वाला वह भाषण सतारा के लोगों ने बड़ी शांति से सुना। यह श्रोताओं की प्रौढ़ता को दर्शाता है। इसके बाद अध्यक्ष ने प्रश्न पूछने की अनुमति दी। उस समय सबसे ज्यादा और सहस्रबुद्धे को परेशान करने वाले प्रश्न सतारा के 'दैनिक ग्रामोद्धार' के सम्पादक बापूसाहब जाधव और 'दैनिक महाराष्ट्र मित्र' के सम्पादक तथा व्याख्यान का आयोजदन करने वाले नगर वाचनालय के पूर्व सचिव संजय कोल्हटकर द्वारा पूछे गए। वे दोनों भी अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के सदस्य नहीं हैं।

अन्य कई स्त्री-पुरुषों ने भी प्रश्न पूछे। इसके सहस्रबुद्धे द्वारा दिए गए उत्तर असमाधानकारक तथा हास्यास्पद थे। बड़ी उत्सुकता से भाषण सुनने आए और प्रश्नोत्तर के लिए रुके श्रोताओं को पूर्णत: निराशा हुई। फँसाए जाने की भावना भी उनमें पैदा हुई। इससे कुछ हो-हल्ले के साथ क्षोभ भी पैदा हुआ। देर होने के कारण श्रोता घर जाने के लिए आमादा थे।

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति प्रबोधन पर विश्वास करती है। इसलिए हमने सभा से पहले 'झाँसी की रानी का पुनर्जन्म : अपना बुद्धिभ्रंश तथा दूसरों का मतिभ्रम' शीर्षक से पर्चे बाँटे। सहस्रबुद्धे को भी वह पर्चा मिला था। इसमें से कुछ मुद्दों पर वह व्याख्यान में न तो संतोषजनक बोल पाई और न ही प्रश्नों के उत्तर दे पाई। इस पर्चे के महत्त्वपूर्ण मुद्दे इस प्रकार थे।

1. देश के लिए लड़ते समय जो वीरगति प्राप्त करते हैं, उन्हें जन्म-मृत्यु के फेरे से मुक्ति की प्राप्ति मिलती है, ऐसी इस देश के परम्परागत धार्मिक विचारों की मान्यता है। अंधश्रद्धा निर्मूलन समित जन्म-मृत्यु के फेरे तथा मोक्ष पर विश्वास नहीं करती। लेकिन इस देश के अधिकतर लोग इस विचार को स्वीकार करते हैं। इसी कारण झाँसी की रानी जैसी अलौकिक वीरांगना को मोक्ष की प्राप्ति हुई होगी, ऐसी उनकी मान्यता है। ऐसे समय उसे जन्म मृत्यु के फेरे में

अटकाना लोगों को धार्मिक भावना के साथ खेला गया घातक खेल नहीं है तो क्या है?

2. मनुष्य की बुद्धि, स्मृति, भावना तथा संवेदना जैसी बातें उसके दिमाग में ही रहती हैं। मृत्यु के बाद दिमाग के साथ ये सारी बातें खत्म हो जाती हैं। यह अविवादित वैज्ञानिक सत्य है। इसी कारण आत्मा और उसके आधार पर होने वाले पुनर्जन्म की बात वैज्ञानिक दृष्टि से असंभव है।

3. वैज्ञानिक दृष्टि से सहस्रबुद्धे की पिछली जन्म की स्मृति मानसिक बीमारी है। सुश्री सहस्रबुद्धे सतारा के एक डॉक्टर के पास कई दिनों से इलाज करा रही थी। उन्होंने उन्हें अच्छे मानसोपचार विशेषज्ञ को दिखाने की सलाह भी दी थी। उनके भाषण की शुरूआत में ही डॉ. देवसिकदार (मिरज के प्रख्यात मानसोपचार विशेषज्ञ) द्वारा उपचार करने का भी जिक्र आया था। अपने भाषण में उन्होंने बताया कि घर में एक आकृति के अपने पीछे घूमने का उन्हें आभास होता था। एक दिन उस आकृति ने देह-रूप में दर्शन देकर बताया कि तुम झाँसी की रानी का पुनर्जन्म हो। तुम्हारे हाथों उनके अधूरे रहे सारे धार्मिक कार्य पूरे होने वाले हैं। ये सारे आभास मानसिक बीमारी के लक्षण हैं।

हर मानसिक बीमारी से निजात मिलती ही है, ऐसी कोई बात नहीं है। लेकिन अपने-आपको किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का पुनः अवतार या पुनर्जन्म होने का दावा करना एक तो मानसिक बीमारी है ही, साथ ही पाखंड भी। और इसमें से कुछ भी बीमारी होने पर ऐसा करना लोगों को दिग्भ्रमित करना ही है। सुश्री सहस्रबुद्धे ने कहा है कि वे इसके माध्यम से कुछ आर्थिक लाभ नहीं उठातीं लेकिन असली खतरा आर्थिक धोखा न होकर लोगों की विचारशक्ति को गलत रास्ते पर ले जाना ही है। इसलिए अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति इसका विरोध करती है। सुश्री सहस्रबुद्धे के भाषण के चार दिन बाद ही 'पुनर्जन्म' तथा 'भूत लगना' जैसे विषय पर सतारा में हुए व्याख्यान की बड़ी संख्या में लोगों ने तारीफ की। यह, तारीफ लोगों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण समझकर लेने में रुचि का निदर्शक है

'नरेंद्र दाभोलकर।'

इसके बाद झाँसी के रानी की तलवारबाज़ी कहीं सुनने में नहीं आई। **(स्रोतः पुस्तक ''अंधविश्वास उन्मूलनः आचारः दूसरा भाग'' डॉ. नरेंद्र दाभोलकर, संपादकः डॉ. सुनील कुमार लवटे, अनुवादक प्रकाश कांबले)**

पृष्ठ 4 का शेष साल तक चली। यह यात्रा बहुत तकलीफों और परेशानियों से भरी हुई थीं। डारविन इस दौरान काफ़ी अस्वस्थ रहे पर इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपने 'विकासवाद' के सिद्धांत के लिए उन्होंने इस यात्रा के दौरान भरपूर तथ्य इकट्ठे किए। यात्रा के दौरान उन्होंने अमेरिका में मौजूद गुलामी की प्रथा भी देखी। उन्हें उन लोगों के प्रति बेहद नफ़रत पैदा हुई जो दूसरों को केवल अपने फायदे के लिए गुलाम बनाते थे। उन्होंने बेहद कड़े शब्दों में इसकी निंदा की। 'बीगल' की यात्रा की समाप्ति और वापस लौटने के बाद डारविन ने सबसे पहले 'बीगल की यात्रा' नामक पुस्तक लिखी। बाद में उन्होंने यात्रा के दौरान 'विकासवाद' के लिए जुटाये गए तथ्यों को आधार बनाकर 'प्रजातियों की उत्पत्ति' (Origin of Species) नामक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। यह पुस्तक 1858 में प्रकाशित हुई। पुस्तक के प्रकाशित होते ही धर्म की दुनिया में हलचल मच गई। धर्म अभी तक यह बताता आ रहा था कि ईश्वर ने अपने चमत्कार से मनुष्य को पैदा किया है। डारविन के 'विकासवाद' के सिद्धांत ने धर्म की इस धारणा पर सवाल खड़ा करते हुए बताया कि मनुष्य की उत्पत्ति बंदर जैसे प्राणी से हुई है। इस धारणा का खूब मज़ाक बनाया गया। उस समय 1860 में अंग्रेज़ बिशप विलवरफोर्स ने डारविन के सिद्धांत पर यह घोषणा की कि ''यह शिक्षा धार्मिक रचनाओं के खिलाफ हैं और ईश्वर को नकारती है।'' हालांकि उस समय थॉमस हक्सले नामक जीव विज्ञानी ने डारविन के सिद्धांत का ज़ोरदार समर्थन किया और बिशप के ख़िलाफ़ खड़े हुए।

विज्ञान की यही विशेषता है कि वह हर उस चीज को चुनौती देता है जो तर्क पर आधारित नहीं है। इसलिए धर्म और ईश्वरीय विधान का सबसे बड़े शत्रु विज्ञान की तार्किकता है। **(स्रोतः बाल मैगजीन ''कोंपल'', जनवरी-जून 2016)**

साथी, अब मत सहो

साथी, अब मत सहो
न यों चुप रहो
कहो, कुछ कहो
बहुत हो चुकी पेट की हार
बहुत हो चुकी सेठ की मार।

- राम कुमार कृषक

डार्विन से डर क्यों...

तजिंदर सिंह अलौदीपुर

इन दिनों दो चीजों पर बहुत चर्चा हो रही है, एक इतिहास बदलने और दूसरा पाठ्यक्रम बदलने की। शासकवर्ग द्वारा दावा किया जा रहा है कि हमारा इतिहास सही ढंग से नहीं लिखा गया है, इसे दोबारा लिखे जाने की जरूरत है। पाठ्यक्रम में लगातार बदलाव किया जा रहा है। जनमत तैयार करने हेतु सोशल मीडिया पर खूब प्रचार-प्रसार किया गया है। इतिहास की किताबों से इस्लाम व मुगल काल और विज्ञान की किताबों से डार्विन के सिद्धांत से जुड़े पाठ छांटे गए हैं...। इतिहास और विज्ञान दोनों अलग-अलग विषय हैं और अंतर संबंधित भी... विज्ञान का इतिहास भी है और इतिहास लिखने का विज्ञान भी। बड़ा सवाल यह है कि क्या इतिहास बदला जा सकता है? इतिहास को अधिक से अधिक पुस्तकों से हटाया तो जा सकता है? पर ऐतिहासिक घटनाओं को मिटाया नहीं जा सकता। हां, अंधाधुंध झूठे प्रचार द्वारा इतिहास में धुंधलका जरूर पैदा किया जा सकता है। इतिहास लिखने के लिए इतिहासकार पुरातन ग्रंथ खंगालते हैं, जंगल बीहड़ों में घूमते हैं, मिट्टी छानते हैं, टूटी-फूटी इमारतों, बर्तनों व औजारों में से ऐतिहासिक साक्ष्य ढूंढते हैं। उसी तरह वैज्ञानिक गहन शोध के बाद सिद्धांत बनाते हैं। अगली पीढ़ी उन सिद्धांतों को और परिष्कृत करती है, और अवधारणाएँ क्रमिक रूप से आगे बढ़ती हैं। मौजूदा शासकवर्ग इस क्रम की कुछ कड़ियां गायब करना चाहता है। चार्ल्स डार्विन के क्रमिक विकास के सिद्धांत को हाल के पाठ्यक्रमों से हटा दिया गया है और भी कई वैज्ञानिक खोजें हटाई गई हैं, लेकिन सरकार डार्विन से क्यों डरती है ? वजह साफ है... डार्विन का सिद्धांत सत्ता के उद्देश्य में अड़चन पैदा करता है। आधुनिक विज्ञान तो कॉरपोरेट घरानों का सेवादार बनकर उनके लिए मुनाफा कमाने का औजार मात्र बन कर रह गया है, लेकिन डार्विन का सिद्धांत उनके किसी काम आने की बजाय, पूंजीपतियों की कठपुतली सरकारों के लिए सिरदर्द बनकर निकला है। श्रमिकों की मेहनत की कमाई से पलती सत्ता वैज्ञानिक समझ वाले लोगों से डरती है। शासक वर्ग के लिए लोगों को नियंत्रण में रखने के लिए एक अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति बहुत काम आती है।

डार्विन के सिद्धांत पर हमला कोई नई बात नहीं है। डार्विन को अपने जीवनकाल में भी काफी विरोध का सामना करना पड़ा था क्योंकि इस सिद्धांत ने विचारवादी विचारकों की चूलें हिला दी थीं। और सदियों पुरानी मान्यताएं रूई की तरह उड़कर बिखर गई थीं। डार्विन के सिद्धांत पर लंबी बहसें हुईं, जिनमें से सबसे मशहूर 1860 में ऑक्सफोर्ड में हक्सले और मशहूर ईसाई विद्वान विल्बरफोर्स के बीच हुई बहस है। इसे सुनने के बाद ब्रूस्टर नामक एक महिला भावुक होकर बेहोश हो गई, उसके लिए धर्म के विरुद्ध जा रहे तथ्य सुनने मुश्किल हो रहे थे। सैंकड़ों वर्ष बाद, आज भी लोग इस मुद्दे को लेकर उतने ही भावुक हैं। धर्म और विज्ञान के बीच प्रतिद्वंद्विता की कहानी बहुत पुरानी है। वैज्ञानिक खोजों के बाद ब्रूनो को जिंदा जला दिया गया और गैलीलियो को भी यातनाएं सहनी पड़ीं क्योंकि उनकी खोजें धर्म और धर्म आधारित सत्ता के अनुकूल नहीं थीं। सत्ता का चरित्र पूरी दुनिया में एक जैसा होता है। दुनिया का हर शासक डार्विन से डरता है। विश्व के सर्वाधिक विकसित देशों में से एक तथा वैज्ञानिक प्रगति का सुख भोगने वाले अमरीका में भी डार्विन पर आक्रमण हुआ। 2005 में, राष्ट्रपति बुश ने डार्विन के क्रमिक विकास के सिद्धांत के साथ-साथ 'सृजन सिद्धांत' को पढ़ाने का प्रस्ताव रखा क्योंकि उस समय पेंसिल्वेनिया में एक बोर्ड ने हाल ही में सृजन सिद्धांत के शिक्षण को अनिवार्य कर दिया था। 2005 में, कैलिफोर्निया वर्ल्ड स्कूल को धार्मिक रूप से प्रेरित अभिभावक संगठनों से कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ा क्योंकि बोर्ड ने बाइबल के सृजनवाद के सिद्धांत को बढ़ावा देने वाली पाठ्यपुस्तकों को खारिज कर दिया था। 2004 में ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी ने डार्विन के सिद्धांत पर संदेह पैदा करने के लिए पाठ्यक्रम को फिर से बदल दिया। तुलसा मनोरंजन पार्क और चिड़ियाघर के बाहर सृजनवाद का समर्थन करने वाला एक पोस्टर लगाया गया। 2002 तक अमरीका की कॉब काउंटी में जीव विज्ञान की पुस्तकों के आरंभ में एक घोषणापत्र लिखा रहता था कि इस पुस्तक में क्रमिक विकास से संबंधित सामग्री है, और यह केवल एक सिद्धांत है, तथ्य नहीं! इसलिए, इसे आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ें। अन्य देशों में भी पाठ्यक्रमों में घुसपैठ करने के प्रत्यक्ष

और अप्रत्यक्ष प्रयास किए गए। वर्ष 2002 में इंग्लैंड के प्रधान मंत्री टोनी ब्लेयर ने संसद में ब्यान दिया कि उन्हें खुशी है कि डार्विन के क्रमिक विकास के सिद्धांत के साथ-साथ सृजन सिद्धांत को भी सरकार द्वारा संचालित स्कूलों में पढ़ाया जा रहा है। उच्च सदन में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, कनिष्ठ शिक्षा मन्त्री जेफ्री फिल्लिक ने 2005 में पाठ्यक्रम के सृजनवाद को हटाने से साफ इंकार कर दिया। 2004 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो राज्य ने सृजनवाद की शिक्षा की अनुमति दी। सर्विया नामक देश ने सबसे पहले 2005 में डार्विन के सिद्धांत पर प्रतिबंध लगाया, फिर इसे वापस ले लिया। काफी इस्लामिक देशों में भी अनमने ढंग से इसे पढ़ाया जा रहा है।

भारत में, एक ओर तो वर्तमान शासकवर्ग दुनिया के बाकी धार्मिक कट्टरपंथियों की तरह ही डार्विन के सिद्धांत को पाठ्यक्रम से बाहर का रास्ता दिखा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर, वे प्राचीन भारत की वैज्ञानिक विरासत के उत्तराधिकारी होने का दावा भी कर रहे हैं। वे किसी वैज्ञानिक नुक्ते पर नहीं, बल्कि सनातन धर्म बनाम ईसाई धर्म का फर्जी आधार बनाकर पश्चिमी वैज्ञानिकों का विरोध कर रहे हैं। उनके अनुसार, पाठ्यक्रम में भारतीय, विशेषकर हिंदू वैज्ञानिकों का कभी उल्लेख नहीं किया गया और ईसाई वैज्ञानिकों को हमेशा खोजकर्त्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया। असल में, हकीकत कुछ और है, जिन वैज्ञानिकों को ईसाई या विदेशी कहकर खारिज किया जा रहा है, वे खुद ईसाई धार्मिक कट्टरता के शिकार थे। जैसा कि पहले ही जिक्र किया गया है, उत्पीड़न का शिकार होने के बावजूद उन्होंने धर्म को बचाने की बजाए तथ्यों और तर्क को जीवित रखा। ठीक ऐसी ही घटनाएं प्राचीन भारत में भी घटित हुईं। उस समय भी धर्म और सत्ता के गठजोड़ ने वैज्ञानिक प्रगति में असंख्य बाधाएँ उत्पन्न कीं। **डॉ. सेवा सिंह** अपनी पुस्तक **'ब्राह्मणवाद : एक जनविमर्श'** में लिखते हैं कि **विदेशी यात्री अलबरूनी** ने अपने यात्रा वृत्तांत में लिखा है कि भारतीय खगोलशास्त्री **वराहमिहिर** और **ब्रह्मगुप्त**, दोनों सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के वास्तविक कारणों को जानते थे और तिथियों की संख्या की गणना के बाद उपरोक्त परिणाम पर पहुँचे थे। वे यह भी अच्छी तरह से जानते थे कि उनके निष्कर्ष ग्रहणों की ब्राह्मणवादी व्याख्या के साथ विरोधाभासी हैं जिसमें राहु-केतु, सूर्य और चंद्रमा का मार्ग अवरुद्ध करते हैं। अलबरूनी को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक ओर तो ये वैज्ञानिक उपरोक्त खगोलीय घटनाओं के प्राकृतिक कारणों को भली-भांति जानते हैं और दूसरी ओर, पुरोहित की व्याख्या से सहमत होकर कर्म काण्ड द्वारा राहु-केतु को शांत करने को भी मान्यता दे रहे हैं।

वे आगे कहते हैं कि तब तक आर्यभट्ट का कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं था। कट्टर वेदांती भाष्यकार अप्य दीक्षित लिखते हैं कि आर्यभट्ट का पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर घूमने का सिद्धांत वेदसम्मत (जो पृथ्वी को स्थिर मानता है) नहीं है। इस कारण घृणित है और अवमानना के योग्य है।

आर्यभट्ट का विरोध उनको जीवनकाल में ही शुरू हो गया था, बहुत संभव है कि उनकी पुस्तकें जला दी गयी हों। ब्रह्मगुप्त लिखते हैं कि आर्यभट्ट का पाप यह है कि पृथ्वी के घूमने का उनका सिद्धांत स्मृति परंपराओं की अवहेलना करता है। आर्यभट्ट के सिद्धांत के बाद के प्रतिपादकों ने भी डर के मारे उनके सिद्धांत की व्याख्या वेदों के अनुसार ही की। यह डर किसी और का नहीं, बल्कि धर्म और उसका समर्थन करने वाली सत्ता का था। आर्यभट्ट द्वारा कही गई बातें उनके जन्म से लगभग 2 सदी पूर्व लिखे गए स्मृति ग्रंथों और पुराणों में लिखी बातों को गलत साबित कर रही थीं। ये सिद्धांत पुरोहित वर्ग के आर्थिक और राजनीतिक हितों को चोट पहुँचाते थे। यदि पृथ्वी के घूर्णन सिद्धांत को स्वीकार कर लिया जाता तो राहु-केतु को कौन पूछता और दान-दक्षिणा देकर उन्हें प्रसन्न करने के लिए पुजारी के पास कौन जाता ? और जब पुरोहित का महत्त्व घट जाता तो फिर राजा के दैवीय सिद्धांत को कौन स्वीकार करता ?

अल्बरूनी को स्पष्ट रूप से महसूस हो रहा था कि उस समय के वैज्ञानिकों को सत्ता का डर सता रहा था और वे अपने सिद्धांतों को ब्राह्मणवादी मिथकों की चाशनी में लपेट रहे थे। इस तरह, वे एक ओर तो सत्ता के प्रकोप से बचने की कोशिश कर रहे थे और दूसरी ओर, चाहे वे अपने सिद्धांतों और शोधों का जीवन बढ़ा रहे थे; पर उनके इस धर्म और सत्ता के भय ने आने वाले समय के लिए वैज्ञानिक शोध का मार्ग लगभग अवरुद्ध कर दिया। इतिहास गवाह है कि उसके बाद लंबे समय तक भारत में कोई वैज्ञानिक शोध सामने नहीं आया।

चाहे प्राचीन भारत हो, मध्यकालीन ***शेष पृष्ठ 13 पर***

कविता

भेड़ और भेड़िए

-दीपक वोहरा

भेड़ और भेड़िए का रिश्ता
बहुत पुराना हैं आदिम काल से
भेड़ अमूमन भेड़ ही रही
भेड़िए हमेशा भेड़िए।
बहुत कोशिश के बाद भी
उनका कत्ल-ए-आम रुका नहीं है
कुछ भेड़े मिल गई हैं भेड़ियों से
इस उम्मीद में
कि शायद उनकी जान
बख्श दी जाएगी।
पर वो जानती नहीं थी
कि पिछली भेड़ों ने भी
यही गलती दोहराई थी
भेड़ें ऐसी गलती दोहराती रहती है।
और भूल जाती हैं
भेड़ियों का इतिहास
सबका नंबर आएगा
कोई नहीं बच पायेगा।
भेड़ों के झुण्ड में
कभी कभी पैदा हो जाते हैं
बाघ भी।
वो उठ खड़े होते हैं
भेड़ियों से लड़ने के लिए
लगातार अपनी समझ को तराशते हुए
जब वो पढ़ लेते हैं सिंहों का इतिहास
वो अपनी ही देश में
भेड़ों के बीच
देश द्रोही हो जाते हैं ।
भेड़ियों को यह पसंद नहीं
भेड़ें छोड़ दें डरना भेड़ियों से
और बाघ बन जाए।
बाघ डरते नहीं भेड़ियों से
जैसे डरती हैं भेड़ों की झुण्ड।
उनको डराने के वास्ते
धरपकड़ शुरू की जाती है
जंगली कुत्तों को छोड़ दिया जाता है
भौंकने के वास्ते
शिकारियों को पीछे लगाया जाता है।
जाल बिछाया जाता है
बाघ फिर भी रोते नहीं है
गिड़गिड़ाते नहीं बकरों से
वो बस मुस्कुराते हैं
जेल में ठूंस दिए जाने के बाद भी।
जो बच गए हैं
समझ रहे हैं
हम बच गए हैं
मगर बचेगा कोई नहीं
भले गच्चा दे दिया
बच गया किसी तरह।
बचेगा वही जो लड़ेगा
बाघ बनकर
रचेगा कुछ बाघ
लिखेगा सिंह सा इतिहास।

पृष्ठ 12 का शेष यूरोप हो या फिर आधुनिक काल, विज्ञान को हर युग में चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। पुरोहित ने सदैव राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया है और राजा पुरोहित को उच्चतम, आर्थिक एवं सामाजिक स्थान देता है। इसका एक ताजा उदाहरण नई भारतीय संसद के उद्घाटन के अवसर पर पाठ्यक्रम से डार्विन को हटाने वाले पुरोहितों के आगे नतमस्तक होने में देखा जा सकता है।

वास्तव में, टकराव सनातन संस्कृति और अन्य धर्मों के बीच नहीं है, जैसा कि प्रस्तुत किया जा रहा है, बल्कि वैज्ञानिक और गैरवैज्ञानिक सोच के बीच है जो हर कालखंड और क्षेत्र में मौजूद रहा है। पाठ्यक्रम से डार्विन के क्रमिक विकास का सिद्धांत निकालना उसी की एक कड़ी है। डार्विनवाद दैवीय शक्ति द्वारा सृष्टि की रचना को पुरजोर तर्कों के साथ खारिज करता है। लूट और सत्ता पर आधारित, बिना तर्क की धार्मिक गतिविधियां कभी भी तथ्यों और तर्क के दबाव को नहीं झेल सकतीं, इसीलिए धीरे-धीरे लोगों के दिमाग से वैज्ञानिक सोच प्रणाली को हटाने का प्रयास किया जा रहा है। तर्कसंगत सोच श्रम के शोषण के रहस्य को खोलती है और दु:ख, पीड़ा, बीमारी, गरीबी के भाग्यवादी समाधान को खारिज करती है। **(स्रोत: 'अभियान' नवंबर 2023)**

कोपरनिकसः धर्मग्रंथों के अंधकार से निकालकर सूरज को आसमान देने वाला खगोलशास्त्री!

अशोक पाण्डे

19 फरवरीः महान कोपरनिकस की जयंती पर

ब्लैक डैथ (ब्यूबॉनिक प्लेग) महामारी ने यूरोप की आधी आबादी का सफाया कर दिया था। 14वीं शताब्दी के इस त्रासद दौर के बाद अगले तीन सौ बरस तक यूरोप ने अपना पुनर्निर्माण किया। ग्रीक और रोमन सभ्यताओं के ज्ञान को दोबारा से खोजा गया। कला और विज्ञान के प्रति लोगों में नई दिलचस्पी जागी और पढ़े-लिखे लोगों ने इस सिद्धांत का प्रचार-प्रसार किया कि आदमी के विचारों की क्षमता असीम है और एक जीवन में वह जितना चाहे उतना ज्ञान बटोर कर सभ्यता को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। तीन सौ बरस का यह सुनहरा अंतराल रेनेसाँस यानी पुनर्जागरण कहलाया।

रेनेसाँस के मॉडल के तौर पर अक्सर पोलैंड के निकलॉस कॉपरनिकस का नाम लिया जाता है। गणितज्ञ और खगोलशास्त्री कॉपरनिकस चर्च के कानूनों के ज्ञाता, चिकित्सक, अनुवादक, चित्रकार, गवर्नर, कूटनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री भी थे। उनके पास वकालत में डॉक्टरेट की डिग्री थी और वह पोलिश, जर्मन, लैटिन, ग्रीक और इटैलियन भाषाओं के विद्वान थे। 19 फरवरी 1473 को ताँबे का व्यापार करने वाले परिवार में जन्मे कॉपरनिकस चार भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। दस के थे जब माता-पिता दोनों का देहांत हो गया। आगे की परवरिश मामा ने की।

उनके मामा ने ही उन्हें क्राकौ यूनिवर्सिटी पढने भेजा जहां उन्होंने गणित, ग्रीक और स्लामी खगोलशास्त्र का अध्ययन किया। वहां से लौटने के बाद मामा ने आगे की पढ़ाई के लिए अपने काबिल भांजे को इटली भेजने का मन बनाया। यातायात के साधन दुर्लभ थे और दो महीनों की लम्बी पैदल यात्रा के बाद कॉपरनिकस किसी तरह इटली पहुंचे जहाँ अगले छः साल तक यूरोप के सबसे प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ दो अलग-अलग विश्वविद्यालयों -बोलोना और पाडुआ -में उनकी पढ़ाई हुई। यहीं उन्होंने उन सारी चीजों पर सवाल करना शुरू किया जो उनके अध्यापक कक्षाओं में पढ़ाया करते रहे थे। ब्रह्माण्ड की संरचना के बारे में अरस्तू और टॉल्मी के सिद्धान्तों में उन्हें घनघोर विसंगतियां नजर आईं।

1503 में जब वे वापस घर लौटे उनकी उम्र तीस की हो चुकी थी। मामा प्रभावशाली आदमी थे और उनकी सिफारिश पर उन्हें स्थानीय चर्च में कैनन की नौकरी मिल गई। इस पेशे में उन्हें नक्शे बनाने के अलावा टैक्स इकट्ठा करना और चर्च के बही-खातों को देखना होता था। आराम की नौकरी थी। 1510 में मामा सिधार गए।

कॉपरनिकस ने अपना अलग घर बनाया और अपने खगोलीय अध्ययन के लिए एक टावर बनवाया। उस समय तक टेलीस्कोप का अविष्कार नहीं हुआ था। लकड़ियों और धातु के पाइपों की मदद से वे नक्षत्रों की गति का अध्ययन किया करते। 1514 में उन्होंने एक वैज्ञानिक रपट लिख कर अपने दोस्तों को बांटा। भौतिकविज्ञान के इतिहास में इस रपट को अब 'द लिटल कमेंट्री' के नाम से जाना जाता जाता है। कॉपरनिकस ने दावा किया कि धरती सूरज के चारों ओर घूमती है, न कि सूरज धरती के, जैसा कि धर्मशास्त्रों में लिखा था। इस सिद्धांत से अरस्तू और टॉल्मी के सिद्धान्तों की दिक्कतें दूर हो जाती थीं। इस शुरुआती काम के बाद अगले दो दशक गहन अध्ययन के थे।

1532 के आते-आते कॉपरनिकस अपने सिद्धांतों को एक पांडुलिपि का रूप दे चुके थे। इसका प्रकाशन उन्होंने जानबूझ कर रोके रखा क्योंकि उन्हें आशा थी कि वे कुछ और सामग्री जुटा सकेंगे। इसके अलावा उन्हें यह भय भी था कि पादरी लोग भगवान के नाम पर बड़ा बखेड़ा खड़ा करेंगे। कुछ सालों बाद जर्मनी से एक नामी गणितज्ञ जॉर्ज रेटीकस उनके साथ काम करने पोलैंड आए। कॉपरनिकस अड़सठ के हो चुके थे जब उनकी सहमति से संशोधित पांडुलिपि को लेकर जॉर्ज रेटीकस नूरेमबर्ग पहुंचे जहाँ योहान पेट्रीयस नाम के प्रिंटर ने उसे 'ऑन द रेवोल्यूशंस ऑफ द हेवनली स्फीयर्स' नामक क्रांतिकारी किताब की शक्ल दी।

किताब की शुरुआत में कॉपरनिकस ने एक रेखाचित्र के माध्यम से ब्रह्माण्ड के आकार *शेष पृष्ठ 18 पर*

अंधविश्वास विरोधी महान प्रतिभाएं

संपादक: राकेश नाथ
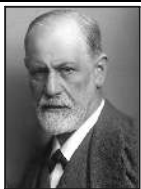
सिग्मंड फ्रायड (1856-1939 ई.)

फ्रायड का जन्म 6 मई, 1856 को चेकोस्लोवाकिया के फ्रीवर्ग, मोराविया में हुआ था, उन के माता पिता यहूदी धर्म के अनुयायी थे। बचपन में उन्हें धार्मिक शिक्षा देने के लिए 'नैनी' नामक एक प्रौढ़ा नियुक्त की गई, जिस ने विभिन्न धार्मिक कथाओं के माध्यम से ईश्वर, स्वर्ग, नरक, आत्मा, पाप, पुण्य आदि से संबंधित धार्मिक विश्वासों की शिक्षा दी। इस शिक्षा का उन के भावी जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। धर्म संबंधी अंधविश्वासों के प्रति उनके मन में उत्पन्न घृणा इसी शिक्षा का परिणाम है।

यों तो फ्रायड को एक मनोविश्लेषक माना जाता है, किंतु वह आस्थावादी अंधविश्वासों के भी प्रबल विरोधी थे। फ्रायड ने यहूदियों के धर्म व्यवस्थापक पैगंबर मूसा के जीवन के उपलब्ध तथ्यों का अध्ययन कर के उन के मरणोपरांत एक मनोविश्लेषण प्रस्तुत किया, जिससे फ्रायड के धर्म और ईश्वर संबंधी विचार सामने आए।

फ्रायड के अनुसार, धर्म एक सुखद दिग्भ्रम है, इसके अतिरिक्त यह सामुदायकि तौर पर मानव जाति को अभिभूत करने वाला मनोरोग भी है। धार्मिक वृत्ति मनुष्य की स्नायुविक रुग्णावस्था की द्योतक है। जिन मानसिक दशाओं में धर्म की उत्पत्ति होती है, वे विश्लेषण करने पर उन दशाओं से भिन्न नहीं प्रतीत होते, जिन में मनोरोग उत्पन्न होते हैं।

थिओडर रूजवेल्ट-(1858-1919 ई.)

थिओडर रूजवेल्ट का जन्म न्यूयार्क शहर में 1858 में हुआ था। हारवर्ड विश्वविद्यालय में 1880 में स्नातक होने के बाद 1880-81 में कानून की पढ़ाई पूरी की। उन के अनुसार- ''किसी सच्चे ईमानदार नागरिक से इस आधार पर भेदभाव करना, क्योंकि उसका संबंध किसी धर्म विशेष से है या वह किसी धर्म में खुलेआम निष्ठा न रखता हो, चेतना की स्वतंत्रता के विरुद्ध अत्याचार है। चेतना (विचारों) की यह स्वतंत्रता जीवन की आधारशिला है।'' (9 नवंबर, 1908 को जे.सी. मार्टिन को लिखे पत्र में।)

''मैं इस बात पर दृढ़ हूं कि देश में राज्य का धर्म से पूरी तरह संबंध विच्छेद होना आवश्यक है; किसी धर्म विशेष को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से सार्वजनिक धन का उपयोग नहीं किया जाएगा; अत: पब्लिक स्कूल संप्रदाय से मुक्त होंगे तथा संप्रदाय से जुड़े पब्लिक स्कूलों में सार्वजनिक धन नहीं खर्च किया जाएगा।'' 12 अक्तूबर, 1915 को कार्नेगी हाल में भाषण।

बर्ट्रेंड रसेल (1872-1970 ई.)

सन् 1872 में जनमे बर्ट्रेंड रसेल गणितज्ञ और दार्शनिक थे। 1916 तक वह ट्रिनिटी कॉलेज, कैंब्रिज के फैलो रहे। प्रथम विश्व युद्ध का विरोध करने के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। बाद में वह लास एंजिल्स स्थित कैलीफोर्निया यूनीवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर भी रहे।

बर्ट्रेंड रसेल का कहना है कि धर्म का आधार भय की भावना है और भय क्रूरता का जनक होता है। इसलिए धर्म और क्रूरता को हाथ में हाथ मिलाए चलते देख कर आश्चर्य नहीं होना चाहिए; क्योंकि दोनों भय से ही उत्पन्न होते हैं।

पेरियार (1879-1973 ई.)

1879 में इरोड (तमिलनाडु) में जनमें इरोड वेंकटनायकर रामा स्वामी 'पेरियार' के नाम से अधिक प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अंधविश्वासपूर्ण जातिवाद, ईश्वरवाद, ब्राह्मणवाद का जम कर विरोध किया था। मूर्तिपूजा जैसे अंधविश्वासों में भी वह विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने 1953 में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर एक प्रतिमा तोड़ी थी और 1956 में चित्र जलाए थे।

अल्बर्ट आइंस्टीन- (1879-1955 ई.)

अमेरिकी सैद्धांतिक भौतिकवाद आइंसटीन का जन्म जर्मनी के शहर अल्म में हुआ था। कई विश्वविद्यालयों में भौतिकी के प्रोफेसर रहे। 1922 में भौतिकी में नोबुल पुरस्कार मिला। बाद में अमेरिकी नागरिकता ग्रहण कर ली।
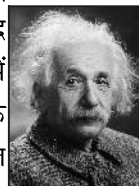
''वास्तव में आप ने मेरी धार्मिक धारणाओं के बारे में कुछ पढ़ा, वह एक झूठ था, एक ऐसा झूठ जो सुनियोजित ढंग से दोहराया गया है। मैं किसी ईश्वर में विश्वास नहीं करता हूँ और इस बात से मैं ने कभी इनकार नहीं किया है

बल्कि इसे मैं ने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। यदि मुझ में कोई ऐसी चीज है जिसे धर्म कहा जा सकता है तो वह है संसार की रचना की उस हद तक मेरी असीम प्रशंसा जहां तक हमारा विज्ञान इसे प्रकट कर सकता है।''

''व्यक्ति का नैतिक आचरण मुख्य रूप से सहानुभूति, शिक्षा और सामाजिक बंधन पर निर्भर होना चाहिए; इस के लिए धार्मिक आधार की कोई आवश्यकता नहीं है। मृत्यु के बाद दंड का भय और पुरस्कार की आशा से नियंत्रित करने पर मनुष्य की हालत दयनीय हो जाया करती है।''

विनोबा भावे (1895-1982 ई.)

प्रमुख गांधीवादी समाज सुधारक, भूदान के सूत्रधारक आचार्य विनोबा भावे ने 'मनुस्मृति' के प्रति समाज में व्याप्त अंधानुकरण का विरोध किया। उन्होंने मूल 'मनुस्मृति' की गलत, काल बाह्य (आउट डेटेड), अन्याय और अहितकारी बातों को छोड़ कर, संदेशपरक विचार 'संग्रह प्रकाशित किया, जिसका नामरखा 'मनुशासनम्'।

अर्नेस्ट हेमिंगवे (1899-1961 ई.)

अमेरिकी लेखक अर्नेस्ट हेमिगवे का जन्म अमेरिका के ओक पार्क तृतीय में 1899 में हुआ था। विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका के एंबुलेंस यूनिट में स्वयंसेवक, बाद में वहां की एक न्यूज एजेंसी के संवाददाता रहे। उन के अनुसार, ''सभी विचारवान लोग नास्तिक होते हैं'' इस से यह प्रकट होता है कि कट्टर धार्मिक परिवार में पले होने के बावजूद अर्नेस्ट की ''ईश्वर में आस्था ही न थी। उन्होंने इस संगठित धर्म को मानव जाति की खुशहाली के लिए जोखिम भरा भी माना है।''

और उन्होंने बहुत पहले से ही धार्मिक कार्यों को करना बंद कर दिया था।

विश्वनाथ (1917-2002 ई.)

इस प्रकरण में मैं 'सरिता' व दिल्ली प्रेस के प्रकाशनों के संस्थापक व संपादक विश्वनाथ जी का उल्लेख कर रहा हूं।

1917 में जन्मे विश्वनाथ जी ने आजीवन अंधविश्वासपूर्ण रूढ़िवादिता का जम कर विरोध किया, जो हिंदुओं की दो हज़ार वर्षों से भी अधिक लंबी गुलामी के मूल में रही है। एक सच्चे भारतीय होने के नाते उन्होंने भारतीय इतिहास, धर्म एवं संस्कृति का गहन अध्ययन किया था, जिस के परिणामस्वरूप उन्हें प्रतीत हुआ कि भारती बल और पराक्रम में किसी से कम नहीं हैं, किंतु धार्मिक रूढ़िवादिता के कारण उनमें एकता का अभाव है। उन्हें लगा कि सालों से चली आ रही यह मानसिक गुलामी- अंधविश्वासों, रूढ़ियों और धर्म के धंधेबाजों की गुलामी, जब तक दूर नहीं होगी तब तक हम भौतिक रूप से कितने ही स्वतंत्र हो जाएं, पर वास्तव में स्वतंत्र नहीं हो सकते, क्योंकि हमारे सामाजिक, धार्मिक, अंधविश्वास कदम-कदम पर हमारे पैरों की बेड़ियां बने रहेंगे और ये बेड़ियां तब तक नहीं टूट सकतीं जब तक समाज में वैचारिक क्रांति न लाई जाए। इन बेड़ियों का खोखलापन जगजाहिर न कर दिया जाए।

अत: विश्वनाथ जी ने भारतीयों को एकजुट करने के लिए लीक से हट कर सामाजिक सुधारों को अपनी पत्रकारिता का लक्ष्य बनाया। उनके इस उद्देश्य की झलक 'सरिता' के प्रथम अंक (1945) से ही मिलने लगती है। उन्होंने हिंदू धर्म और समाज में व्याप्त असंख्य अंधविश्वासपूर्ण बुराइयां उजागर कीं। इस संबंध में समय-समय पर लेख प्रकाशित किए। संपादकीय टिप्पणियां भी लिखीं, 'हमारी बेड़ियां' शीर्षक से एक स्थायी स्तंभ आरंभ कर के पाठकों को भी आमंत्रित किया। इतना ही नहीं, विश्वनाथ जी ने धर्म के नाम पर अंधघविश्वास फैलाने वालों की पोल भी खोली।

इसका परिणाम यह हुआ कि धर्म के धंधेबाज उन के विरोध में उठ खड़े हुए। उन्होंने विश्वनाथ जी और उन की 'सरिता' के विरोध में तमाम प्रदर्शन किए, विरोध प्रस्ताव पारित किए। 'सरिता' के कार्यालय पर पथराव किया, तोड़फोड़ की, फिर भी मन नहीं भरा तो आग लगा दी। सड़कों पर विश्वनाथ जी का पुतला जलाया गया उन्हें जान से मारने की धमकी दी गई।

इसके साथ-साथ इन कट्टरवादियों ने विश्वनाथ जी के विरुद्ध धार्मिक आस्था की आड़ ले कर सैंकड़ों मुकदमे दायर किए, पर हर बार मुंह की खाई। जीत विश्वनाथ जी की ही हुई-'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की ही जीत होती है।

विश्वनाथ जी के विचारों का प्रभाव उनके परिवार पर भी पड़ा। उनका परिवार भी इन आस्थापूर्ण अंधविश्वासों से दूर है। यहां तक कि विश्वनाथ जी के देहांत पर उन का विद्युत शवदाह गृह में अंतिम संस्कार हुआ। उठावनी, तेरहवीं, पिंडदान, श्राद्ध आदि अंधविश्वास पूर्ण कोई कार्य नहीं किया

गया।

घर परिवार पर ही नहीं उनके अधिकांश सहयोगियों आदि पर भी उन की विचारधारा का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। लगभग 50 वर्षों तक उन के साथ रहे प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक सी.पी. खरे ने भी अपने पिता के देहांत पर कोई कर्मकांड नहीं किया।

आर्थर सी. क्लार्क (1917 ई.)

16 दिसंबर, 1917 में इंग्लैंड के माइनहेड, सोमरसेट में पैदा हुए एक वैज्ञानिक उपन्यासकार जो रायल एयरफोर्स में राडार इंस्ट्रक्टर थे। उनका कहना है–

''इस ग्रह पर शायद हमारी भूमिका ईश्वर की पूजा करना न हो कर उसे पैदा करना हो।''

''धर्म भय का गौण उत्पाद (बाईप्रोडक्ट) है। मानव इतिहास की शायद यह एक आवश्यक बुराई बन चुकी है, क्यों यह आवश्यकता से अधिक बुरा होता है ? क्या यह ईश्वर के नाम पर लोगों को नहीं मार रहा है ? क्या यह ईश्वर पागलपन की एक अच्छी सुंदर परिभाषा नहीं है ?

इसाक आसिमोव–(1920–1992 ई.)

रूस में जनमे अमेरिकी लेखक इसाक आसिमोव ने कोलंबिया विश्वविद्यालय से सन 1936 में स्नातक और उसी विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की। वह वैज्ञानिक उपन्यासकार थे। वह अपने आप को पूरी तरह नास्तिक मानते थे।

''मैं पूरी तरह से नास्तिक हूं। इसे कहने में मुझे एक लंबा समय लगा। वर्षों पहले से मैं नास्तिक हो चुका हूं, लेकिन मुझे कुछ ऐसा लगता था कि नास्तिक कहना बौद्धिक रूप से असम्मानजनक है क्योंकि इसे व्यक्ति में ज्ञान का अभाव माना जाता है। अज्ञेयवादी या मानवतावादी कहना तो हम से कुछ अच्छा ही था। ईश्वर का अस्तित्व नहीं है यह सिद्ध करने के लिए मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है, किंतु मुझे इतना संदेह है कि उसका अस्तित्व नहीं है इसलिए मैं अपना समय नहीं बेकार करना चाहता हूं।''

''सृष्टिवादी इसे पक्का सिद्धांत बना लेते हैं। यह सिद्धांत उस स्वप्न जैसा होता है जिसे तुम रात भर पीने के बाद देखते हो।''

जेन रोडेनबरी–(1921–1991 ई.)

तारापथ के खोजकर्त्ता जेन रोडेनबरी का जन्म अमेरिका के एलपास्से टेक्सास में हुआ था। उन्होंने लासएंजेल से स्नातक किया। वह टेलीविजन प्रोड्यूसर और लेखक थे। जेन ने अंतरिक्ष में तारापथ की खोज की थी। उन्होंने कहा–

''मैं मक्कार धार्मिक बाबाओं की निंदा करता हूं, मैं बौद्धिक निर्णय की शक्ति को क्षीण करने के प्रयास की, लोगों के स्वतंत्र विचार को कमजोर बनाने की निंदा करता हूं। सभी धर्मों का अपना एक अलग दृष्टिकोण होता है। इसलिए मैं उन सब की उपेक्षा करता हूं। धर्म अधिकांश लोगों के लिए दिमागी खुराफात के अलावा और कुछ नहीं है। हमें उस सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर की तर्कहीण कथा पर आपत्ति करनी चाहिए जिस ने मनुष्यों को दोषपूर्ण बनाया है और फिर अपनी इस गलती पर उन्हें दोषी ठहराता है।''

स्टीफन हाकिंग–(1942 ई.)

स्टीफन हाकिंग का जन्म 1942 में इंग्लैंड में हुआ। वह तंत्रिका रोग से ग्रस्त खगोल भौतिकविद्, केवल कंप्यूटर से बातचीत करने में सक्षम है।

एक बार एक रिपोर्टर ने उन की किताब में वर्णित 'ईश्वर का विचार' पाठ का हवाला देते हुए उन से पूछा कि क्या आप वास्तव में ईश्वर को मानते हैं ? हाकिंग ने तुरंत जवाब दिया, ''मैं किसी ईश्वर को नहीं मानता हूं।''

स्टीफन किंग (1947 ई.)

1947 में पोर्टलैंड, मैंने में जनमे स्टीफन किंग ने मैंने विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। वह प्रमुख उपन्यासकार, लेखक, पटकथा लेखक थे। उनके अनुसार–

''धर्म की सनक की शोभा इस बात में निहित है कि इस में (धर्म में) हर चीज की व्याख्या करने की शक्ति होती है। इस नश्वर संसार में जब ईश्वर (या शैतान) हर चीज के आदि कारण के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है तो कुछ बचा रहने का मौका ही नहीं होता... तर्क खुशी–खुशी दरवाजे के बाहर फेंका जा सकता है।''

जेस्से 'द बाडी' वेंचुरा–(1951 ई.)

अमेरिकी राजनयिक और कुश्तीबाज जेस्से का जन्म 1951 में अमेरिका के मिनमोटा शहर में हुआ था। उन्होंने माडर्न एपोलिस से स्नातक किया। उन के अनुसार–

''धर्म उन कमजोर दिमाग के लोगों का पाखंड और बैसाखी है जिन्हें काफी तनाव की जरूरत है। धर्म लोगों को दूसरों के काम में दखलअंदाज़ी करना सिखाता है।''

डॉ. रमेंद्र (1957 ई.)

डॉ. रमेंद्र का जन्म 1957 में हुआ। उन्होंने 1981 में पूर्व सहपाठिनी डॉ. कवलजीत से अंतर्धार्मिक विवाह किया। दर्शनशास्त्र में उन्होंने पी.एचडी. और डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद 1985 में उन्होंने बिहार बुद्धिवादी समाज की स्थापना की जिस के संस्थापक अध्यक्ष रमेंद्र, बुद्धिवादी फाउंडेशन के भी संस्थापक थे। उन्होंने अंधविश्वासों पर कई पुस्तकें लिखीं-अंधविश्वास के विरुद्ध, क्या ईश्वर मर चुका है। उन की दृष्टि में-

''ईश्वर मानव जाति का सब से बड़ा अंधविश्वास है और यह विश्वास मानव ज्ञान और नैतिकता के विकास में, या दूसरे शब्दों में समाज के विकास में बहुत बड़ी बाधा है।''

उपसंहार

इन व्यक्तियों के कार्यों और विचारों से एक बात स्पष्ट है कि ज्यादातर प्रसिद्ध और चर्चित व्यक्तियों ने अंधविश्वासों से दूर रह कर ही महान उपलब्धियां हासिल की हैं। अन्य शब्दों में परंपरा से हट कर चलना महानता की निशानी है। कहा भी गया है-

लीकलीक गाड़ी चली, लीकै चलै कपूत।
लीक छांड़ि तीनों चलैं, सायर, सिंह, सपूत।

तो आइए, आप भी लीक या परंपरा छोड़ कर चलने का संकल्प लीजिए। अपने कमजोर मन पर विजय पाइए। हमारे या किसी भी व्यक्ति के कहने में आने से पहले, यानी उपदेश मान लेने से पहले उसे तर्क की कसौटी पर कसिए, व्यवहार में ला कर देखिए, क्या तथाकथित अपशकुन वास्तव मैं हानिकारक ही होते हैं? अगर कभी कभार अपशकुनों से कोई हानि भी हो गई हो तो अपशकुन को दोष देने से पहले अपने प्रयासों की कमजोरी का भी विश्लेषण कर के देख लीजिए। **(स्रोतः पुस्तक ''तर्क से काटिए अंधविश्वासों का जाल'')**

समर तो शेष है

नये संकल्प लें फिर से
नये नारे गढ़ें फिर से
उठो संग्रमियों !
जागो!
नयी शुरूआत करने का
समय फिर आ रहा है
सजेंगे फिर नये लश्कर

शशि प्रकाश

पृष्ठ 14 का शेष के बारे में बताया। इसमें सूर्य को केंद्र में रख उसके चारों तरफ अलग-अलग कक्षाओं में परिक्रमा करने वाले सभी ग्रहों को दिखाया गया था। जटिल गणनाओं के बाद उन्होंने यह भी बताया था कि इनमें से हर ग्रह को सूर्य का एक फेरा लगाने में कितना समय लगता है। आज के उन्नत खगोलविज्ञान और उसकी तकनीकों की मदद से ग्रहों की परिक्रमा का जो समय निकलता है, कॉपरनिकस की गणना आश्चर्यजनक रूप से उसके बहुत करीब है।

किताब छपकर नहीं आई थी और लम्बे समय से बीमार कॉपरनिकस कोमा में जा चुके थे। बताते हैं कि जब पहली प्रति उनके पास पहुंचाई गई वे बेहोशी से उठ बैठे और लम्बे समय तक आंखें मूंदे किताब को थामे रहे। कुछ दिनों बाद उनकी मौत हो गई। वे यह देखने को जीवित नहीं बचे कि कैसे उनकी महान क्रांतिकारी रचना ने पादरियों और धर्मगुरुओं के बनाए संसार को उसकी धुरी से रपटा दिया था।

जाहिर है कॉपरनिकस की किताब ने धर्म के कारोबारियों को बौखला दिया। चर्च का आधिकारिक बयान आया जिसमें किताब को ''झूठी और पवित्र धर्मशास्त्र की खिलाफत करने वाली'' बताया गया।

कोई 60 साल बाद इटली के ब्रूनो को सिर्फ इसलिए ज़िंदा जलाए जाने की सजा दी गयी कि उसने कॉपरनिकस के सिद्धांत का प्रचार-प्रसार किया। इसी अपराध के लिए गैलीलियो को भी ज़िंदा तो नहीं जलाया गया अलबत्ता उसके समूचे जीवन को अपमान और तिरस्कार से भर दिया गया।

आज जब आदमी मंगल पर घर बनाने की कल्पना कर रहा है, हमें कॉपरनिकस को याद रखना चाहिए। समूचे अन्तरिक्षविज्ञान की बुनियाद में जिसकी चालीस-पचास सालों की साधना चिनी हुई है। कॉपरनिकस का जीवन बताता है सच्चाई की खोज कभी निष्फल नहीं जाती और उसकी रोशनी सदियों बाद तक आदमी के रास्ते को आलोकित करती रहती हैं।

24 मई 1543 को कॉपरनिकस की देह की मृत्यु हुई लेकिन उनके विचार दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में आज भी जीवित हैं।

''तर्कशील पथ'' पढ़ो, ''तर्कशील'' बनो।

विज्ञान पढ़े, तर्क करें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं

- डॉ. दिनेश मिश्र

- कोई नारी टोनही (डायन) नहीं - डॉ दिनेश मिश्र

- भारतीय बौद्ध महासभा में व्याख्यान

-अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष व नेत्र विशेषज्ञ डॉ. दिनेश मिश्र ने भारतीय बौद्ध महासभा द्वारा 67वें धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस के अवसर पर आयोजित सभा में सामाजिक अंधविश्वास एवम उसका निर्मूलन विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा, विज्ञान की शिक्षा, एवं प्रौद्योगिकी के कारण देश में वैज्ञानिक उपलब्धियां बढ़ रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी तकनीक का प्रभाव बढ़ा है। ऑन लाइन पढ़ाई, इंटरनेट से वर्क फ्रॉम होम का भी चलन कोरोना काल से पर्याप्त विकसित हुआ है पर उसके बाद भी देश में अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के कारण अक्सर अनेक निर्दोष लोगों को प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता है, जिससे निदान के लिए आम जन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की अत्यंत आवश्यकता है। विज्ञान पढ़ें, तर्क करें, समझें, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाये।

डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा चर्चा, तर्क और विश्लेषण वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए जरूरी है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सम्बंध तर्कशीलता से है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमारे अंदर अन्वेषण की प्रवृत्ति विकसित करता है, तथा विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करता है, इस लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हमारे संविधान का महत्वपूर्ण अंश है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार वही तथ्य ग्रहण करने योग्य है जो प्रयोग और परिणाम से सिद्ध की जा सके. गौतम बुद्ध ने भी कहा है किसी भी सुनी सुनाई बात पर भरोसा मत करो, अवलोकन करो, परीक्षण करो,जब सही लगे तब उसे मानो।

डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा: आज भी कुछ लोग अंधविश्वास के कारण हमेशा शुभ-अशुभ के फेर में पड़े रहते है। यह सब हमारे मन का भ्रम है। शुभ-अशुभ सब हमारे मन के अंदर ही है। किसी भी काम को यदि सही ढंग से किया जाये, मेहनत, ईमानदारी से किया जाए तो सफलता जरूर मिलती है। उन्होंने कहा कि 18वीं सदी की मान्यताएं व कुरीतियां अभी भी जड़े जमायी हुई है जिसके कारण जादू-टोना, डायन, टोनही, बलि व बाल विवाह जैसी परंपराएं व अंधविश्वास आज भी वजूद में है जिससे प्रतिवर्ष अनेक मासूम जिन्दगियां तबाह हो रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे में वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ाने और तार्किक सोच को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि अंधविश्वास को कुरीतियों के विरूद्ध समाज के साथ विद्यार्थियों को भी एकजुट होकर आगे आना चाहिए।

डॉ. मिश्र ने कहा: विभिन्न प्राकृतिक आपदायें हर गांव में आती है, मौसम परिवर्तन व संक्रामक बीमारियां भी गांव को चपेट में लेती है, वायरल बुखार, मलेरिया, दस्त जैसे संक्रमण भी सामूहिक रूप से अपने पैर पसारते है। ऐसे में ग्रामीण अंचल में लोग कई बार बैगा-गुनिया के परामर्श के अनुसार विभिन्न टोटकों, झाड़-फूंक के उपाय अपनाते है। जबकि प्रत्येक बीमारी व समस्या का कारण व उसका समाधान अलग-अलग होता है, जिसे विचारपूर्ण तरीके से ढूंढा जा सकता है। कोरोना जैसी महामारी का हल व उपचार वैक्सीन बनाने एवं उसे लोगों तक उपलब्ध कराने में चिकित्सा विज्ञान की बड़ी भूमिका रही है. उन्होंने कहा कि बिजली का बल्ब फ्यूज होने पर उसे झाड़-फूंक कर पुन: प्रकाश नहीं प्राप्त किया जा सकता, न ही मोटर सायकल, ट्रांजिस्टर बिगड़ने पर उसे ताबीज पहिनाकर सुधारा जा सकता। रेडियो, मोटर सायकल, टी.वी., ट्रेक्टर की तरह हमारा शरीर भी एक मशीन है जिसमें बीमारी आने पर उसके विशेषज्ञ के पास ही जांच व उपचार होना चहिए।

डॉ. मिश्र ने विभिन्न सामाजिक कुरीतियों एवं अंधविश्वासों की चर्चा करते हुए कहा कि बच्चों को भूत-प्रेत, जादू-टोने के नाम से नहीं डराएं क्योंकि इससे उनके मन में काल्पनिक डर बैठ जाता है जो उनके मन में ताउम्र बसा होता है। बल्कि उन्हें आत्मविश्वास, निडरता के किस्से कहानियां सुनानी चाहिए। जिनके मन में आत्मविश्वास, व निर्भयता होती है, उन्हें न ही नजर लगती है और न कथित भूत-प्रेत बाधा लगती है। यदि व्यक्ति कड़ी मेहनत, पक्का इरादा का काम करें तो कोई भी ग्रह, शनि, मंगल, गुरू उसके रास्ता में बाधा नहीं बनता।

डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा- देश में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूँक की मान्यताओं एवं डायन (टोनही)के संदेह में प्रताडना तथा सामाजिक बहिष्कार के मामलों की भरमार है। डायन के सन्देह में प्रताडना के मामलों में अंधविश्वास व सुनी-सुनाई बातों के आधार पर किसी निर्दोष महिला को डायन घोषित कर दिया जाता है तथा उस पर जादू-टोना कर बच्चों को बीमार करने, फसल खराब होने, व्यापार-धंधे में नुकसान होने के कथित आरोप लगाकर उसे तरह-तरह की शारीरिक व मानसिक प्रताडना दी जाती है। कई मामलों में आरोपी महिला को गाँव से बाहर निकाल दिया जाता है। बदनामी व शारीरिक प्रताडना के चलते कई बार पूरा पीड़ित परिवार

स्वयं गाँव से पलायन कर देता है। कुछ मामलों में महिलाओं की हत्याएँ भी हुई है अथवा वे स्वयं आत्महत्या करने को मजबूर हो जाती हैं। जबकि जादू-टोना के नाम पर किसी भी व्यक्ति को प्रताड़ित करना गलत तथा अमानवीय है। वास्तव में किसी भी व्यक्ति के पास ऐसी जादुई शक्ति नहीं होती कि वह दूसरे व्यक्ति को जादू से बीमार कर सके या किसी भी प्रकार का आर्थिक नुकसान पहुँचा सके। जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, टोनही, नरबलि के मामले सब अंधविश्वास के ही उदाहरण हैं। महाराष्ट्र छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश ओडीसा, झारखण्ड, बिहार, आसाम सहित अनेक प्रदेशों में प्रतिवर्ष टोनही/डायन के संदेह में निर्दोष महिलाओं की हत्याएँ हो रही है जो सभ्य समाज के लिये शर्मनाक है। नेशनल क्राईम रिकॉर्ड ब्यूरो ने सन् 2001 से 2015 तक 2604 महिलाओं की मृत्यु डायन प्रताडऩा के कारण होना माना है। जबकि वास्तविक संख्या इनसे बहुत अधिक है। अधिकतर मामलों में पुलिस रिपोर्ट ही नहीं हो पातीं। हमने जब आर टी आई से जानकारी प्राप्त की तब हमें बहुत ही अलग आंकड़े प्राप्त हुए। झारखंड में 7000, बिहार में 1679, छत्तीसगढ़ में 1357, ओडिशा 388 में, राजस्थान 95 में, आसाम में 102 मामलों की प्रमाणिक जानकारी है।जबकि कुछ राज्यों से जवाब ही नहीं मिला. पर समाचार पत्रों में लगभग सभी राज्यों से ऐसी घटनाओं के समाचार मिलते हैं।

डॉ. मिश्र ने कहा : आम लोग चमत्कार की खबरों के प्रभाव में आ जाते हैं। हम चमत्कार के रूप में प्रचारित होने वाले अनेक मामलों का परीक्षण व उस स्थल पर जाँच भी समय-समय पर करते रहे हैं। चमत्कारों के रूप में प्रचारित की जाने वाली घटनाएँ या तो सरल वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के कारण होती है तथा कुछ में हाथ की सफाई, चतुराई होती है जिनके संबंध में आम आदमी को मालूम नहीं होता। कई स्थानों पर स्वार्थी तत्वों द्वारा साधुओं का वेश धारण चमत्कारिक घटनाएँ दिखाकर ठगी करने के मामलों में वैज्ञानिक प्रयोग व हाथ की सफाई के ही करिश्में थे। लोगों को ऐसे ठग, बाबाओं, तथाकथित तांत्रिकों, के जाल में नहीं फंसना चाहिए।

डॉ. मिश्र ने कहा: भूत-प्रेत जैसी मान्यताओं का कोई अस्तित्व नहीं है। भूत-प्रेत बाधा व भुतहा घटनाओं के रूप में प्रचारित घटनाओं का परीक्षण करने में उनमें मानसिक विकारों, अंधविश्वास तथा कहीं-कहीं पर शरारती तत्वों का हाथ पाया गया। आज टेलीविजन के सभी चैनलों पर भूत-प्रेत, अंधविश्वास बढ़ाने वाले धारावाहिक प्रसारित हो रहे हैं। ऐसे धारावाहिकों का न केवल जनता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है बल्कि छोटे बच्चों व विद्यार्थियों पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में हमने राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वेक्षण कराया है जिसमें लोगों ने ऐसे सीरियलों को बंद किये जाने की मांग की है। ऐसे सीरियलों को बंद कर वैज्ञानिक विकास व वैज्ञानिक दृष्टिकोण बढ़ाने व विज्ञान सम्मत अभिरूचि बढ़ाने वाले धारावाहिक प्रसारित होना चाहिए। भारत सरकार के दवा एवं चमत्कारिक उपचार के अधिनियम 1954 के अंतर्गत झाड़-फूँक, तिलस्म, चमत्कारिक उपचार का दावा करने वालों पर कानूनी कार्यवाही का प्रावधान है। इस अधिनियम में पोलियो, लकवा, अंधत्व, कुष्ठरोग, मधुमेह, रक्तचाप, सर्पदंश, पीलिया सहित 54 बीमारियाँ शामिल हैं। लोगों को बीमार पडने़ पर झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र, जादुई उपचार, ताबीज से ठीक होने की आशा के बजाय चिकित्सकों से सम्पर्क करना चाहिए क्योंकि बीमारी बढ़ जाने पर उसका उपचार खर्चीला व जटिल हो जाता है।

डॉ. मिश्र ने कहा : अंधविश्वास, पाखंड एवं सामाजिक कुरीतियों का निर्मूलन एक श्रेष्ठ सामाजिक कार्य है जिसमें हाथ बंटाने हर नागरिक को स्वयं आगे आना चाहिए।

'देवता को खुश' करने के नाम पर 4 दलित महिलाओं से रेप

राजस्थान के बूंदी में एक ढोंगी बाबा द्वारा देवता को खुश करने के नाम पर चार दलित महिलाओं के साथ रेप करने का मामला सामने आया है। बाबा ने महिलाओं की अश्लील वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दीं। पीड़ित महिलाओं ने थाने में शिकायत दी है। पीड़ित महिलाओं ने बताया कि ढोंगी बाबा से उनकी मुलाकात 10 माह पूर्व मजदूरी करने के दौरान हुई। ढोंगी बाबा ने खुद के शरीर में देवता आने का दावा किया। देवता के खुश होने पर महिला की राशि दोगुनी होने और पुत्रविहीन महिला को पुत्र होने का झांसा देकर एक महिला से दुष्कर्म किया। झांसे में आकर रेप पीड़िता ने अपनी छोटी बहन, बहन की पुत्रविहीन पुत्री और अपनी समधन को भी ढोंगी बाबा के पास चढ़ावा देकर रात में भेजा, जहां बाबा ने उनके साथ रेप किया। पीड़िताओं का आरोप है कि इस दौरान ढोंगी बाबा ने अपने चार साथियों के सहयोग से चारों महिलाओं के अश्लील वीडियो बनवा लिए। बाद में पीड़िताओं को ब्लैकमेल कर अपने साथियों से भी यौन शोषण करवाना शुरू कर दिया। महिलाओं ने जब वहां जाना बंद कर दिया तो उसने अश्लील वीडियो वायरल कर दिए। पीड़िताओं ने बताया कि ढोंगी बाबा ने उनसे चढ़ावे के नाम पर 3 लाख रुपए भी ऐंठ लिए।

शेष पष्ठ 13 पर

चौरीचौरा विद्रोह की गूंज

- सुभाष चन्द्र कुशवाहा

इतिहास की कुछ तारीखें, जनआक्रोश का सैलाब बनती हैं और मजबूत से मजबूत गढ़ों को न केवल नेस्तनाबूद करती हैं, अपितु छद्म क्रांतियों का पर्दाफाश भी करती हैं। **4 फरवरी, 1922**, चौरीचौरा विद्रोह की तारीख, कुछ ऐसे ही अमिट पन्नों को इतिहास में दर्ज करती है जिसे 'चौरीचौरा का अपराध' या 'गोरखपुर का अपराध या गुंडों का कृत्य' करार देने वाली राष्ट्रवादी राजनीति से मिटाया नहीं जा सकता। चौरीचौरा कांड, तत्कालीन जागीरों के जुल्म और उन्हें संरक्षण देने वाली ब्रिटिश सत्ता की कहानी तो कहता ही है, असहयोग आंदोलन की दिशा और दशा पर सवालिया निशान भी लगाता है। जमींदारों, ताल्लुकदारों के सहारे चलाई जा रही जुल्मी ब्रिटिश सत्ता के प्रतिकार में जब चौरीचौरा की जनता अपने तौर-तरीकों से आंदोलन की दिशा तय करने सड़क पर निकलती है, तो उसे अपराधी या असामाजिक तत्त्व कह कर, किनारे लगाने की कोशिश की जाती है।

चौरीचौरा के गरीब किसानों का विद्रोह, देशव्यापी किसान विद्रोहों की श्रृंखला की एक कड़ी के बजाय, इतिहास की संकीर्ण मनोवृत्तियों का शिकार होकर, लम्बे समय तक आपराधिक कृत्य के रूप में जाना, समझा गया। देश के लिये अपना घर-बार, जवानी, बीवी-बच्चों का त्याग, फांसी के फंदे, काले पानी की सजा और विभिन्न जेलों में सड़-गल जाने के बावजूद, अनपढ़, गंवार, अस्पृश्य समझे जाने वाले किसानों का बलिदान, कीमती नहीं समझा गया। अमूमन इस विद्रोह का मतलब उग्र भीड़ द्वारा थाना जलाने और 23 पुलिस कर्मियों को मार देने मात्र से जोड़ा जाता रहा। इस कांड के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार, क्रूर उप निरीक्षक गुप्तेश्वर सिंह एवं आसपास के जमींदारों के कृत्यों की निंदा नहीं की जाती।

प्रश्न आज भी मौजूद है कि क्या सचमुच तथाकथित निम्न जातीय समाज की अगुवाई में घटित इस विद्रोह के प्रति वर्तमान सत्ता ईमानदारी से नतमस्तक है या केवल अखबारी विज्ञापनों के माध्यम से सामंती मनोवृत्तियों को आंक कर, इस विद्रोह को निगलने या इसका उपयोग करने का कुचक्र रचा जा रहा है। चार फरवरी 2021 को प्रधानमंत्री जी ने शताब्दी समारोह का वर्चुअल उद्घाटन किया था। उन्होंने अपने संबोधन में कुछ स्थानीय कुलीनता वादी लोगों का नाम लिया, मगर फांसी की सजा पाये 19 शहीदों में से किसी का नाम नहीं लिया। मैं पांच फरवरी को डुमरी खुर्द गांव में गया था, जो इस विद्रोह का केन्द्र था और पाया, कि वहां झाड़ू तक नहीं लगा था। मुख्य समारोह स्थल पर स्थानीय सामंतों के कटआउट तो लगे थे, मगर शहीदों का कोई नामलेवा न था। 4 फरवरी 1922 को चौरा थाने को फूंकने, 23 सिपाहियों और चौकीदारों की हत्या करने वाले भूखे, गरीब लोग हिंसक नहीं थे और न हिंसा करने के निर्णय से थाने पर आए थे। वे आए थे स्थानीय सामंतों के उकसाने पर जुल्मी दरोगा द्वारा अकारण स्वयंसेवकों की बार-बार पिटाई का विरोध दर्ज कराने। विदित हो कि मुण्डेरा बाजार के स्वामी (जागीरदार) बाबू संत बख्श सिंह के इशारे पर भगवान अहीर और उसके साथियों-रामरूप बरई और महादेव की पिटाई 1 फरवरी को हुई थी।

1 फरवरी 1922, बुधवार की शाम को शिकारी के घर पर एक आवश्यक बैठक हुई, जिससे चौरा के महादेव, खेली भर, भगवान अहीर, लाल मुहम्मद सेन, मुण्डेरा बाजार के रामरूप बरई और डुमरी खुर्द के नजर अली तथा कुछ अन्य लोगों ने भाग लिया था। उसी मीटिंग में यह तय किया गया कि दूसरे मंडल के स्वयंसेवकों को पत्र लिखकर बुलाया जाए। हम एक बड़े समूह में 4 फरवरी को चलकर दरोगा से पूछें कि उसने हमारे आदमियों को क्यों मारा और अकारण क्यों मारता रहता है?

4 फरवरी की सुबह, डुमरी खुर्द गांव के खलिहान में स्वयंसेवकों का जुटान हुआ। लगभग 12 बजे के आसपास, जलूस ने थाने की ओर प्रस्थान किया। जमींदारों के आदमियों ने भरसक प्रयास किया कि जलूस न निकलने पाये। उन्होंने गरीब किसानों को डराया-धमकाया। गोरखपुर से पहुंचे सशस्त्र पुलिस बल का भय दिखाया परन्तु स्वयंसेवक झुकने को तैयार न हुए। जब जुलूस लाला हलवाई की फैक्ट्री के पास पहुंचा, तब डुमरी खास के सरदार जागीरदार के मैनेजर, सरदार हरचरन सिंह ने एक बार फिर जुलूस के नेताओं को रोकने का प्रयास किया था।

चौकीदारों द्वारा लाठीचार्ज करने के बाद, स्वयंसेवकों ने खतरे की सीटी बजा दी थी। उन्होंने पुलिस बल पर रेल पटरी पर बिछे पत्थरों की बौछार शुरू कर दी। उसके बाद गोली चलनी शुरू हुई। लोग मारे गए। कंकड़ों की मार से बचने के लिए सिपाहियों ने थाना भवन में छिपना मुनासिब समझा। बाद में स्वयंसेवकों ने थाना भवन घेरकर जला दिया। गांधी जी ने स्वयंसेवकों को गुंडे और असामाजिक तत्व कह कर निंदा किया। उन्होंने तत्काल असहयोग आंदोलन स्थगित करने का मन बना लिया था और अंततः 12 फरवरी को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया गया।

इस विद्रोह में उन्हीं लोगों को मुल्जिम बनाया गया, जिन्हें जमींदारों ने चाहा। पुलिस और मजिस्ट्रेटों ने अभियुक्तों की पहचान कर घटना के 7 सप्ताह बाद, दिनांक 25 मार्च, 1922 को मामला निचली अदालत के सुपुर्द कर दिया। 273 अभियुक्तों में से एक की मृत्यु हो गई। शेष 272 में से 228 अभियुक्तों के खिलाफ, निचली अदालत ने भारतीय आचार संहिता की विभिन्न धाराओं तथा 120 (सम्राट के विरूद्ध आपराधिक षड्यंत्र), 147 (दंगा), 149 (समान उद्देश्य के लिए गैर कानूनी सभा के प्रत्येक सदस्य का समान अपराध)/ 302 (हत्या का अपराध), 149/395 (डकैती), 435 (आगजनी), 332 (सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाना), 149/ 412 (चोरी का माल रखने का अपराध), 125 (टेलीग्राफ एक्ट) और 126 (रेलवे एक्ट) के अंतर्गत मुकदमा चलाने के योग्य पाया था और शेष 44 लोगों को अपने स्तर से मुक्त कर दिया था। सेशन कोर्ट में मुकदमा प्रारम्भ होने के पूर्व ही 2 अभियुक्तों की कारागार में मृत्यु हो चुकी थी तथा एक अभियुक्त के पुलिस मुखबिर हो जाने के कारण सरकार ने उसके ऊपर से मुकदमा उठा लिया था। लिहाजा सेशन कोर्ट में मात्र 225 अभियुक्तों पर मुकदमा चला। सेशन कोर्ट के जज एच. ई. होल्‍ मस ने अपनी कार्यवाही पूर्णकर 9 जनवरी, 1923 को 430 पृष्ठों में निर्णय सुना दिया। 225 अभियुक्तों में से 4 की मुकदमे के दौरान मृत्यु हो चुकी थी। बचे हुए 221 अभियुक्तों में से 47 ऐसे थे, जिनके बारे में सत्र न्यायाधीश इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि उन का आरोप सिद्ध नहीं हो पा रहा है, लिहाजा उन्हें रिहा कर दिया गया। बाकी 174 अभियुक्तों में से 2 ऐसे थे, जो घटना पूर्व घायल थे, जिन्हें लघु अपराध का दोषी पाया गया और 2-2 साल की सजा सुनाई गई। इस प्रकार 172 अभियुक्त ऐसे थे जिन पर विभिन्न आरोपों के अलावा मुख्य आरोप था-दंगे के दौरान थाना कर्मियों/चौकीदारों की हत्या करना। इन 172 अभियुक्तों को सेशन कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई थी और उन्हें उच्च न्यायालय में अपील करने के वास्ते मात्र 7 दिन का वक्त दिया था। फैसला सुनाते समय सेशन कोर्ट ने कहा था-यह अत्यंत दुखद दुर्घटना सविनय अवज्ञा आंदोलन का परिणाम था। यदि यह आंदोलन न शुरू हुआ होता तो संभवतः यह घटना न हुई होती। पंडित मदन मोहन मालवीय ने क्रिमिनल अपील संख्या 51/1923 'अब्दुल्ला और अन्य बनाम साम्राट' मामले में मुलजिमों की ओर से पैरवी की। दो और अभियुक्तों की जेल में मृत्यु हो जाने के बाद, हाईकोर्ट में मात्र 170 अभियुक्तों के संबंध में सुनवाई हुई। 30 अप्रैल, 1923 को सुनाया गया फैसला इस प्रकार था-

1-38 अभियुक्तों को कोर्ट ने दोषमुक्त कर दिया था।

2-3 अभियुक्तों के बारे में भारतीय दंड संहिता की धारा 147 के अनुसार केवल दंगे में भाग लेने का दोषी पाया और दूसरे सारे आरोपों से बरी करते हुए मात्र 2-2 वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई, जो सेशन कोर्ट द्वारा दोषी करार दिए गए तिथि, जनवरी 9, 1923 से ही प्रभावी मानी जानी थी।

3-129 अभियुक्तों में से, 19 अभियुक्तों को जिनमें नजरअली, लालमुहम्मद, भगवान, श्यामसुन्दर और अब्दुल्ला शामिल थे, को कोर्ट ने भारतीय दंड संहिता की धारा 302/ 149 के अंतर्गत थाने पर आक्रमण करने, सिपाहियों और उप निरीक्षकों की हत्या के लिए मुख्य और नेतृत्वकारी अपराधी मानते हुए फांसी की सजा सुनाई थी।

4-शेष 110 अभियुक्तों में से 14 अभियुक्तों पर भारतीय दंड संहिता 302/149 के अंतर्गत अभियोग सिद्ध मानते हुए भी जजों ने फांसी से कुछ कम सजा का हकदार मानते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी।

5-19 अन्य अभियुक्तों को हाईकोर्ट ने सश्रम 8 साल के कारावास की सजा सुनाई, जो सेशन कोर्ट द्वारा दोषी करार दिए गए तिथि, जनवरी 9, 1923 से ही प्रभावी मानी जाती थी। 6-57 अभियुक्तों को हाईकोर्ट ने सश्रम 5 साल के कारावास की सजा सुनाई जो सेशन कोर्ट द्वारा दोषी करार दिए गए तिथि, जनवरी 9, 1923 से ही प्रभावी मानी जाती थी।

7-अंतिम 20 अभियुक्तों को, जिनमें से ज्यादातर 16

से लेकर 21 वर्ष तक के नौजवान थे और न्यायालय की नजर में से कम सजा के हकदार थे तथा एक 53 वर्ष तथा दो 60-60 वर्ष के वृद्ध थे, उनके खराब स्वास्थ्य के कारण हाई कोर्ट ने सश्रम 3 साल की कारावास की सजा सुनाई जो सेशन कोर्ट द्वारा दोषी करार दिए गए तिथि जनवरी 9, 1923 से ही प्रभावी मानी जाती थी।

क्षमादान याचिकाएं खारिज हो जाने के बाद फांसी की सजा पाए 19 क्रांतिकारियों को 2 जुलाई 1923 से लेकर 11 जुलाई 1923 के मध्य, विभिन्न जेलों में फांसी दे दी गयी थी। 1981 तक चौरीचौरा विद्रोह राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम का हिस्सा नहीं माना गया था। कम्युनिस्ट नेता और विधानसभा सदस्य, गुरू प्रसाद के लिखित प्रयास के बाद, गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह ने दिनांक 30 अक्तूबर, 1981 को जवाब दिया कि चौरी-चौरा के सेनानी या उनके आश्रित, पेंशन के लिए आवेदन कर सकते हैं।

फांसी की सूली पर चढ़े चौरीचौरा के 19 क्रांतिकारियों के अलावा, आजीवन, 8 साल, 5 साल या 3 साल की सजा भोगने वाले भूखे, गरीब स्वयंसेवकों में से कुछ ने तो कारागारों में ही दम तोड़ दिया था, जो बचे हुए थे, वे कारागारों की अमानवीय यातनाओं के बाद इस कदर टूट चुके थे कि जल्द ही दुनिया से सिधार गए। उनके परिवार दर-दर की ठोकर खाने को मजबूर थे, लेकिन 'आज़ाद' भारत की सरकार के यहां अभी भी 1986 में मुख्यमंत्री पीड़ित सहायता कोष से चौरीचौरा के मात्र 29 लोगों को या उनके आश्रितों को प्रति व्यक्ति रुपए 325 की एकमुश्त आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए मात्र रुपए 9,425 का एक चेक भेजा था।

फांसी की सजा पाये 19 में से 6 शहीदों, भगवान अहीर, बिकरम अहीर, महादेव, सम्पत पुत्र मोहन, सहदेव पुत्र जीतू और श्यामसुन्दर के किसी भी आश्रित के नाम पेंशन स्वीकृति नहीं हुई। 8 शहीदों के आश्रितों को मात्र रस्म-अदायगी हेतु कुछ माह से लेकर कुछ सालों तक पेंशन मिली।

विद्रोह के एक साल बाद ही ब्रिटिश सरकार ने मारे गए सिपाहियों का स्मारक बना दिया था। 60 साल बाद, 6 फरवरी, 1982 को चौरीचौरा विद्रोह में शहीद हुए किसानों की याद में स्मारक निर्माण का शिलान्यास प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने किया लेकिन इसका उद्घाटन, 10 वर्ष बाद 19 जुलाई, 1993 को प्रधानमंत्री नरसिंहराव द्वारा हो सका। स्मारक से सटे एक संग्रहालय का निर्माण 1998 में कराया गया। आज उस संग्राहलय में 19 शहीदों के अलावा लगभग चालीस से अधिक लोगों की मूर्तियां स्थापित कर दी गयी हैं। जिनमें स्थानीय सामंतों और जमींदारों की भी मूर्तियां शामिल हैं जिन्होंने किसानों पर जुल्म किए थे। कई ऐसे लोगों को शहीद बताकर मूर्तियां लगा दी गयी हैं जो इस विद्रोह में शामिल ही न थे।

चौरीचौरा शताब्दी वर्ष में विद्रोह के मुख्य नायकों तक को केन्द्र में नहीं रखा गया है। इस विद्रोह के एक से अधिक अगुवे रहे, लेकिन शुरू में इस विद्रोह को उभारने वालों में नज़र अली और लाल मुहम्मद का नाम मुख्य है। डुमरी खुर्द सभा के साथ लाल मुहम्मद, नजरअली, भगवान अहीर, अब्दुल्ला, इन्द्रजीत कोइरी, एक चिमटे वाला सन्यासी और श्याम सुन्दर भी नेतृत्वकारी भूमिका में थे। शुरू में कुछ हद तक शिकारी ने भी सक्रिय भूमिका निभाई थी लेकिन उसके सरकारी गवाह बन जाने के कारण मूल्यांकन की पूरी स्थिति बदल गई। देश के इतिहासकारों और प्रबुद्धजनों के सामने चौरीचौरा विद्रोह एक प्रश्नचिन्ह बन खड़ा है। 100 से अधिक साल बाद भी आज देश की पीढ़ी को गलत इतिहास पढ़ाया जा रहा है। सरकारी स्तर पर यही बताया गया है कि चौरीचौरा विद्रोह के विद्रोहियों की फांसी 2 जुलाई, 1923 को हुई जबकि हकीकत यह कि फांसी 2 जुलाई, 1923 से प्रारम्भ होकर 11 जुलाई तक चली। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि चौरीचौरा 'शहीद स्मारक' कहने से स्पष्ट नहीं हो पाता कि इसका मतलब स्वयंसेवकों के शहीद स्मारक से है या गोली चलाने वाले ब्रिटिश पुलिस के शहीद स्मारक से। दोनों के नाम एक ही हैं। एक रेलवे लाइन के उत्तर और दूसरा दक्षिण में स्थित है। ब्रिटिश पुलिस शहीद स्मारक पर 'जय हिन्द' का लिखा जाना भी खलता है। **(स्रोत : ''दस्तक'' जनवरी-अप्रैल 2023)**

सुर्खियाँ कुछ और कहती है

समुंदर ये तिरी ख़ामोशियाँ कुछ और कहती हैं,
मगर साहिल पे टूटी कश्तियाँ कुछ और कहती हैं।
हमारे शहर की आँखों ने मंज़र और देखा था,
मगर अख़बार की ये सुर्ख़ियाँ कुछ और कहती हैं।
हम अहल-ए-शहर की ख़्वाहिश कि मिल-जुल कर रहें लेकिन,
अमीर-ए-शहर की दिलचस्पियाँ कुछ और कहती हैं।

ख़ुशबीर सिंह शाद

पाकिस्तान को बर्बाद करना है

हिमांशु कुमार

मैंने फैसला किया कि अब जब फेसबुक पर युद्ध का एलान हो ही चुका है तो चलकर पाकिस्तान का नामो निशान मिटाने के महान काम में मुझे भी अपना योगदान देना चाहिए। मैं राजस्थान में गड़रियों के साथ मिलकर पाकिस्तान में दाखिल हो गया। पाकिस्तान में घुसने के बाद मैंने आस पास नज़र दौड़ाई कि पाकिस्तान को बर्बाद करने की शुरुआत कहां से की जाये?

मेरे आस-पास रेत का मैदान और झाड़ियाँ थीं।

मैंने थोड़ी सी रेत बर्बाद करने की मंशा से हवा में उड़ा दी और सोचा कि कम से कम पाकिस्तान की कुछ रेत ही बर्बाद कर दूं। लेकिन वह रेत उड़ कर वापिस मेरी आँखों और कुछ मुंह में घुस गई।

अपना पहला वार खाली जाने के बाद गुस्से से मैंने कुछ पाकिस्तानी झाड़ियों को बर्बाद करने के लिहाज़ से उन्हें उखाड़ना चाहा। लेकिन रेगिस्तानी झाड़ियाँ काँटों से भरी होती हैं इसलिए मेरे हाथ में कांटे घुस गये।

झाड़ियों को कोसते हुए मैंने झाड़ियां बर्बाद करने का आइडिया भी ड्राप कर दिया।

मैंने दूर नज़र दौड़ाई तो वहाँ से मुझे धुंआ उठता दिखाई दिया। मैंने सोचा ज़रूर ये पाकिस्तानी आग जला कर भारत को जलाने की तैयारी में लगे हुए होंगे।

जब मैं धुंए के नज़दीक पहुंचा तो मैंने देखा कि धुंआ एक झोपड़ी से निकल रहा था। मैंने सोचा अंदर आतंकवादी होंगे। मैंने हाथ में एक डंडा ले लिया और घर के पीछे की तरफ गया। घर के पीछे एक खिड़की थी। मैंने चुपके से खिड़की के भीतर झाँका तो भीतर एक बूढ़ा आदमी चूल्हे पर रोटियाँ सेक रहा था।

कमरे में दीवार के साथ एक खाट पर एक बूढ़ी औरत लेटी हुई थी। वो शायद बीमार थी क्योंकि वो बार-बार खांस रही थी। ज़मीन पर एक बच्चा बोरी का टुकड़ा बिछा कर पढ़ रहा था।

मेरे खिड़की के झांकने से कमरे में आने वाली रोशनी कम हुई। बूढ़े व्यक्ति ने मुझे नज़र उठा कर देखा और पूछा ''कौन हो भाई भीतर आ जाओ।'' मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

मुझे लगा अगर मैंने भागने की कोशिश की तो अभी यह बूढ़ा चूल्हे के पीछे से ए-के फोर्टी सेवेन निकाल कर मुझे भून देगा। मैं डरते-डरते सामने के दरवाज़े से घर के भीतर चला गया।

बूढ़ी महिला खटिया पर उठ कर बैठ गई। बच्चा भी पढ़ाई रोक कर मुझे देखने लगा।

बूढ़े ने मेरे सामने बैठने के लिए एक लकड़ी का पीढ़ा सरका दिया और मटके से एक गिलास पानी निकालकर मेरे सामने खड़ा हो गया। मैंने सोचा ज़रूर पानी में ज़हर डाल कर लाया होगा।

लेकिन रेगिस्तान में इतनी देर चलने के बाद मेरा प्यास से बुरा हाल था, इसलिए मैंने सारा पानी एक ही सांस में खत्म कर दिया।

बूढ़े ने कहा ''बेटा लगता है परदेसी हो, रास्ता भटक गये हो, भूख लगी होगी लो रोटी खा लो।'' मेरे मना करने के बाद भी बूढ़े ने एक एल्मूनियम की थाली में दो रोटी और आलू की सब्ज़ी डाल कर मेरे सामने रख दी। मैंने सोचा कि पाकिस्तान को बर्बाद करने के लिए जिंदा रहना ज़रूरी है इसलिए खाना खा लिया जाये। मैं खाना खा रहा था, तभी बूढ़े ने कहा हिन्दुस्तान की तरफ से आये लगते हो? मुझे लगा कि ज़रूर यह बूढ़ा आई एस आई का एजेंट है। मैं घिर चुका था। मैंने डरते डरते कहा ''जी हाँ, रास्ता भटक गया था।''

बूढ़े ने बेहद नरमी से कहा ''कोई बात नहीं यहाँ के गडरिये अपनी बकरियां चराते चराते कभी कभी हिन्दुस्तान में चले जाते हैं।'' मैं बोल दूंगा तो हमारे गाँव वाले तुम्हें हिन्दुस्तान पहुंचा देंगे। मैंने सर नीचे करके कहा ''जी ठीक है।''

बाहर रात हो गई थी। बूढ़े ने कहा ''बेटा! रात को यहीं रुक जाओ। सुबह तुम्हारी वापसी का इंतजाम कर देंगे।'' आधी रात को जब सब सो रहे थे तो मैं उठा और चुपके से बाहर निकल गया। काफी दूर चलने के बाद एक सड़क मिली। सड़क पर करीब एक किलोमीटर चलने के बाद एक ढाबा मिला। ढाबे वाले से मैंने पूछा कि क्या यहाँ रुकने के लिए कोई इंतजाम हो सकता है। ढाबे वाले ने कहा कि इतनी सारी खाटें पड़ी हैं किसी पर भी सो जाइये।

ढाबे पर मैं सुबह सुबह उठ गया। सामने से एक ट्रक गुज़र रहा था। मैंने ट्रक को हाथ दिया और उसमें सवार हो गया। एक कस्बा देख कर मैंने कहा मुझे यहाँ उतार दो। जब उसे मैंने पैसे देने चाहे तो उसने भारतीय रूपये देख कर कहा कि जी आप तो हमारे मेहमान हो मैं आपसे पैसे कैसे लूँगा और ट्रक लेकर आगे बढ़ गया।

कस्बे में पहुँचने के बाद मैंने सोचा कि अब शायद मुझे पाकिस्तान को बर्बाद करने का मौका मिल सकता है। तभी मुझे एक फौज़ी दिखाई दिया। मैंने सोचा कि हाँ मेरी लड़ाई तो पाकिस्तान आर्मी से ही है क्योंकि ये फौज़ी ही तो हम पर हमला करते हैं। फौज़ी के करीब जाकर मैंने बहाना बनाया कि मैं पत्रकार हूँ और वीज़ा लेकर पकिस्तान में घूमने आया हूँ।

वो सिपाही मेरी बातों में आ गया। मैंने उससे पूछा कि आपके भारत के बारे में क्या विचार हैं? वो बोला कि देखिये सिपाही तो अफसर के आर्डर पर जंग लड़ता है। सिपाही की किसी से दुश्मनी नहीं होती। सिपाही तो हमेशा यही चाहता है कि अमन रहे।

उस फौज़ी ने कहा कि हमारे सामने बार्डर पर जो हिंदुस्तानी सिपाही खड़ा है वो पाकिस्तान के बारे में नहीं अपने बच्चों के बारे में सोचता रहता है। हम भी अपने बच्चों के भविष्य के बारे में फिक्रमंद रहते हैं। फौज़ी ने बताया कि उसके दो बच्चे हैं, बीबी को कैंसर हो गया है, इलाज करा रहा है। उसने बताया कि मुझे हमेशा छुट्टी लेनी पड़ती है इसलिए अफसरों से कई बार मुझे ताने भी सुनने पड़ते हैं।

मुझे लगा इस फौज़ी को मारने से पकिस्तान को कोई नुकसान नहीं होगा, उलटे इसके अफसर खुश होंगे कि चलो एक बोझ कम हुआ। पकिस्तान में घूमते हुए मैंने ग़रीब मजदूर देखे जो दिन भर काम करने के बाद भी अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते। मैंने किसान देखे जो कड़ी मेहनत के बाद भी अपने परिवार को इलाज और शिक्षा देने में असमर्थ हैं। मैंने पढ़े लिखे नौजवान देखे जो बिना नौकरी के परेशान हैं।

मैंने पाकिस्तान में भी धार्मिक लोगों को मज़े में देखा। उन्हें देखकर मुझे भारत के धार्मिक नेताओं की याद आ गई जो धर्म के नाम पर हमें लड़वाते रहते हैं। पकिस्तान में भी ऐसे भड़काने वाले लोग बड़े ताकतवर थे।

मैंने देखा जैसे भारत में पाकिस्तान के खिलाफ भड़का कर वोट मांगे जाते हैं वैसे ही पाकिस्तान में भी भारत के खिलाफ भड़का कर नेता लोग वोट मांग रहे थे। पाकिस्तान में मुझे एक युवक मिला उसने मुझसे कहा कि मेरी समझ में नहीं आता कि भारत पाकिस्तान को और क्या बर्बाद करना चाहता है ? हम तो पहले से ही बर्बाद हैं?

उसकी बातें सुन कर मुझे भारत की बर्बादी याद आ गई। हमारे भारत में भी तो किसान बर्बाद हो रहे हैं, मज़दूरों के ऊपर मज़दूरी बढ़ाने की मांग करने पर पुलिस लाठी चलाती है। हमारे देश में भी बड़े पूंजीपतियों के लिए लाखों आदिवासियों को जंगल से बाहर खदेड़ा जा रहा है। अब पाकिस्तान को बर्बाद करने का मेरा जोश कमज़ोर पड़ने लगा था। मैं जहां भी जाता था मुझे भारतीय जान कर लोग मुझे बहुत प्यार देते थे। मैंने सोचा पाकिस्तान को बर्बाद करने का मतलब क्या इन प्यारे लोगों को बर्बाद करना है? क्या हम इन स्कूल जाने वाले छोटे छोटे बच्चों को मारना चाहते हैं? क्या हम इन निर्दोष औरतों को या रोज़गार तलाश कर रहे नौजवानों को मारना चाहते हैं?

आखिर जब हम कहते हैं कि पाकिस्तान का नामो निशान मिटा दो तो हम इन निर्दोषों की हत्या के लिए तो अपनी सरकार को कहते हैं। यह सोचते हुए मेरा सर चकराने लगा। मुझे लगा यह मैं क्या बुरा काम करने चला था? हमें धर्म के नाम पर इतना क्रूर बनाया जा रहा है? और हम मूर्ख इन भड़काने वाले दुष्टों के पीछे लगे हुए हैं? अब मेरी आंखें खुल चुकी थीं। मैं जिस रास्ते भारत से पाकिस्तान गया था उसी रास्ते वापिस आ गया।

कविता

वह सुबह कब होगी

यह तो केवल रात है
और–
रात की नींद है
याकि ;
एक स्वप्न है दौड़ का
जो....
नींद मे घुल कर
थकान बन गया है
और!
थकान एक अभिशप्त ख़ामोशी
पता नहीं
वह सुबह कब होगी
जो–
जागने के लिए होती है।

– रोज़लीन

41 मजदूरों को बचाने वाले 12 जांबाज मजदूर बनें देश के असली हीरो

- मुनेश त्यागी

पूंजी मजदूरों का शोषण करती है
तो मेहनत मोहब्बत की दुकान सजाती है।
पूंजीपतियों के पास लाभ कमाने की हवस होती है
तो मजदूर को उत्पादन करने की चाह।

उत्तराखंड के रिषीकेश की सिलक्यारा सुरंग में फंसे 41 मजदूरों के सकुशल बाहर निकलने पर पूरे देश की जनता ने राहत की सांस ली है। यहां पर कुछ बातों की चर्चा करनी बहुत जरूरी है जो इस हादसे में देश के सामने आई है। ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में 41 मजदूरों को सुरंग में मरने खपने के लिए छोड़ दिया गया था। उनको निकालने के लिए देश-विदेश की सारी जुगत फेल हो गई थी। मॉडर्न टेक्नोलॉजी भी धरी की धरी रह गई थी। आखिरकार 17 दिनों से फंसे इन 41 मजदूरों को निकालने के लिए "रैट माइनर्स" का सहारा लिया गया और भारत के इन बहादुर 12 मजदूरों ने अपनी जान पर खेल कर अपने साथी 41 मजदूरों को मौत के मुंह से निकाल लिया।

इन 12 मजदूरों के नाम इस प्रकार हैं..... वकील, मुन्ना, फिरोज, मोनू, नसीम, इरशाद, अंकुर, रशीद, जतिन, नासिर, सौरभ और देवेंद्र। इन 12 मजदूरों ने लगातार बिना रुके 26 घंटे काम किया, सारी बाधाएं पार की और जीत हासिल की और अपने 41 मजदूर साथियों को मौत के मुंह से बाहर निकाल लिया। कई सारे सांप्रदायिक प्रवृत्ति के लोग इन मजदूरों को हिंदू मुसलमान कहकर प्रदर्शित कर रहे हैं। दरअसल उनकी यह सोच गलत है। ये सारे मजदूर मेहनतकश हैं ये हिंदू मुसलमान नहीं, ये भारत के असली सपूत हैं। असली देशभक्त हैं, असली भारतीय यानि हिंदुस्तानी हैं। ये सभी भारत के मजदूर वर्ग के असली नुमाइंदे हैं। ये 12 मजदूर रैट माइनर्स दिल्ली की "रोक्वेल इंटरप्राइजेज" कम्पनी के मजदूर हैं, जो सीवर और पानी की लाइनों को साफ करने का काम करते हैं। जब 25 नवंबर को सारी मशीनें नाकाम हो गईं, तो इन जांबाज मजदूरों को बुलाया गया। घटना स्थल का पूरा मौका मुआयना करने के बाद, इन्होंने चार-चार मजदूरों की तीन टीमें बनाईं, जो लगातार दो-दो घंटे काम करती थी और इन्होंने अपने लगातार प्रयास से 26 घंटे में अपने बेहद कठिन कार्य को अंजाम दिया और 17 दिन से सुरंग में फंसे 41 मजदूरों को बचा लिया।

असल में ये 12 मजदूर ही देश के असली अलम्बरदार हैं जिन्होंने भारत का मुंह पूरी दुनिया में काला होने से बचा लिया। 41 मजदूर तो बहादुर हैं ही, जो मुनाफे की हवस का शिकार हो गए थे, मगर इस पूरे घटनाक्रम में, देश के असली नायक तो ये 12 बहादुर मजदूर ही हैं जिन्होंने अपने परिवार की परवाह किए बिना, अपना सब कुछ अपना जीवन दांव पर लगा दिया और मुसीबत में फंसे भारत के 41 मजदूरों को मौत के मुंह से बचा लिया। बड़े अफसोस की बात है कि अधिकांश मीडिया जान पूछकर, जान पर खेल कर इन 41 मजदूरों को बचाने वाले, इन 12 मजदूरों की बात नहीं कर रहा है, उनके नाम, पते और उनके विश्व प्रसिद्ध इस महान कारनामे के बारे में कोई बात नहीं कर रहा है। मौत पर खेलने वाले इस अमर और अमिट अभियान के इन बहादुर मजदूरों के बारे में कोई बात नहीं कर रहा है। यह बेहद अफसोस की बात है। आज बात तो इन महान कारनामों की, इन मौत को हराने वाले महान कारनामों को अंजाम देने वालों की होनी चाहिए थी, भारत का माथा ऊंचा करने वाले इन महान मजदूरों की होनी चाहिए थी, देश के बच्चे बच्चे को, हर मजदूर, किसान और भारत के हर नागरिक को, उनके इस महान करनामे की जानकारी दी जानी चाहिए थी।

यहीं पर उस कंपनी और उसके मालिक के बारे में पूरे देश की जनता को जानकारी दी जानी चाहिए थी जिसने मजदूरों की सुरक्षा के तमाम तौर तरीकों को ताक पर रखकर, इन 41 मजदूरों को मौत के मुंह में धकेल दिया था, पर एक साजिश के तहत उस मुनाफाखोर शैतान को जान पूछ कर बचाया जा रहा है। इस पूरी साजिश में देश विरोधी और मजदूर विरोधी मुहिम में, हमारे देश का पूरा शासक वर्ग, पूरी सरकार और मीडिया का अधिकांश हिस्सा शामिल है।

आज भारत के हर सच्चे नागरिक और राजनीतिक नेता और कार्यकर्ता की यह जिम्मेदारी बन गई है कि इन तमाम मेहनतकश मजदूरों का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान किया जाए, इन्हें देश के नायक घोषित किया जाए । हम यहां पर यह भी कहेंगे कि सुरंग खोदने के सारे मामलों में, उन मजदूर सुरक्षा मापदंडों का पूरा पालन किया जाना चाहिए, ताकि मजदूरों की जान माल की पूरी सुरक्षा की जा सके और भविष्य में ऐसे जान लेवा हादसों से बचा जा सके। भारत के इन 41 मजदूरों को मौत के मुंह से निकालने वाले, भारत के असली हीरो इन 12 जांबाज मजदूरों को दिल से सलाम।

बच्चों के लिए
(विज्ञान)

मनुष्य ने कोण की माप करना कैसे सीखा

–आकाश आनन्द

स्कूल में गणित की कक्षा में ज्यामिति (ज्योमेट्री) तो पढ़ा ही होगा तुमने। तुमने यहाँ पेंसिल और कम्पास की मदद से वृत्त यानी कि सर्किल भी बनाया होगा। रेखा और कोण यानी कि लाइन और एंगल के बारे में भी पढ़ा होगा। तुमने यह भी पढ़ा होगा कि जब दो रेखाएँ एक बिन्दु पर आकर मिलती हैं तो कोण बनाती हैं। और इसे मापने की इकाई को अंश या डिग्री कहते हैं। समबाहु त्रिभुज के एक कोण को 60 डिग्री कहते हैं। एक पूर्ण चक्र को 360 डिग्री कहते हैं मगर क्या तुमने सोचा है कि एक चक्र को 360 इकाइयों में ही क्यों बांटते हैं? कोण को मापने का यह तरीका आख़िर ईजाद कैसे हुआ होगा? और जिसने भी इसे खोजा होगा क्या सोचकर ऐसा किया होगा? इसके पीछे की कहानी क्या है?

चलो, आज हम इन सवालों के जवाब ढूंढते हैं। मगर इतनी जल्दी नहीं, इसके लिए हमें करीब 4000 साल पीछे जाना होगा। चलो, हम कुछ तथ्यों और सुरागों की टाइममशीन में सवार होकर समय के पार एक रोमांचक यात्रा पर चलें।

इस यात्रा का पहला पड़ाव है मेसोपोटामिया जो आज इराक़ और सीरिया के नाम से जाना जाता है। यह एक ऐसा समय था जब सभ्यता अपने शुरूआती दौर में थी। आज जैसी न तकनोलॉजी थी और न ही ज्ञान–विज्ञान आज जैसा उन्नत था। लेकिन लोग पत्थरों पर खूबसूरत नक्क़ाशी करना जानते थे। साथ ही आसमानी दुनिया के बारे में भी उन्हें बहुत कुछ पता था।

उस समय तक लोग गिनती के साथ–साथ कुछ ज्यामिति भी समझने लगे थे। उन्होंने गणित को तारों, ग्रहों, सूर्य और चन्द्रमा की गतिकी पर लागू करना शुरू किया। मेसोपोटामिया के लोगों ने यह ग़ौर किया कि चाँद हर 15 दिन बाद पूरी तरह ग़ायब हो जाता है और फिर अगले 15 दिन बाद छोटे टुकड़े से बड़े होते हुए पूरे गोले में बदल जाता है। यानी कि चाँद के पूरा दिखने और फिर दोबारा पूरा दिखने के बीच कुल 30 दिन का फ़र्क होता है। हम लोग इसे पूर्णिमा और अमावस्या कहते हैं। ऐसा कह सकते हैं कि चाँद के दिखने का एक चक्र 30 दिन में पूरा हो जाता है। यहीं से महीने की संकल्पना शुरू होती है।

मेसोपटामिया के लोग कई सालों से ग्रहों और नक्षत्रों की गति को भी देख रहे थे, उसे अनुभव कर रहे थे। आज के समय भोर में सबसे चमकीला दिखने वाला ग्रह जिसे हम शुक्र के नाम से जानते हैं, तब मेसोपटामिया के लोग उसे देवता मानते थे और उसे 'निंसियाना देवता' के नाम से बुलाते थे।

लोग तब यह बात समझ चुके थे कि शुक्र ग्रह समेत तमाम नक्षत्र हर दिन आसमान के अलग–अलग हिस्से में दिखते हैं। लेकिन उनका आगे का अवलोकन तो अब हमें चौंकाने वाला है। उन्होंने देखा कि ज्यादातर नक्षत्र और ग्रह किसी बड़े से वृत्त पर ही गतिमान रहते हैं। हर नक्षत्र का अपना एक वृत्त है जिस पर वह गतिमान है। इसके साथ ही दिन में सूरज जिस रास्ते का इस्तेमाल करता है हर दिन नक्षत्र की स्थिति उस रास्ते पर अलग–अलग होती है। लेकिन चूँकि नक्षत्र किसी ख़ास वृत्त पर घूम रहे होते हैं, इसलिए कुछ समय बाद उन्हें उसी जगह पर वापस आना होता है जहाँ से वे पहले गुज़रे थे। इसका अर्थ यह हुआ कि नक्षत्र के एक चक्र के बाद सूर्य के रास्ते पर आने वाले नक्षत्र की स्थिति हूबहू एक जैसी होगी। और ताज्जुब की बात यह कि यह चक्र हर बार एक ही समय अन्तराल के बाद आ रहा है।

जब लोगों ने इसकी गणना की तो लोगों ने देखा कि यह समय अन्तराल ठीक–ठीक चाँद के 12 पूर्ण चक्र के बराबर है। और जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, चाँद का एक चक्र 30 दिन में पूरा होता है, मतलब कि 12 चक्र 12×30 = 360 दिन में पूरे होते हैं। अब मजेदार बात यह थी कि यह चक्र तो मौसम के चक्र के ठीक बराबर आ रहा है। मौसम का चक्र अर्थात् ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु और फिर शीत ऋतु। उसके बाद फिर पुनः ग्रीष्म ऋतु यानी कि इस चक्र में भी 360 दिन ही लगते हैं।

इसके बाद लोगों ने इसे 1 साल का नाम दिया। जिस तरह एक साल में चाँद के 12 चक्र यानी कि 12 महीने पूरे होते हैं, ठीक उसी तरह एक दिन और एक रात को लोगों ने बारह–बारह बराबर हिस्सों में बाँटा। यही समय की इकाई बनी। और आज भी हम इसी इकाई *शेष पृष्ठ 29 पर*

ठाकुर का कुआँ

मुंशी प्रेमचंद

जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो पानी से सख्त बदबू आयी। गंगी से बोला-यह कैसा पानी है? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी पिलाये देती है!

गंगी प्रतिदिन शाम पानी भर लाया करती थी। कुआँ दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लायी, तो उसमें बू बिलकुल न थी, आज पानी में बदबू कैसी! लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। जरुर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से?

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा ? दूर से लोग डाँट बतायेंगे। साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है, परंतु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? कोई तीसरा कुआँ गाँव में है नहीं।

जोखू कई दिन से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला-अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूँ ।

गंगी ने पानी न दिया। खराब पानी से बीमारी बढ़ जायगी इतना जानती थी, परंतु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती हैं। बोली-यह पानी कैसे पियोगे? न जाने कौन जानवर मरा है। कुएँ से मैं दूसरा पानी लाये देती हूँ।

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा-पानी कहाँ से लायेगी ?

ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?

'हाथ-पाँव तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा । बैठ चुपके से। ब्रह्म-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेगें, साहूजी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते है, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे ?'

इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती, किन्तु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया ।

रात के नौ बजे थे। थके-माँदे मजदूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाजे पर दस-पाँच बेफिक्रे जमा थे। मैदानी बहादुरी का तो अब न जमाना रहा है, न मौका। कानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत दी और साफ निकल गये।कितनी अक्लमंदी से एक मार्के के मुकदमे की नकल ले आये। नाजिर और मोहतमिम, सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती। कोई पचास माँगता, कोई सौ। यहाँ बेपैसे- कौड़ी नकल उड़ा दी । काम करने ढंग चाहिए ।

इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुँची।

कुप्पी की धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी। गंगी जगत की आड़ में बैठी मौके का इंतजार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसी के लिए रोका नहीं, सिर्फ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा- हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं ? यहाँ तो जितने है, एक- से-एक छँटे हैं। चोरी ये करें, जाल-फरेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिये की भेड़ चुरा ली थी और बाद मे मारकर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते है। काम करा लेते हैं, मजदूरी देते नानी मरती है । किस-किस बात में हमसे ऊँचे हैं, हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे है, हम ऊँचे । कभी गाँव में आ जाती हूँ, तो रस-भरी आँख से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं!

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक-धक करने लगी। कहीं देख लें तो गजब हो जाय। एक लात भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये मे जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर ! बेचारे महँगू को इतना मारा कि महीनो लहू थूकता रहा। इसीलिए तो कि उसने बेगार न दी थी । इस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं ?

कुएँ पर स्त्रियाँ पानी भरने आयी थी। इनमें बात हो रही थी ।

'खाना खाने चले और हुक्म हुआ कि ताजा पानी भर

लाओ। घड़े के लिए पैसे नहीं हैं।'

'हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है ।'

'हाँ, यह तो न हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते। बस, हुकुम चला दिया कि ताजा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियाँ ही तो हैं।'

'लौडिंयाँ नहीं तो और क्या हो तुम? रोटी-कपड़ा नहीं पातीं ? दस-पाँच रुपये भी छीन-झपटकर ले ही लेती हो। और लौडियाँ कैसी होती हैं!'

'मत लजाओ, दीदी! छिन-भर आराम करने को जी तरसकर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती, तो इससे कहीं आराम से रहती। ऊपर से वह एहसान मानता ! यहाँ काम करते- करते मर जाओ; पर किसी का मुँह ही सीधा नहीं होता ।'

दोनों पानी भरकर चली गयीं, तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ की जगत के पास आयी। बेफिक्रे चले गऐ थे । ठाकुर भी दरवाजा बंद कर अंदर आँगन में सोने जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ हुआ। अमृत चुरा लाने के लिए जो राजकुमार किसी जमाने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-बूझकर न गया हो। गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था।

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला । दायें-बायें चौकन्नी दृष्टि से देखा जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सुराख कर रहा हो। अगर इस समय वह पकड़ ली गयी, तो फिर उसके लिए माफी या रियायत की रत्ती-भर उम्मीद नहीं । अंत मे देवताओं को याद करके उसने कलेजा मजबूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया ।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता । जरा भी आवाज न हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे ।घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा शहजोर पहलवान भी इतनी तेजी से न खींच सकता था।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाजा खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गयी। रस्सी के साथ घड़ा धड़ाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हिलकोरे की आवाजें सुनाई देती रहीं ।

ठाकुर कौन है, कौन है ? पुकारते हुए कुएँ की तरफ आ रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी ।

घर पहुँचकर देखा कि जोखू लोटा मुँह से लगाये वही मैला-गंदा पानी पी रहा है।

पृष्ठ 27 का शेष का इस्तेमाल करते हैं। एक दिन और एक रात मिलाकर कुल 24 घण्टे।

अब तुम सोच रहे होगे हम तो कोण की इकाई को समझने की यात्रा पर निकले थे पर यहाँ तो अभी तक उसका ज़िक्र भी नहीं आया है। पर कोण को समझने के लिए मेसोपोटामिया के लोगों की प्रकृति की समझ को समझना बहुत ज़रूरी है। उस समय तक मेसोपोटामिया के लोग इस बात को अच्छी तरह समझ चुके थे कि प्रकृति की गति में घटनाएँ चक्रीय तरीके से होती हैं। चाँद, तारों, ग्रहों, सूर्य और मौसम की चक्रीय गति सदियों से उनके जीवन का हिस्सा थी। जब वे ज्यामिति में वृत्त बना रहे थे, तब तक चक्का लोगों की जीवनशैली का हिस्सा बन चुका था।

संख्याओं और अंकों के साथ ज्यामिति का तालमेल और कुछ नहीं प्रकृति और इसी भौतिक जगत का प्रतिबिम्ब था। यही कारण था कि लोग एक पूर्ण चक्र को 360 इकाई के बराबर मानने लगे। एक चक्र 1 साल को दर्शाता था जबकि उसका 360वाँ हिस्सा 1 दिन को दिखाता था। आगे चलकर वृत्त का मापक 360 डिग्री ही बन गया। एक अर्धवृत्त का अर्थ था 180 डिग्री जो कि एक सीधी रेखा का सूचक बना। जब यह सीधी रेखा क्षैतिज हो और उस पर एक खड़ी रेखा खींची जाये तो उसे लम्ब कहते हैं। लम्ब एक क्षैतिज रेखा को दो बराबर हिस्से में बाँटती है। इसलिए एक लम्ब का मतलब 180/2 = 90 डिग्री होगा।

इसका इस्तेमाल लोग स्तम्भ बनाने में करते थे। इस तरह यह कोण मापने की इकाई बना। यूरोप के लोगों ने एक वृत्त के इस 360वें हिस्से को 1 डिग्री नाम दिया। डिग्री शब्द लैटिन के दो शब्दों से मिलकर बना है de+gradus। De का अर्थ है down और gradus का अर्थ है step। इस तरह हम देख सकते हैं कि ज्यामिति की शुरूआत जहाँ से होती है वहाँ तक पहुँचने के लिए भी इतिहास में लोगों को सैंकड़ो साल लग गये।

(स्रोत : 'कोंपल' अक्तूबर-दिसम्बर 2022)

कवितायें

अभी तो सिर्फ

-वीरेंदर भाटिया

धर्म ग्रंथों को
आँखों चूमते
विद्वान ने कहा
जो कहा जा सकता था
कहा जा चुका
जो लिखा जा सकता था
लिखा जा चुका
अब शेष नहीं है कहने-लिखने को
अब सिर्फ शब्द विलास है।
स्त्री ने पीछे से आवाज लगाई
रुकिए महाप्रभु
जल्दी मत करिये
अभी बहुत कुछ कहा जाना बाकी है
अभी स्त्री ने
अपनी बात तो की ही नहीं।
दलित ने कहा
रुकिए विद्वान श्री
अभी दलित का पक्ष तो सुना ही नहीं आपने
अभी उत्पीड़न द्वेष और हेय हो जाने का हमारा अनुभव
लिखा कहाँ गया है।
पीड़ित ने आवाज लगाई
अभी पीड़ा का लिखा जाना बाकी है महोदय
अभी आवाज की गर्जना लिखी नहीं गई है
अभी तो सिर्फ याचनाएं लिखी गयी हैं!!

इतिहास की सबसे बड़ी चोरी

-जया सारसर

वो लोग तुम्हें डराते रहेंगे
वो लोग तुम्हें धमकाते रहेंगे
भटकाने आएंगे तुम्हें मुद्दों से
सिखाएंगे स्त्री होने का मतलब।
तुम्हारी जिम्मेदारी केवल ससुराल है
तुम्हें सिखाएंगे औरत होना
केवल चुप रहना है
बताएंगे तुम पुरुषों की
बराबरी नहीं कर सकती
तुम्हारी बराबरी करेंगे उनसे
जो चुप रहती हैं।
तुम्हें बेइज्जत किया जाएगा सबके सामने
तुम्हारा मनोबल तोड़ा जाएगा सबके सामने
अलग कर दिया जाएगा उस भीड़ से
जो तुम्हारे साथ खड़ी थी
बताई जाएंगी समाज की परंपराएं और मर्यादाएं
जो तुम्हारे लिए बनाई गई हैं।
मगर मेरी जान तुम डटी रहना
तुम वहीं खड़ी रहना
उनकी कोशिशों को नाकाम करने के लिए
लड़ती रहना अपने हकों के लिए
क्योंकि वे डरते हैं तुमसे,
तुम्हारी एकता से
तुम्हारी बग़ावत भरी निगाहों से!
वे चाहते हैं तुम्हें
उन्हीं सदियों पुरानी
बेड़ियों में रखना
क्योंकि उनको खतरा है तुमसे।
तुम्हारी बराबरी से
क्योंकि वे जानते हैं कि
जिस दिन औरतें
अपना हिसाब मांगेंगी
समाज का पूरा ढांचा हिल जाएगा
इतिहास की सबसे बड़ी चोरी पकड़ी जाएगी।

हरियाणवी रचना

मजहब तैं घणी काम्मल चीज, भाई संस्कृति होवै सै।
संस्कृति प्यार बणावै, मजहब तो नफरत के बीज बोवै सै।
मजहब तो लोग्गां नै बांडै, संस्कृति मेल करावै सै।
खान-पान अर रहण-सहण, दूर तैं पिछाणा जावै सै।
मजहब नै भाई बैरी बणाए, माँ-बोली नै फेर मिलाए सैं।
पाकिस्तान म्ह बैठे हरियाणवी, हामने फेर याद आए सैं।
मजहब की जगहां देश की बुनियाद, संस्कृति नै बणाओ रै।
बांग्लादेश, नेपाल, भूटान पै भाइयो, थोड़ा गौर फरमाओ रै।
झटके-हलाल, गां-सूअर के, रोल्यां तैं जान छुड़ा ल्यो थाम।
तहजीब की सुतली म्ह जुड़ कै, भाइयां नै गल लगा ल्यो थाम।

- मनोज मलिक ह्यूमनिस्ट

(पाकिस्तान के हरियाणवी मित्रों और कवि राव जाहिद वारसी और राणा वकील अंजुम से प्रेरित और समर्पित)

जियोर्दानो ब्रूनो (Giordano Bruno)

डा. राहुल

उनका नाम विज्ञान के शहीदों में सबसे ऊपर शुमार होता है। उन्होंने लगभग 08 साल जेल में बिताये और उन्हें इतना प्रताड़ित किया गया कि सन 1600 की 17 फ़रवरी को वे इस दुनिया को अलविदा कह गए। उनका कुसूर इतना सा था कि इटली के धर्मांध लोगों से ठसाठस भरे चर्च के सामने खगोल वैज्ञानिक निकोलस कोपरनिकस के विचार ''ब्रह्माण्ड का केंद्र पृथ्वी नहीं, सूर्य है'' का समर्थन करते हुए वे तर्कशीलता को ताबानी दे रहे थे। उन्होंने कहा था कि ''आकाश सिर्फ उतना नहीं है, जितना हमें दिखाई देता है। वह अनंत है और उसमें असंख्य विश्व हैं।'' उनका कुसूर ये भी था कि वे लोकतांत्रिक थे और यह मानते थे कि ''धर्म वह है, जिसमें सभी धर्मों के अनुयायी आपस में एक-दूसरे के धर्म के बारे में खुलकर बहस और बातचीत कर सकें।'' उनकी ख़ता यह भी थी कि वे बाइबिल के ख़िलाफ़ और सत्य के पक्ष में जाते हुए यह बोले थे कि ''धरती ही नहीं, सूर्य भी अपने अक्ष पर घूमता है।'' इस प्रकार वे एक ऐसे दार्शनिक ठहरे जो एक पृथ्वी-केन्द्रित ब्रह्मांड के चर्च की शिक्षाओं के विपरीत, एक हेलीओसेंट्रिक (सूर्य-केन्द्रित) ब्रह्मांड के कोपरनिकस विचार का झंडा उठा के चल पड़े थे।

दरअसल धर्मांध और कुतर्की तबका उनसे आरम्भ से ही इसलिए चिढ़ता था क्योंकि उन्होंने अपने जीवन के आरंभिक वर्षों से ही ईसा मसीह को दिव्य मानने से इनकार कर दिया था। ''इन्फिनिटी, द यूनिवर्स एंड द वर्ल्ड'' शीर्षक वाली अपनी किताब में उन्होंने कैसी ऐतिहासिक बात लिखी थी कि ''धर्म अज्ञानी लोगों को निर्देश देने और शासन करने का एक साधन है'' और ये बात वर्तमान सन्दर्भों में कितनी सत्य और प्रासंगिक है इसको बताने की आवश्यकता नहीं। उनकी इन्हीं सब वैचारिक स्थापनाओं से घबरा कर चर्च की ओर से उनको विधर्मी घोषित कर दिया गया और जला कर मार देने का फ़रमान सुनाया गया जिसको विवेकहीन और तर्करिक्त भीड़ ने पूरा भी कर दिया।

उनका यह मानना आज सभी धर्मों और उनके ग्रंथों के सन्दर्भ में कितना महत्व रखता है कि ''बाइबिल की बातें नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण हो सकती हैं न कि इसमें वर्णित खगोलीय अनुमानों को वैधता प्रदान करने में।'' ब्रूनो की हत्या को चार सदियों से भी अधिक का समय गुज़र जाने की बाद भी हम अपने देश में भी इस तार्किक अंतर को पहचानने में समझ का अभाव देखते हैं। आज तो विज्ञान कांग्रेस से लेकर सोशल मीडिया और सड़कों तक पर ऐसे बौद्धिक बौनों की जमात पसर गई है जो धर्मग्रंथों की कपोल कल्पनाओं पर इतराते हुए नहीं थकती और लोगों को अपने बीते कल पर खोखला अभिमान करते रहने को उकसाती है। यह कितना विरोधाभासी है कि लोग विज्ञान और तकनीक के माध्यम से उपजे साधनों जैसे मोबाइल, इन्टरनेट, टेलीविज़न, इत्यादि का सहारा लेकर घोर अवैज्ञानिक बातों को धड़ल्ले से प्रचारित करते रहते हैं। आज हमारे सामने एक विचित्र सी स्थिति है कि एक ओर विज्ञान और तकनीक जितनी तेज़ी से आगे बढ़ते दिखाई देते हैं उससे अधिक तेज़ी से लोगों के दिमाग़ों में अँधेरे भरे जाते हैं और वैज्ञानिक नज़रिए को न पनपने देने की साजिशें तेज़ होती हैं। तब यह सवाल लाज़िमी है कि विज्ञान पर किसका क़ब्ज़ा है और तकनीक किसके हित साधने के लिए विकसित की जा रही हैं ?

चंद्रयान की रेप्लिका को तिरुपति के मंदिर में चढ़ाने वाले, रफ़ाल विमान के पहियों के नीचे नींबू रखने वाले, कटे सर के स्थान पर हाथी के सर लगाने को प्राचीन शल्य क्रिया विज्ञान की उच्चतम उपलब्धि बताने वाले, ज्योतिष की महिमा बखान कर विज्ञान को ओछा बताते हुए लोगों के मन में अँधेरे उंडेलने वाले कोई और नहीं बल्कि बदले हुए वेश में ब्रूनो के ही क़ातिल हैं पर याद रखिये ब्रूनो मरते नहीं हैं वो हर तर्कशील और मानवतावादी इंसान में ज़िंदा रहते हैं। आइये विज्ञान के इस अनोखे शहीद ब्रूनो की याद में तर्कशीलता के पक्ष में और वैज्ञानिक नज़रिए की स्थापना के लिए मशाल ऊंची करें ।

जंत्र तंत्र मंत्र; आलोचनाओं और आपत्तियों के उत्तर

– अनंतराम दुबे 'प्रभात'

''जंत्र तंत्र मंत्र'' लेख प्रकाशित हुआ, उस पर पाठकों की प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ शंकाओं के पत्र प्राप्त हुए। शंकाओं के पत्र प्राय: ऐसे व्यक्तियों के ही प्रतीत होते हैं जो अत्यधिक विश्वासी प्रकृति के हैं या जो हर चमत्कार को देख कर नमस्कार करने लगते हैं और जानने का प्रयत्न नहीं करते कि कहीं चमत्कार के नाम पर कोई हाथ की सफाई, ट्रिक या धोखाधड़ी तो नहीं है।

मैंने लिखा था कि चमत्कारों को देख कर विश्वास करने की बजाय फौरन शंका करनी चाहिए और और इस कथित चमत्कार के पीछे छिपे राज या रहस्य को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सदा के लिए गांठ बांध लेनी चाहिए कि प्रकृति के विरुद्ध कोई कार्य नहीं हो सकता। आम के वृक्ष में आम ही पैदा होगा, खरबूजा नहीं, प्रसव स्त्री को ही होगा, पुरुष को नहीं। आग से वस्तुएं जलेंगी ही और पानी में वज़नदार चीज डूबेगी ही।

लेकिन जब कोई व्यक्ति इन प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध कोई चमत्कार कर के दिखाता है तो निश्चित रूप से उस के पीछे कोई हाथ की सफाई, ट्रिक या तरकीब जरूर ही रहती है।

आप ने देखा होगा कि बाजीगर या जादूगर तरह-तरह के करिश्मे आप के सामने दिखाता है। आप के देखते हुए ही वह रद्दी के कागज के टुकड़े को चुटकी में मसल कर पांच या दस रुपए का करंसी नोट बना देता है, पीले रंग को हरे में या किसी अन्य रंग में बदल देता है, खाली दिखने वाली बालटी से कई लोटे भर कर पानी निकाल देता है, लड़की को आरे से काट कर दिखाता है, किसी के कान या मुंह में डब्बा लगा कर पैसे गिरा लेता है, ताश के समझ में न आने वाले कई खेल दिखाता है आदि।

वह सैंकड़ों ऐसे करतब दिखाता है जो सब की समझ में नहीं आते। वह स्वयं बताता है कि ये सब करिश्मे हाथ की सफाई मात्र है। जादू है ही वह, जो समझ में न आए। समझ में आने पर वह जादू या चमत्कार नहीं रह जाता। वह ट्रिक हो जाता है। वैसे हर व्यक्ति के लिए हर खेल का राज समझ पाना संभव नहीं है। मैं भी कभी कभी कुछ क्षणों के लिए चकित रह जाता हूं। मैं ही क्या, भारत के प्रसिद्ध जादूगर श्री सरकार की रोपट्रिक अभी भी दुनिया के जादूगरों के लिए रहस्य बनी हुई है।

श्री सरकार मैदान में खड़े हो कर रस्से का एक छोर ऊपर उछालते हैं और वह रस्सा सीधा ऊपर उठता जाता है यानी बिना किसी आधार के रस्सा सीधा खड़ा हो जाता है। बाद में एक लड़का उस रस्से पर चढ़ जाता है और उसके अंग-अंग कट कर ऊपर से जमीन पर गिरते हैं, जिन्हें जोड़ कर जादूगर चादर ढंक देता है। कुछ देर बाद जब वह चादर को झटकार देता है और जमूरे (लड़के) को बुलाता है तो जमूरा रस्से से नीचे उतरता दिखाई पड़ता है।

यह खेल आज भी दुनिया के जादूगरों के लिए रहस्य बना हुआ है, जब कि श्री सरकार खुद यह कह चुके हैं कि यह ट्रिक है। पर यह ट्रिक वह किसी को नहीं बताते। उनका कहना है कि बता देने में इस अचंभे का आकर्षण समाप्त हो जाएगा।

तात्पर्य यह है कि जादूगर भी जब दूसरे जादूगर के नए खेल को देख कर चक्कर में पड़ जाते हैं, तब साधारण व्यक्तियों का चक्कर में पड़ जाना आश्चर्य की बात नहीं, अत: इन खेलों को अपनी आंखों से देखने पर भी सच नहीं मानना चाहिए, यह नहीं माना जा सकता कि कागज़ के रद्दी टुकड़े से दस या पांच रुपए का नोट बनाया जा सकता है या कान, नाक, मुंह से रुपए गिरवाए जा सकते हैं। ऐसा होता तो दो-चार पैसों यानी अपनी रोजी के लिए बाजीगर मजमा नहीं जमाते और घर बैठे करेंसी नोट या रुपए जादू द्वारा बना लेते।

सड़कों पर बैठने वाला मदारी आम की गुठली मिट्टी में दबाता है, कुछ उस में पानी सींचता है और पांच मिनट बाद ही टहनी दिखा देता है, और दस मिनट बाद उस में आम के फल उग जाते हैं, ये बातें वह मदारी सैंकड़ों व्यक्तियों की उपस्थिति में दिखाता है, लेकिन यह करिश्मा देखने के बाद यह नहीं माना जाना चाहिए कि आम की गुठली लगाने के दस मिनट के भीतर ही उस में फल लग जाते हैं।

कुछ जादूगर मंच पर खड़े होकर आग से खेलते हैं और मुंह में आग का गोला भी रख लेते हैं। वे आग पर

चलते हैं, आग में हाथ घुसेड़ देते हैं और उन को कुछ नहीं होता। ये सारे खेल हम अपनी आंखों से देखते हैं, लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि आग में जलाने की ताकत समाप्त हो गई है। इन खेलों का मतलब यही है कि वह व्यक्ति ऐसे रसायनों का प्रयोग करता है जो उस के चमड़े की हिफाजत करते हैं। ब्लेड चबाना, कांच चबाना आदि खेल विशिष्ट रसायनों की सहायता से ही दिखाए जाते हैं।

कुछ जादूगर मंच पर खड़े हो कर आग से खेलते हैं और मुंह में आग का गोला भी रख लेते हैं। वे आग पर चलते हैं, आग में हाथ घुसेड़ देते हैं और उन को कुछ नहीं होता। ये सारे खेल हम अपनी आंखों से देखते हैं, लेकिन इस का यह मतलब तो नहीं कि आग में जलाने की ताकत समाप्त हो गई है। इन खेलों का मतलब यही है कि वह व्यक्ति ऐसे रसायनों का प्रयोग करता है जो उस के चमड़े की हिफाजत करते हैं। ब्लेड चबाना, कांच चबाना आदि खेल विशिष्ट रसायनों की सहायता से ही दिखाए जाते हैं।

जादू के समस्त खेल हाथ की सफाई और ट्रिक्स पर आधारित हैं, मंत्र तंत्र से उन का कोई संबंध नहीं। वैसे जादूगर दर्शकों पर प्रभाव डालने के लिए कुछ बोलते रहते हैं और हाथ चलाते हैं। साथ ही वे यह भी बताते जाते हैं कि यह सब हाथ की सफाई है। अब तो जादूगर इन खेलों की शिक्षा भी देने लगे हैं। पहले इन खेलों के राज को अध्यधिक गुप्त रखा जाता था। गुरुशिष्य परंपरा के अनुसार ही शिक्षा दी जाती थी, लेकिन आज तो जो चाहे, इन खेलों को सीख सकता है।

कहने का तात्पर्य यही है कि किसी करिश्मे पर केवल इसलिए विश्वास मत कर लीजिए क्योंकि उसे आप ने अपनी आंखों से देखा है। आंखों से देखी गई सारी बातें सही नहीं होतीं, आंखें भी धोखा खा जाती हैं, कोई अप्राकृतिक बात यदि आप की आंखें देखती हैं तो उस चमत्कार को नमस्कार करने के स्थान पर उस की ट्रिक जानने का प्रयत्न करना चाहिए।

मंत्रों में कोई शक्ति नहीं है। मेरे इस कथन पर पाठकों ने शंका प्रकट की है। लेकिन मैं पुन: दोहराता हूं कि मंत्रों में कोई शक्ति नहीं है। मारण, मोहन, उच्चाटन और वशीकरण इन सब मंत्रों को सिद्ध करने के लिए हम ने सैकड़ों पापड़ बेले हैं और अपने अनुभव के बल पर मैं यह कहने की स्थिति में हूं कि जंत्र मंत्र कोरी बकवास है। वशीकरण मंत्र पढ़ कर कोई किसी आदमी को तोता, बैल या बकरी नहीं बना सकता, जैसी कि तमाम कहानियां प्रचलित हैं।

वशीकरण मंत्र सिद्धि का दावा करने वाले से कहिए कि किसी राहगीर को मंत्र पढ़ कर अपने पीछे चलने के लिए विवश कर के दिखाए या कुत्ते को तोता या और कुछ बना कर दिखाए। मारण मंत्र का प्रयोग करने का दावा करने वाले से कहिए कि एक मुरगी को मंत्र पढ़ कर मार दिखाए। मंत्र पढ़ कर कोई चीज फेंकने का दावा बिलकुल थोथा है और उस से संबंधित कहानियां सफेद झूठ।

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष कामराज ने चैलेंज किया था कि यदि कोई मंत्र द्वारा वर्षा करा देगा तो उसे मंत्री बना दिया जाएगा। देश में कोई ऐसा तांत्रिक मांत्रिक न निकला जो उनका चैलेंज स्वीकार कर के मंत्रपाठ द्वारा वर्षा कर के दिखा देता। मंत्र से न वर्षा कराई जा सकती है और न ही शत्रु सेना पराजित की जा सकती है।

कामराज की चुनौती किसी ने स्वीकार नहीं की, यह बात भी इसका प्रमाण ही है कि मंत्र में कोई शक्ति नहीं है। मंत्र का चमत्कार मुख्य रूप से भूतप्रेत को भगाने, सांप बिच्छू या कुत्ता काटने या पीलिया जैसी कुछ बीमारियों को दूर करने में दिखाया जाता है।

नई दिल्ली के एक नागरिक झा ने अपने पत्र में मंत्र की शक्ति या आंखों देखा अनुभव बताते हुए लिखा है कि उन्होंने मंत्र प्रयोग द्वारा एक सर्प दंशित व्यक्ति को अच्छा होते हुए देखा है।

लेकिन उन्होंने एक ही व्यक्ति को अच्छा होते हुए देखा है, मैंने तो सैकड़ों व्यक्तियों को झाड़ाफूंकी के कारण मरते हुए भी देखा है। कुछ व्यक्तियों को अच्छा होते हुए भी देखा है, लेकिन अच्छा होना मंत्र शक्ति का प्रभाव नहीं है। मंत्र शक्ति के कारण सर्पदंशित आदमी अच्छा नहीं होता। वह विष के अल्पप्रभावी होने के कारण कुछ समय बाद स्वत: ही अच्छा हो जाता है। लेकिन श्रेय मंत्रपाठ को मिल जाता है। इस चमत्कार की वास्तविकता को समझने के लिए थोड़े विस्तार से विचार करना होगा।

अधिकांश कुत्ते जहरीले नहीं होते। साधारण पालतू कुत्तों में शायद ही एक या दो प्रतिशत जहरीले हों। जो कुत्ते पागल हो जाते हैं उनके द्वारा काटना जरूर प्राणघातक हो सकता है। उन्हें कोई झाड़ाफूंकी नहीं बचा सकती, इंजेक्शनों का पूरा कोर्स ही उन की प्राणरक्षा कर सकता है। झाड़फूंक

करने वाले खुद ऐसे मामलों में इंजेक्शन लगवाने की सलाह देते हैं।

एक ओर इंजेक्शन लगते हैं जो उसका वास्तविक इलाज है और दूसरी ओर झाड़ाफूंकी भी चलती है। अच्छा होता है इंजेक्शन से और गुण गाए जाते हैं मंत्रपाठ के, जब काटने वाला कुत्ता जहरीला नहीं था तो श्वानदंशित व्यक्ति स्वत: ही अच्छा हो जाएगा, लेकिन ऐसे मामलों में की गई झाड़ाफूंकी को ही श्रेय दे दिया जाता है।

लोग पीलिया का इलाज कराते हैं–गन्ने का रस और मूली का रस पीते हैं, जो उस रोग का मुख्य पथ्य है, लेकिन इलाज कराने के साथ झाड़फूंक के भी पीलिया के सैकड़ों मरीज अच्छे हो जाते हैं। कुत्ता काटने पर भी सैकड़ों व्यक्ति बिना उपचार या झाड़फूंक के अच्छे बने रहते हैं। ये केस यही सिद्ध करते हैं कि बिना मंत्रपाठ के भी ये अच्छे हो सकते हैं। मंत्रपाठ से अच्छे होने का दावा करने वाले केस वस्तुत: इसी श्रेणी के रहते हैं।

सर्प के जहर को झाड़फूक द्वारा उतारने की भी यही स्थिति है। तीव्रप्रभावी जहर वाले सर्प एक तो होते ही कम हैं, पांच प्रतिशत मात्र ही है, वे भी निर्जनों और जंगलों में। आबादी वाले क्षेत्रों में तो वे प्राय: होते ही नहीं, जो अल्पप्रभावी विष वाले सर्प काटते हैं, उन का जरूर कुछ प्रभाव पड़ता है। मुंह से फेन आता है, शरीर ऐंठता है। लेकिन यह प्रभाव कुछ समय ही रहता है। कुछ घंटों बाद यह प्रभाव अपने आप ही समाप्त हो जाता है।

वैसे यह सही है कि कुछ घंटों तक तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि मरीज मर गया, लेकिन अल्पप्रभावी विष वाले सर्प के काटने पर इलाज न भी हो तो भी वह कुछ घंटों पीड़ित रह कर स्वत: ही ठीक हो जाएगा। जब सर्प काटता है तो किसी को नहीं मालूम रहता कि वह कितना जहरीला है। सर्प का नाम तो खतरनाक है। सर्प ने डस लिया, यह कहना ही प्राणघातक खबर मानी जाती है। कई कमजोर दिल वाले मरीज तो डर के मारे ही मर जाते हैं। क्योंकि सामान्यत: सब के मस्तिष्क में यह बात जमी हुई है कि सांप के काटने से आदमी मर जाता है।

क्योंकि किसी को यह ज्ञात नहीं रहता कि किस श्रेणी के सर्प ने काटा है और उस का क्या प्रभाव या परिणाम होगा, अत: शीघ्र की झाड़फूंक करा ली जाती है। यदि सर्प अल्पप्रभावी विष वाला या बिना जहर वाला रहा तो झाड़ाफूंकी को उसके स्वस्थ होने का श्रेय मिल जाता है। 100 में से 95 सर्पदंश के केस निर्विष या अल्पविष के ही होते हैं, जो प्राणघातक नहीं होते।

यदि मंत्रपाठ में जहर दूर करने की शक्ति होती तो एक भी सर्पदंशित व्यक्ति मंत्रपाठ के बाद मरता नहीं, जब कि हर साल हजारों व्यक्ति मंत्रपाठ की वेदी पर अपने अंधविश्वास के कारण बलि चढ़ रहे हैं। सैकड़ों व्यक्ति मर जाते हैं और झाड़फूंक करने वाला यह कह कर साफ बच जाता है, ''बहुत देर कर दी आप ने, या जहर काफी चढ़ गया था, या नागदेवता बहुत ही अप्रसन्न हैं।''

मंत्र द्वारा सांप बुलवा कर जहर चुसवाने की बात भी बहुत गलत है। कुछेक सांप पकड़ने वाले ऐसे चतुर जरूर हैं कि वे पालतू सर्प को बीन के इशारे से बुला लेते हैं। बीन बजा कर सांप को दूध दे कर प्रशिक्षित किया जाता है। रोज बीन बजाओ और फिर सांप को दूध दो। कुछ दिनों में सर्प को यह अभ्यास हो जाएगा कि बीन बजने पर दूध मिलता है, और इसी लालच में बीन बजने पर वह सपेरे के पास आ जाता है।

ऐसे चतुर सपेरे जरूर झाड़ाफूंकी के समय अपना पालतू सर्प बुला कर चमत्कृत करते हैं। आप ने शायद देखा हो, कुछ सपेरे घरों में सांप छोड़ देते हैं और थोड़ी देर में घूमते फिरते आ कर घर वालों से कहते हैं कि आप के घर में सर्प है, लाओ उसे निकाल दें? फिर अपने पालतू सर्प को निकाल कर दो–चार रुपए ऐंठ कर चल देते हैं।

तात्पर्य यह है, जिन सर्पदंश के केसों को मंत्रपाठ द्वारा अच्छा होना समझा जाता है, दरअसल वे मामले प्राणघातक विष वाले नहीं होते, और जब प्राणघातक विष ही नहीं तो मंत्रपाठ द्वारा अच्छा होने का प्रश्न ही नहीं, सब से अच्छी बात यह है कि सर्पदंश होने पर उस का उपचार कराया जाए। दवाइयों में विष प्रतिरोधक शक्ति होती है, वे मरीज की प्राणरक्षा कर सकती हैं।

मंत्र द्वारा सर्प के विष को निष्प्रभाव बनाया जा सकता है। जो ऐसा दावा करता है उसे आप चुनौती दीजिए कि हम एक कुत्ते को सांप के जहर का इंजेक्शन लगा देते हैं, वह मंत्र पढ़ कर उस की प्राण रक्षा कर के दिखाए? कुत्ते को तीव्र विष का इंजेक्शन लगा दीजिए और मांत्रिक को मंत्र पढ़ने के लिए बैठा दीजिए। आप देखेंगे कि कुत्ता कुछ देर में ही मर जाएगा और मंत्र पढ़ने वाला भागता नजर आएगा।

हुसैनगंज, लखनऊ के धूसिया ने भूतपिशाचों के अस्तित्व के संबंध में एक उदाहरण, वह भी आंखों देखा, पेश कर के मेरे लेख पर शंका प्रकट की है। आप का कहना है कि लखनऊ के एक मकान में अपने आप ही कपड़ों में आग लग जाती थी और कपड़ों तथा भोजन में मैला (टट्टीपाखाना) गिरता था।

यह कोई नया कांड नहीं है। इस प्रकार के कांड पहले भी कई स्थानों पर हो चुके हैं और उनका भंडाफोड़ हो चुका है। यह काम मृतआत्माओं का नहीं। जीवित आत्माओं का होता है। आग लगाने या मैला फैंकने की शरारत घर का ही कोई असंतुष्ट व्यक्ति करता है।

मैंने स्वयं एक ऐसे ही रहस्य का भेदन किया था, जिसमें उस घर का ही एक व्यक्ति दोषी पाया गया था। घर में तीन भाई, उन की पत्नियां और बच्चे रहते थे। मंझला भाई घर का बंटवारा चाहता था, जब कि दो भाई इसके लिए सहमत नहीं थे। अंत में मंझले भाई ने सोचा कि घर को भुतहा करार दे दिया जाए तो सब लोग घर छोड़ कर चल देंगे और इस तरह बाद में घर बेचना ही पड़ेगा। जब भी घर बिकेगा, उसको हिस्सा मिल जाएगा। इस उद्देश्य से वह ही घर में दिन को या रात को जब भी मौका मिलता कपड़ों में माचिस दिखा दिया करता था और जब मौका मिलता तो कपड़ों के संदूकों में, खाने के बरतनों या अनाज के पीपों में मैला डाल देता था।

कई मकान इसी प्रकार भुतहा बने पड़े हैं। उनको खाली रखाने या भुतहा करार देने या किसी को नुकसान पहुंचाने में किसी न किसी व्यक्ति का हाथ जरूर रहता है। ऐसे मामलों में गुप्तचरों की मदद लेनी चाहिए। कई ऐसे रसायन हैं जिन्हें कपड़ों पर छिड़कने से कपड़े जल जाएंगे। लेकिन ऐसे रसायन छिड़कने वाला आसपास ही होगा। मेरा धूसियाजी से निवेदन है कि वह इस मामले को चमत्कार न मान कर षड्यंत्र मानें और गुप्तचरों से सहायता लें। वह अवश्य ही यह पाएंगे कि सारी खुराफात का कारण कोई षड्यंत्र ही था।

विज्ञान की प्रगति और शिक्षा के विस्तार के साथ अपराधी भी वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करने लगे हैं। आप अकेले या किसी एक विश्वस्त व्यक्ति को ले कर उस घर में अचानक घुस जाइए? कोई घटना नहीं होगी। क्योंकि आग लगाने और मैला फेंकने वाले उस समय आपके साथ वहीं होंगे। वे लोग तो घर के सदस्य के नाते साथ हो लेते हैं और शरारत कर जाते हैं।

फास्फोरस अपने आप जल जाता है। कुछ रसायन एक दूसरे के साथ मिलाने पर भभक उठते हैं। इस प्रकार की प्रक्रिया के द्वारा क्या कपड़ों को भस्म कर देना संभव नहीं है? आप गुप्त रूप से इस की खोज कराइए। आप यही पाएंगे कि उक्त घटना किसी स्वार्थी व्यक्ति की शरारत मात्र है।

यद्यपि जादू के खेलों को सब नहीं पकड़ पाते और न ही उन को कर के दिखा सकते हैं। लेकिन हम उन्हें समझें या न समझें, कर के दिखा सकें या न दिखा सकें, इससे यह सत्य परिवर्तित नहीं होता कि जादू के खेल हाथ की सफाई (ट्रिक) मात्र हैं और अभ्यास का परिणाम हैं। हमेशा यह याद रखा जाए, भले ही हमें किसी कथित चमत्कार का रहस्य समझ न आए हकीकत यही रहेगी कि उस के पीछे कोई रहस्य है, राज है, प्रकृति विरुद्ध कार्य नहीं हो सकता और जो ऐसा कर के दिखाता है, किसी ट्रिक का इस्तेमाल करता है।

जंत्र मंत्र तंत्र और योगविद्या सब बकवास हैं, लोगों को भ्रमित कर के मूर्ख बना कर पैसा ऐंठने के साधन मात्र हैं। प्रबुद्ध पाठक जानते हैं, मुंबई के एक हठयोगी ने पानी पर चल कर दिखाने की घोषणा की थी। मुंबई के एक प्रगतिशील माने जाने वाले साप्ताहिक ने उस का खूब प्रचार किया। मंत्रियों तक ने शुभकामना संदेश भेज दिए। देश के ही नहीं, विदेश के भी दर्शक टिकट ले कर तमाशा देखने पहुंच गए– टिकट भी 300 से 500 रुपए तक का।

हठयोगी ने, जो पचीस वर्ष से योग साधना कर रहा था, जैसे ही पानी में पांव रखा वैसे ही वह डूब गया और अथाह पानी में समा गया। यह होना ही था क्योंकि प्रकृति के नियमानुसार पानी में उस की सघनता से ज्यादा वज़न की चीज़ क्योंकि डूब ही जाती है। योगीजी सोच रहे थे कि वे योग साधना द्वारा फूल के समान हलके हो जाएंगे और पानी पर उतराते रहेंगे, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। हठयोगी की पच्चीस वर्ष की साधना और विफलता इस बात की ज्वलंत प्रमाण है कि हठयोगी के चमत्कार बिलकुल बकवास हैं।

(स्त्रोत : पुस्तक ''तंत्र मंत्र यंत्र'', संपादकः राकेश नाथ)

जहाँ ईश्वर है वहाँ भय है
और जहाँ भय है वहाँ ईश्वर है। – **बेन जानसन**

समाधान

तीन दिन से गर्म हो रहा था आंगन: लोग समझ रहे थे दैवीय चमत्कार: तर्कशील सोसायटी ने किया समाधान:

परलीका: गांव में किसान बंशीलाल पुत्र जगराम नुइयां के घर तीन दिन से घर के आंगन का फर्श लगातार गर्म हो रहा था। घर के सदस्य असमंजस में पड़ गए। पूरे गांव के लिए घटना कोतूहल विषय बन गई। लोग अलग-अलग तरीके से अपनी राय दे रहे थे। कोई इसे दैवीय चमत्कार तो कोई अन्य कारण मान रहा था। घर वाले परेशान थे।

पांच गुना पांच वर्ग फुट का एरिया इतना गर्म हो गया कि पैर भी ज्यादा देर तक नहीं रख पाते। प्रतिदिन गर्मी बढ़ती जा रही थी। कारण समझ नहीं आने पर एस डी एम नोहर सत्यनारायण सुथार को भी सूचित किया और वैज्ञानिक तथ्यों की जांच करने वाली तर्कशील सोसायटी रामगढ़ के सदस्यों से संपर्क किया गया। तर्कशील सोसायटी के सदस्यों ने मौके का निरीक्षण किया और जहां ज्यादा गर्म था उस स्थान को कटर से कटवाकर टाइल को बाहर निकाला। विद्युत टेस्टर से चेक करने पर उसकी बत्ती जल गई। तर्कशील टीम ने कारण का खुलासा करते हुए बताया कि आर सी सी की छत में कोई सरिया विद्युत तार के संपर्क में है और उस सरिये का संबंध सीढ़ियों के सरिये से है। जमीन में नमी होने के कारण अर्थिंग व करंट की वजह से गर्मी उत्पन्न होने लगी। धीरे-धीरे अंदर की गर्मी सेरेमिक टाइल्स की वजह से बाहर नहीं निकल पाई और पूरी गर्मी बढ़ती गई। टाइल के टुकड़े को काटते ही पूरा फर्श 5 मिनट में ठंडा हो गया और इस प्रकार ग्रामीणों के लिए बने कुतूहल को तर्कशील सोसायटी ने वैज्ञानिक तरीके से पड़ताल कर समाप्त किया। तर्कशील टीम में शामिल राममूर्ति स्वामी व विकास कुमार निवासी रामगढ़ व विनोद स्वामी परलीका शामिल रहे। समिति के सदस्यों ने उपस्थित सभी ग्रामीणों को बताया कि चमत्कार होते नहीं है, दिखते हैं और उनके पीछे कोई ना कोई कारण होता है, उस कारण को जानना ही तर्कशीलता है। तर्कशील सोसायटी राजस्थान पिछले 25 वर्षों से घरों में पत्थर गिरना, आग लगना, कपड़े कटना, दौरे आना तथा कथित भूत-प्रेत की कसरों का वैज्ञानिक तरीके से निन्शुल्क समाधान करती है। जहां कहीं भी इस प्रकार की घटनाएं हो रही हों तो सोसाइटी से संपर्क करना चाहिए और किसी प्रकार के अंधविश्वास और वहम में नहीं पड़ना चाहिए।

पृष्ठ 1 का शेष नहीं, इससे पूर्व भी सैंकड़ों बुद्धिजीवी, पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्त्ता, राजनीतिक विरोधी, सार्वजनिक संगठनों के अगुवा समाज के हाशिए से बाहर धकेले गए लोगों की आवाज बनने पर इन भयानक कानूनों, जेलों, तशद्दों की मार झेल रहे हैं। क्या इस सभी कुछ के लिए गदरी बाबे फांसियों पर चढ़े थे? समाज को ऐसे हालातों में से वैज्ञानिक समझ ने निकालना होता है। इसीलिए हुकूमतें वैज्ञानिक सोच पर एक बहुत ही 'योजनाबद्ध' ढंग के साथ हमला कर रही हैं-हमारे पाठ्यक्रमों एवं इतिहास का भगवांकरण करके, सामाजिक बुराईयों के निवारण के लिए ग़ैरवैज्ञानिक आमन्त्रण दे कर, लोगों की धार्मिक आस्था को और अधिक बलवान करके, मंदिरों-मस्जिदों में उलझा कर सनातन संस्कृति की रक्षा को देश का एकमात्र 'मुद्दा' बना कर तथा और भी कितना ही गैरवैज्ञानिक प्रचार हमें दिन रात सुनने को मिल रहा है। किस्मतवादी फिलॉसफी इन शोषणकारी शासकों, जनविरोधी व्यवस्था की आयु लंबी करती है, इसीलिए धर्मों को लगातार बढ़ावा दिया जा रहा है, अंधविश्वासों को उत्साहित किया जा रहा है। इन चुनौतियों से भाग कर बचाव नहीं हो सकता, हमें संघर्षरत रहना पड़ेगा। आओ 2024 में हम और अधिक शिद्दत, प्रतिबद्धता, दृढ़ता के साथ इन हमलों का वैचारिक स्तर पर, संघर्षों के द्वारा मुकाबला करें, भविष्य हमारा है। गैर वैज्ञानिक शोषणकारी चिंतन ने पराजित होना ही होता है, इतिहास इस बात का गवाह है। प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि हरभजन हलवारवी ने सही कहा है, ''हौसले खेल रहे हैं, काली रातों के साथ। यह भरोसा है मेरा, रोशन सवेरे आएंगे।'' आओ हम उज्ज्वल सवेरों के लिए संघर्ष करने का संकल्प लेकर 2024 का स्वागत करें। - **बलबीर लौंगोवाल**

मनुष्य अब प्रौढ़ हो चुका है ,
अब उसे ईश्वर की कोई आवश्यकता नवीं। - **वान हॉंपर**

तर्कशील सोसायटी हरियाणा को प्राप्त सहयोग

1. बलवान सिंह गांव रधाना, जींद =100/-
2. सुखदेव, सफीदों = 200 /-
3. फरियाद सिंह, सनियाना, बेटे की सगाई करने की खुशी में =1100/-
4. अशोक अहलावत, नीलोखेड़ी =100/-
5. राजपाल सिंह, चीका = 500/-

19.11.2023 को तर्कशील सोसायटी मीटिंग, तरावड़ी में प्राप्त सहयोग। तर्कशील सोसायटी हरियाणा सहयोग भेजने पर साथियों का धन्यवाद करती है।

विनिमय क्या होते हैं ?

रंगनायकम्मा

श्याम का परिवार छोटी-सी झोंपड़ी में रहता है। उनके परिवार के सदस्य मिट्टी के घड़े बनाते हैं। घर के पिछवाड़े में वे जरा-सी सब्जियाँ उगाते हैं। एक दुधारू भैंस भी पालते हैं। लेकिन प्रमुख रूप से वे मिट्टी के घड़े बनाने का काम ही करते हैं। बस, इतना ही। इसके अलावा वे कोई और काम नहीं करते। लेकिन उन्हें अपने दैनंदिन उपयोग की कई और चीजों की भी जरूरत पड़ती होगी। नहीं क्या ? उन्हें चावल कहाँ से मिलता है ? कपड़े कहाँ से मिलते हैं ? जूते कहाँ से मिलते हैं ? वे सारी ही चीजें कहाँ से मिलती हैं जिन्हें वे खुद न बनाते हों ?

आज के जमाने के बारे में हमारी जानकारी के आधार पर तो हम इन सवालों का जवाब बड़े आसानी से दे सकते हैं। यह कह सकते हैं कि वे जब मिट्टी के घड़े बनाते हों, तो घड़े बेचते होंगे और उससे कमाये हुए पैसों से बाजार से जरूरत की सारी चीजें खरीद लेते होंगे।

लेकिन बहुत पुराने जमाने में इस तरह के चीजों का खरीदना या बेचना होता नहीं था। 'पैसों' की तरह कोई चीज उस जमाने में थी ही नहीं। जब उस जमाने में पैसे नहीं होते थे, तो होता क्या था ? इन बातों को समझने के लिए हमें शुरूआत से शुरू करना होगा।

उस गाँव में जहाँ श्याम का परिवार रहता है, जहाँ और भी कई परिवार रहते हैं। लक्ष्मण के घर के सभी सदस्य खेत पर काम करते हैं और अनाज व सब्जियाँ उगाते हैं। वे गाय-भैंस भी पालते हैं। मगर उन्हें मिट्टी के घड़े बनाना या जूते बनाना नहीं आता। फिर वे मिट्टी के घड़े और जूते कहाँ से जुटाते होंगे ?

इसी गाँव में कुछ और परिवार भी रहते हैं। कुछ परिवार लकड़ी का काम करते हैं। कुछ जूते बनाते हैं। कुछ कपड़ा बुनते हैं। कुछ कपड़े धोते हैं। कुछ बाल काटते हैं। इस तरह गाँव के लोग तरह-तरह का काम करते हैं।

कुछ लोग किसी एक तरह का श्रम करते हैं, तो दूसरे लोग दूसरी तरह का श्रम करते हैं। लोगों के अलग-अलग तरह का श्रम करने से 'श्रम-विभाजन' हो जाता है। एक ही व्यक्ति सौ तरह के श्रम नहीं कर सकता। इसीलिए अलग-अलग लोगों के अलग-अलग तरह का श्रम करने से श्रम का विभाजन हो जाता है।

मान लेते हैं कि एक घर के सदस्यों के अपने जीवनयापन के लिए न्यूनतम 10 अलग-अलग वस्तुओं की जरूरत होती हों। लेकिन वे सिर्फ दो या तीन प्रकार की वस्तुएँ ही बना पाते हैं। उन्हें दूसरी तरह के काम नहीं आते। ऐसी स्थिति में उन्हें वे सारी वस्तुएँ कैसे मिल पाती होंगी जो वे खुद नहीं बनाते ? यह समस्या एक ही घर की समस्या नहीं है। हर घर की इस समस्या का निदान क्या है ? निदान यह है कि एक घर के लोग अपनी बनायी हुई वस्तुएँ दूसरे घर के लोगों को दें और बदले में उन वस्तुओं को लें जो दूसरे घर के लोग बनाते हों।

श्याम का परिवार तो मिट्टी के घड़े बनाता है न ? उन्हें जूतों की जरूरत है।

सोमदास का परिवार सिर्फ जूते ही बनाता है। इन्हें घड़ों की जरूरत है।

एक दिन श्याम अपना एक घड़ा लेकर सोमदास के घर जाते हैं और कहते हैं, ''सोमदास! मेरे जूते फट गये हैं। मुझे नये जूतों की जरूरत है। तुम यह घड़ा ले लो और मुझे एक जोड़ी जूते दे दो।''

सोमदास बड़े खुश हो जाते हैं। ''मैं अभी-अभी तुम्हारे ही घर जाने वाला था। हमारा पानी का घड़ा फूट गया है। अभी थोड़ी देर पहले मेरी पत्नी ने मुझे तुम्हारे यहाँ जाकर नया घड़ा लाने को कहा। इतने में तुम आ गये हो।''

सोमदास की पत्नी बाहर आती है, एक घड़ा उठा लेती हैं और अपना चेहरा उसमें डाल चारों तरफ से छानबीन कर लेती हैं। सन्तोष जताते हुए कहती हैं, ''कोई छेद नहीं है, बड़ा अच्छा है।'' घड़े को खुशी-खुशी साथ लिये वे आंगन में पानी के पास चली जाती हैं, अच्छी तरह धो लेती हैं और बालू के एक ढेर पर नीचे रख ताजा पानी भर देती हैं और घड़े पर ढक्कन लगा देती हैं।

''अपनी पसन्द के जूते चुन लो'', सोमदास श्याम से कहते हैं।

लकड़ी के एक तख्ते के नीचे रखी जूतों की सभी

जोड़ियों पर श्याम निगाह डालते हैं, एक जोड़ी चुन लेते हैं और पहन लेते हैं। ''सोमदास, जूतों की यह जोड़ी मुझ पर ठीक बैठ रही है, ...अब मैं चला'', यह कहते हुए श्याम खुश होकर चल देते हैं।

यह किस तरह की लेन-देन हुई श्याम और सोमदास के बीच ? श्याम ने जो वस्तु बनायी वह सोमदास के पास चली गयी और सोमदास ने जो बनायी वह श्याम के पास चली गयी। वस्तुओं की एक-दूसरे के बीच अदला-बदली हुई है। दो वस्तुओं को लेकर जब ऐसा हो, तो हम इसे 'विनिमय' कहते हैं। इसका एक खास नाम है : वस्तु-विनिमय।

श्याम को जूते बनाना नहीं आता, फिर भी उन्हें एक जोड़ी मिल गयी। सोमदास को घड़े बनाना नहीं आता, तो भी घड़ा मिल गया। एक की वस्तु का दूसरे की वस्तु के साथ विनिमय हो जाने से दोनों परिवारों की जरूरतें पूरी हो जाती हैं।

'विनिमय' कुछ और नहीं, 'श्रम-सम्बन्ध' ही है :

कुम्हार के परिवार और जूते बनाने वाले के परिवार के बीच किस तरह का रिश्ता है ? वे क्या भाई-भाई हैं ? नहीं। दोस्त हैं ? नहीं। दुश्मन हैं ? नहीं। रिश्तेदार ? नहीं। फिर उनका आपसी सम्बन्ध क्या है ? वे एक-दूसरे के 'श्रम' का इस्तेमाल करते हैं। मतलब यह है कि उनके बीच का सम्बन्ध है 'श्रम-सम्बन्ध'।

इस गाँव में सिर्फ यही दो नहीं, कई और भी परिवार रहते हैं।

सादिक नाई की बेटी शम्मा को अभी तेज बुखार है। हरगोविन्द बुखार की बेहतरीन दवा देते हैं। इलाज के लिए हरगोविन्द को बुलाया जाता है। आने पर वे शम्मा का इलाज शुरू करते हैं। दो दिनों के अन्दर बुखार उतर जाता है। बाद में हरगोविन्द के बुलाने पर सादिक चले जाते हैं और हरगोविन्द के बाल काट आते हैं।

इस तरह सादिक का श्रम हरगोविन्द के पास और हरगोविन्द का श्रम सादिक के पास स्थानान्तरित हो जाता है। दोनों परिवारों की जरूरतें पूरी हो जाती हैं।

किसी परिवार के सदस्य सिर्फ एक ही तरह की वस्तु क्यों न बनाते हों, उसी वस्तु का प्रयोग कर वे दूसरी अनेक वस्तुएँ पा लेते हैं।

चिकनी मिट्टी के घड़े बनाने वाले परिवार के सदस्य पाते हैं :

एक घड़े के बदले जूते,

दूसरे घड़े के बदले कुछ अनाज, एक और घड़े के बदले बालों की कटाई।

इसके अलावा एक और घड़े के बदले अपने कपड़ों की धुलाई। कुम्हारों की सारी जरूरतों इस प्रकार पूरी हो जाती हैं।

इसी तरह जूते बनाने वाले अपने जूते देते हैं और अन्य वस्तुएँ पा लेते हैं। नाई भी बाल-कटाई करते हैं और अपनी जरूरत की वस्तुएँ हासिल कर लेते हैं। ये सारे लेन-देन 'विनिमय' ही हैं।

अगर एक व्यक्ति किसी दूसरे से कोई सेवा हासिल करे और उसकी किसी और तरीके से सेवा करे, तो यह होता है कामों का विनिमय। दूसरे शब्दों में, श्रम का विनिमय।

दूसरी ओर यदि एक व्यक्ति की कोई वस्तु दूसरे को और दूसरे की वस्तु पहले को स्थानान्तरित होती हो, तो यह होगा वस्तुओं का विनिमय। वास्तव में 'वस्तुओं का विनिमय' श्रम का ही विनिमय होता है। चीजों का विनिमय करना श्रम का विनिमय करने के ही समान होता है। चिकनी मिट्टी के घड़े और जूतों की जोड़ी के बीच का विनिमय इस घड़े को बनाने में लगे श्रम और जूतों को बनाने में लगे श्रम का विनिमय ही तो है। इस गाँव के लोगों के बीच होने वाले सभी विनिमय 'श्रम-विनिमय' होते हैं। इनके आपसी सम्बन्ध 'श्रम-सम्बन्ध' होते हैं।

सवाल और जवाब

1. 'विनिमय' क्या होते हैं ?

जवाब : एक वस्तु देना और दूसरी लेना। वस्तुओं का विनिमय एक वस्तु की दूसरी से अदला-बदली करना होता है।

2. नाई के परिवार को घड़े की जरूरत है। अब विनिमय किन-किन के बीच होगा ?

जवाब : नाई को कुम्हार से घड़ा लेना होगा और उसके बाल बनाने होंगे। मतलब यह कि बाल-कटाई के श्रम और मिट्टी के घड़े बाने के श्रम के बीच विनिमय होगा।

(स्रोत : पुस्तक '' बच्चों के लिए अर्थशास्त्र'')

ठंड में ब्रेन स्ट्रोक से कैसे बचें

- डॉ. विकास कुमार

जो ० बीपी की दवा लेते हैं। ० जिनका कोलेस्ट्रॉल हाई रहता है। जिन्हें पहले ब्रेन स्ट्रोक आ चुका है और एस्प्रिन दवा ले रहे हैं। ० जिनकी उम्र ज्यादा है। ० जिन्हें हार्ट की बीमारी है। ऐसे लोगों को में ठंड के दिनों में ब्रेन स्ट्रोक/लकवा का खतरा बढ़ जाता है। जानते हैं कि कैसे हम इन खतरों से बच सकते है

ब्रेन स्ट्रोक/लकवा क्या है ?

स्ट्रोक भारत में मौत का दूसरा बड़ा कारण है। आमतौर पर स्ट्रोक दो तरह के होता है। पहला इस्केमिक स्ट्रोक और दूसरे हैमरेज। ब्लड क्लॉट में ब्रेन के नसें सूख जाती है और दूसरे में ब्रेन में हेमरेज हो जाता है।

ब्रेन स्ट्रोक को कैसे पहचाने ?

ब्रेन स्ट्रोक के बाद, हर 1 मिनट में 19 लाख न्यूरॉन्स नष्ट होते हैं, और जान का खतरा बढ़ जाता है। समय रहते (4 घंटे के अंदर)अगर स्ट्रोक के लक्षण (BE FAST), को पहचान कर अगर अस्पताल पहुंचा जाए तो बहुत हद तक इसे रोका जा सकता है।

B- बैलेंस (Balance)- स्ट्रोक पीड़ित व्यक्ति अपने शरीर पर बैलेंस खो देता है।

E-आईज (Eyes)-अगर व्यक्ति को एक आंख या दोनों आंखों से अचानक धुंधला दिखाई देने लगे या दिखाई ही ना दे, तो समझ लें कि ये स्थिति स्ट्रोक से जुड़ी हो सकती है।

F-फेस (Face)-स्ट्रोक में फेस यानी चेहरा एक तरफ मुड़/टेढ़ा जाता है।

A-आर्म्स (Arms)- स्ट्रोक में बांहे यानी बाजू शिथिल यानी ढ़ीले (Loose) हो जाते हैं, और उन्हें ऊपर उठाने में दिक्कत होती है। साधारण भाषा में कहें तो उनमें जान नहीं रहती है।

S- स्पीक (Speak)- स्ट्रोक में पीड़ित को बोलने में परेशानी होती है, उसकी जुबान लड़खड़ाने लगती है।

T- टाइम (Time)- स्ट्रोक में सबसे अहम है टाइम। स्ट्रोक होने पर टाइम बर्बाद ना करते हुए मरीज को तुरंत ही अस्पताल पहुंचाएं।

सर्दी के वक्त किन बातों का रखें ध्यान

- ब्लड प्रेशर और हाई डायबिटीज के पेशेंट विशेष सावधानी बरतें। अपने फिजीशियन से दवाओं की डोज सेट कराएं।
- सुबह के वक्त अचनाक बेड से उठकर बाहर की ओर न जाएं। थोड़ी देर बॉडी की माहौल के हिसाब से ढलने दें।
- गुनगुना पानी पिएं। ऐसे ही पानी से नहाएं भी।
- बहुत सुबह मॉर्निंग वॉक पर न निकलें। हल्की धूप निकलने पर जाएं।
- बुजुर्ग गर्म कपड़े ज्यादा देर के लिए न उतारें।
- दो पहियावाहन सवार हैं तो हेलमेट जरूर पहनें।
- हवा से बचने के इंतजाम रखें।
- बीपी, शुगर, एस्प्रिन आदि चलने वाली दवाइयां को 1 दिन भी ना छोड़े, उसे सही समय पर लेते रहें ।

पाकिस्तान- डार्विन के विकासवाद सिद्धांत की निंदा करने के लिए प्रोफेसर को किया मजबूर, शिक्षाविदों में चिंता:

इसे लेकर पूरे दक्षिण एशियाई देशों में शिक्षाविदों ने चिंता जाहिर की है। दरअसल बन्नू के सरकारी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज में एक पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत को पढ़ाने वाले जू-लॉजी के सहायक प्रोफेसर शेर अली का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। पिछले सप्ताह शूट की गई क्लिप में, वह स्टाम्प पेपर पर लिखा माफीनामा पढ़ते हुए मौलवियों से घिरा हुआ दिखाई दे रहा है। प्रोफेसर ने तीन पन्नों का नोट पढ़ा जिसमें कहा गया है कि सभी वैज्ञानिक और तर्कसंगत विचार, जो डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत सहित इस्लामी शरिया के विरोधाभासी थे, झूठ हैं और यह कि महिलाएं पुरुषों से नीच हैं। प्रोफेसर अली ने माफी मांगते हुए आगे कहा कि शरिया द्वारा निर्धारित ज्ञान के संदर्भ में और घोषित किया गया कि महिलाओं को पुरुषों के साथ अनावश्यक रूप से घुलने-मिलने की अनुमति नहीं है। पारंपरिक इस्लामिक ड्रेस कोड का पालन किए बिना सार्वजनिक रूप से दिखाई देने वाली महिलाओं के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के जवाब में शिक्षक ने इस्लाम में महिलाओं के अधिकारों पर भाषण दिया था। कार्यक्रम के बाद, पाकिस्तानी मौलवियों ने प्रोफेसर अली पर न केवल अपने भाषण में बल्कि अपने विश्वविद्यालय के पाठों के दौरान भी इस्लाम के खिलाफ बोलने का आरोप लगाया।

ग्लूकोमा यानी दृष्टिहीनता

ग्लूकोमा एक ऐसी बीमारी है जो आपकी आंख आप्टिक तंत्रिका को नुकसान पहुंचाती है। यह आम तौर पर तब होती है जब आपकी आंख के सामने वाले हिस्से में तरल पदार्थ जमा हो जाता है। वह अतिरिक्त तरल पदार्थ आपकी आंख में दबाव बढ़ाता है, जिससे आप्टिक तंत्रिका को नुकसान पहुंचाता है। ग्लूकोमा को काला-मोतिया भी कहा जाता है। दरअसल इसकी वजह से होने वाली दृष्टिबाधिता की भरपाई असंभव है।

दो प्रमुख प्रकार-

ओपन एंगल ग्लूकोमा

यह ग्लूकोमा का सबसे आम प्रकार है। यह धीरे-धीरे होता है, जहां आंख से उतना तरल पदार्थ नहीं निकलता, जितना उसे निकलना चाहिए (जैसे कि रुकी हुई नाली)। परिणामस्वरूप, आंखों पर दबाव बनता है और आप्टिक तंत्रिका को नुकसान पहुंचने लगता है। इस प्रकार का ग्लूकोमा दर्द रहित होता है और शुरूआत में दृष्टि में कोई बदलाव नहीं होता है। कुछ लोगों में आप्टिक नसें हो सकती हैं जो सामान्य आंखों के दबाव के प्रति संवेदनशील होती हैं। इसका मतलब है कि उनमें ग्लूकोमा होने का जोखिम सामान्य से अधिक है।

क्लोज एंगल ग्लूकोमा

यह प्रकार तब होता है जब किसी की आइरिस उसकी आंख में जल निकासी कोण के बहुत करीब होती है। अंततः जब जल निकासी कोण पूरी तरह से अवरुद्ध हो जाता है, तो आंखों पर दबाव बहुत तेजी से बढ़ता है। इसे तीव्र हमला कहा जाता है। यह वास्तव में एक खतरनाक स्थिति है और आपको तुरंत नेत्र रोग विशेषज्ञ के पास जाना चाहिए अन्यथा आप अंधे हो सकते हैं।

लक्षण

दृष्टि अचानक धुंधली हो गई है, आंखों में तेज दर्द है, सिरदर्द है, पेट में दर्द महसूस होता है (मतली), उल्टी हो सकती है। रोशनी के चारों ओर इंद्रधनुष के रंग के छल्ले या प्रभामंडल दिखाई देता है।

खतरा किसे है?

-40 वर्ष से अधिक उम्र के हैं

-जिनके परिवार के सदस्य ग्लूकोमा से पीड़ित हैं

-अफ्रीकी, हिस्पैनिक, या एशियाई विरासत के हैं

-आंखों पर दबाव अधिक है

-दूरदर्शी या निकट दृष्टि

-आंख में चोट लगी है

-दीर्घकालिक स्टेरायड दवाओं के उपयोगकर्त्ता

-आप्टिक तंत्रिका का पतला होना

मधुमेह, माइग्रेन, उच्च रक्तचाप, खराब रक्त परिसंचरण या पूरे शरीर को प्रभावित करने वाली अन्य स्वास्थ्य समस्याएं

निदान

ग्लूकोमा का निदान करने का एकमात्र निश्चित तरीका आंखों की संपूर्ण जांच है। ग्लूकोमा स्क्रीनिंग जो केवल आंखों के दबाव की जांच करती है, ग्लूकोमा का पता लगाने के लिए पर्याप्त नहीं है।

रोका जा सकता है?

ग्लूकोमा की क्षति स्थायी है-इसे उलटा नहीं किया जा सकता। लेकिन दवा और सर्जरी आगे की क्षति को रोकने में मदद करती हैं। ग्लूकोमा का इलाज करने के लिए, आपका नेत्र विशेषज्ञ निम्नलिखित उपचारों में से एक या अधिक का उपयोग कर सकता है।

दवाएं

ग्लूकोमा को आम तौर पर आई ड्राप दवा से नियंत्रित किया जाता है। हर दिन उपयोग किए जाने पर, ये आई ड्राप आंखों के दबाव को कम करते हैं। कुछ लोग आंख में बनने वाले जलीय द्रव की मात्रा को कम करके ऐसा करते हैं। अन्य जल निकासी कोण के माध्यम से तरल पदार्थ के बेहतर प्रवाह में मदद करके दबाव को कम करते हैं।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

पृष्ठ 44 का शेष शायद चमत्कार दिखाए बिना इस कर्त्तव्य का पालन संभव नहीं। शायद इनसान को चमत्कारों की इस जंजीर से अभी छुटकारा नहीं मिलेगा। शायद चमत्कार पर विश्वास करना मनुष्य की सहज प्रकृति का अंग है। शायद अधिकांश मानवजाति अभी अपने शिशुकाल में है। तभी तो राजाओं द्वारा अपनी प्रजा की सुनाई जाने वाली जलपरियों की इन कहानियों में, लोगों की इतनी रुचि है और राजा निश्चिंत हो कर पृथ्वी का उपभोग कर रहे हैं।

(स्रोत : पुस्तक ''तंत्र मंत्र यंत्र'', संपादकः राकेश नाथ)

वैज्ञानिक मानसिकता के समक्ष चुनौतियां

वेद प्रिय

मनुष्य का जीवन प्रकृति व सामाजिकता से प्रभावित होता है। मनुष्य सब कुछ यहीं समाज में रहकर ही सीखता – सिखाता है। ज्ञान का स्रोत यहीं प्रकृति, मनुष्य व समाज के बीच होने वाली अत: क्रियाएं ही हैं।यह कहीं और से या ऊपर से आकर नहीं टपकता या अवतरित होता। मनुष्य का स्वभाव भी (मानसिकता) इसी समाज में अपना आकार लेता है, विकसित होता है और बदलता है। मनुष्य की कुछ मूल प्रवृत्तियां(Instincts) होती हैं जिनकी सहायता से वह अपना स्वभाव बनाता है ,जैसे आश्चर्यचकित होना, जिज्ञासा होना, बाहरी उद्दीपकों (Stimulii) के प्रति प्रतिक्रियाएं करना, सृजनात्मकता आदि।

वैज्ञानिक मानसिकता की तरफदारी हम इसलिए करते हैं कि इसमें बिना प्रमाणों या तर्कों के बात स्वीकार नहीं की जाती। मनुष्य के अब तक के सांस्कृतिक विकास में वैज्ञानिक मानसिकता ने सकारात्मक योगदान किया है। मनुष्य ने तर्क/प्रमाण यही अपने अनुभवों के आधार पर गढें हैं ।ये मानक मनुष्य ने ही तय किए हैं। हम इन्हें अंतिम भी नहीं मानते। नए अनुभव और नए प्रकार की अन्त:क्रियाओं के चलते पैदा होने वाले नए तथ्यों की रोशनी में ये अपडेट और संश्लिष्ट होते जाते हैं। ये हमारे जीवन के चुनाव में शामिल हैं। हम अपने विकास के लिए ही इनका चयन करते हैं। जब तक हमें नए प्रमाण या अवलोकन नहीं मिल जाते हम अपने पूर्व प्रामाणिक अनुभवों से काम चलाते हैं ।ये एक प्रकार से मानव विकास की गारंटी माने जाते हैं। सामाजिक जटिलताओं के चलते हमें अधिकांश तौर पर अपनी समस्याओं पर आंशिक सफलता ही मिलती है। क्योंकि हर बार परिस्थितियों नई होती हैं। नई व परिष्कृत बनी समझ (अद्यतन ज्ञान)एकदम से पुराने ज्ञान का विस्थापन नहीं करती। पूव ज्ञान व पुरानी समझ भी काफी समय तक हमारे साथ घिसटती चलती है।

मनुष्य जब प्रकृति व समाज में संघर्षों में आता है तो बहुत स्तरीय विविध आयामी समझ एक साथ निकलती है । एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इस समझ को समझने के लिए कोई एक कोणीय या एकांगी तरीका भी नहीं है । इसलिए इस प्रकार उपजने वाला ज्ञान अनेक परतों पर बनता है। इसमें मिथकीय समझ, सौंदर्यशास्त्रीय समझ, कलात्मक समझ ,वैज्ञानिक समझ आदि शामिल हैं।ये हमेशा पूरक नहीं होती अपितु कई बार एक दूसरे के विरोध में भी बनती हैं। वैज्ञानिकता के अपने कुछ मानक हैं। विज्ञान की अपनी पद्धति है। एक बड़ी सहमति इस बात पर है कि यह पद्धति ज्ञान प्राप्त करने का सर्वाधिक विश्वसनीय व कारगर तरीका है। इसके अनुरूप बने स्वभाव को हम वैज्ञानिक मानसिकता का सकते हैं।

वैज्ञानिक सोच का औचित्य तो सिद्ध हो चुका है । यदि आज भी अधिकांश आबादी की मानसिकता इस प्रकार नहीं बन पा रही है तो इसके कुछ कारण हैं। वैज्ञानिक मानसिकता के समक्ष चुनौतियों को हम मोटे तौर पर दो श्रेणियां में ले सकते हैं। पहली है, सामाजिक परिवेश (परिवार, परंपरा, संस्कृति, मिथक आदि)से जुड़ी समस्याएं। और दूसरी है, औपचारिक शिक्षा से पैदा हुई समस्याएं। हमने (अधिकांश ने) बचपन में प्राय परियों की कहानियाँ, मिथकों से जुड़ी कहानियाँ (यद्यपि मिथकों का समालोचनात्मक अध्ययन आवश्यक है) सुनी होती हैं। हमारी माताएं, दादियां, नानियां बचपन में कहानियां सुनाती रही हैं। ये पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे चलती जाती हैं। समय–समय पर इनका रूपांतरण भी होता जाता है। कुछ कम शिक्षित बड़े–बूढ़े बच्चों को तोता–मैना के किस्से, ईशप की कथाएं आदि आदि भी सुनाते हैं। इन कथाओं में बहुत कुछ ऐसा होता है जो स्वस्थ मानसिकता का नहीं होता। लेकिन ये मनोरंजन के रूप में अच्छी बहुत लगती हैं। बचपन में बच्चों के दिमाग पर इनका गहरा असर होता है जो ताउम्र नहीं छूटता। कुछ पारंपरिक बातें हमारे बड़े- बूढ़े चलाते रहते हैं, जैसे भूकंप के आने पर यह कहना कि पृथ्वी शेषनाग के फन पर टिकी है, यह कछुए की पीठ पर है, बैल के सींग पर है आदि–आदि। ठोस व सही जानकारी के अभाव में ऐसी बातें बच्चों के दिमाग में घर कर जाती हैं। इसी तरह ग्रहण को लेकर राहु–केतु (राक्षस)की परिकल्पना आदि। ऐसी बातें सही शिक्षा से काफी हद तक दूर की जा सकती हैं। फिर भी सही शिक्षा मिलने तक बहुत देर हो चुकी होती है और अधिकांश को तो यह मिल ही नहीं पाती। दूसरे बच्चे के दिमाग में शिक्षा से

प्राप्त जानकारियां और पारंपरिक जानकारी के बीच अवधारणाओं की रस्साकस्सी चलती रहती है। कितने लोगों को टेक्टोनिक प्लेट्स की हलचल की संकल्पना का पता होता है।अभी इस बहस में नहीं जाते कि यह सब हमारी परंपरा जिसे हम संस्कृति भी कह देते हैं ,कैसे शामिल हो गया। लेकिन इतना जरूर है कि ये बातें हमारे सब के मनों में इस तरह रस-बस गई हैं कि ये हमारा पीछा नहीं छोड़ती। घर परिवार से लेकर धर्मगुरुओं के व्याख्यान तक में ये बातें मिलेंगी-तूने बुरे कर्म किए हैं, तूँ नरक में जाएगा, तुझे पशु योनि मिलेगी, तेरे भाग्य में यही लिखा है (नियति) आदि-आदि। इनके साथ ही निदान हेतु अनेक प्रकार के कर्मकांड का पाठ्यक्रम ठूँसठूँस कर भर दिया जाता है कि मनुष्य यह निर्णय ही नहीं कर पाता कि इस निदान से इनका संबंध ही क्या है। पूजा-पाठ, दान-दक्षिणा व नाना प्रकार के अनुष्ठान इसकी फेहरिस्त में जुड़ जाते हैं। सबसे भयंकर बात तो यह है कि उनकी पड़ताल करने की विवेचना का विमर्श तो दूर, इन पर सोचने तक का ख्याल आने पर आप पर अनैतिकता का ठप्पा लगाया जा सकता है। आप इस प्रकार समाज बहिष्कृत हो सकते हैं। परिवार आपको अजीब निगाहों से देखेगा। आपके पैरों नीचे की जमीन बहुत सिकुड़ी मिलेगी। तर्क करना तो यहां सीधे-सीधे पाप है। मत-मतान्तरों के मठाधीश यहां समाज में प्रभुत्वकारी स्थानों पर विराजमान हैं। वे कभी जन सामान्य को तार्किक बहस में नहीं आने देंगे। उनके पास पद, पैसा, प्रतिष्ठा इतनी है कि वे स्वीकार ही किए जाने हैं। हम इस समाज को ही एक बड़ा विश्वविद्यालय मानते हैं। यह विश्वविद्यालय बहुत सुनियोजित तरीके से सुबह से शाम तक हम में इस प्रकार के अंधविश्वास भरता रहता है। आप मीडिया के कार्यक्रमों को देख सकते हैं। सुबह जागने से लेकर रात सोने तक शकुन-अपशकुन हमारा पीछा नहीं छोड़ते। इन पर विचार करने लग जाए तो हमें नींद नहीं आएगी। यह सब तो औपचारिक शिक्षा से इतर का हाल है। जीवन के लिए जरूरी न्यूनतम सामाजिक सुरक्षाओं का यहां अभाव है। ऐसे माहौल में एक सामान्य व्यक्ति का इस दुष्चक्त में फंसना लाजमी है।

वैज्ञानिक मानसिकता की राह में औपचारिक शिक्षा भी कम बाधक नहीं। हमारी लगभग तमाम पाठ्य पुस्तकें प्रश्न उठाने से परहेज करती दिखाई देती हैं। इनमें जो लिखा है उसे आप मानिए। इस मानने के आधार व उनके निहितार्थ पर चर्चा न के बराबर है।अध्यापकों के पास इतना फालतू समय नहीं कि वे इस चर्चा में उलझें। और यदि बच्चे ज्यादा पूछने की जिद करने लग जाए तो डांटे जा सकते हैं। ज्ञान के लिए इन पाठ्य पुस्तकों पर निर्भर रहने के इलावा आपके पास चारा ही क्या है? वैज्ञानिक मानसिकता के रास्ते में यह सबसे बड़ी रुकावट है। एक अनपढ़ या कम पढ़े- लिखे को तो आप यह कहकर बरी भी कर सकते हैं कि उसे कम पता है। लेकिन ऊंची शिक्षा का ठप्पा लगाए वे संसाधन संपन्न व्यक्ति अवैज्ञानिक बातों का प्रचार करें तो क्या कहा जाए? समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के संपादक सभी काफी पढ़े-लिखे माने जाते हैं । इन्हें सूचनाओं का स्रोत भी समझा जाता है। लेकिन अधिकांश में राशिफल, शुभ-अशुभ, मुहूर्त आदि भरे रहते हैं। सामान्य मीडिया में वैज्ञानिक चर्चा गायब रहती है। यही हाल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का है। अधिकांश पढ़े -लिखे खुद को सम्भ्रांत मानने वाले व्यक्ति घटनाओं की जांचपड़ताल करने में अपनी गरिमा कम होना मानते हैं। उदाहरण के लिए आपने पेट्रोल लेना है। आप इसकी जांच परख का जिक्र नहीं करेंगे। आपने अपने बच्चों के लिए चॉकलेट व खिलौने लेने हैं। आप केवल अच्छा लेबल देखेंगे। इनकी गुणवत्ता व टिकाऊपन देखने पर जोर नहीं लगाएंगे। आपने साबुन, क्रीम आदि खरीदनी है। इनके लेबल पर लिखे पर आप भरोसा कर लेंगे। आप थोड़ा सा भी गहरे से समझने की कोशिश नहीं करेंगे। ऐसा करना आप अपनी शान व रुतबे के खिलाफ मानते हैं। आप एक ऐसी लीक बना रहे हैं जिस पर और चलने वाले लोग आपका अनुसरण करते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि अधिकांश पढ़े-लिखे व्यक्ति जिनकी और अनेक आंखें लगी होती है वे अधिकतर अपने पीछे अनुकरणीय उदाहरण नहीं छोड़ते। यदि शिक्षा को वैज्ञानिक मानसिकता के लिए अनिवार्य शर्त मान भी लिया जाए तो भी एक बड़ी आबादी इससे आज वंचित है। कहीं रंगभेद, कहीं नस्ल भेद, कहीं आदिवासी क्षेत्र, कहीं जाति-वर्ण व कहीं अन्य कारणों से यह एक बड़े तबके तक पहुंच ही नहीं सकती। पितृसत्तात्मक सोच के चलते लंबे समय तक महिलाओं को शिक्षा से दूर रखा गया है (कुछ अपवाद छोड़कर)। यदि आज तक शिक्षा इन अंतरों को भेद नहीं पाई है तो वैज्ञानिक मानसिकता की बात तो बहुत दूर की कौड़ी है। वर्तमान में एक भयंकर ट्रेंड इसके मार्ग में बड़ा रोड़ा बन रहा है। वह यह है कि बहुत से ऊंचे

पदों पर आसीन तथाकथित विद्वान (यहां तक की विज्ञान की शिक्षा प्राप्त) न जाने किन हितों के वशीभूत होकर आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों को नकार रहे हैं। प्राचीन ज्ञान की बिना वैज्ञानिक पड़ताल व छंटाई किए को ही आधुनिक विज्ञान से आगे बढ़ा हुआ बता रहे हैं इसमें देश की उच्चतम संस्थाओं के वैज्ञानिक आई आई टी तक भी पीछे नहीं है ऐसा करके वह पुनरुत्थान वीडियो के हौसले बढ़ाते हैं ऐसे संस्थान व वैज्ञानिक जनमानस में विज्ञान के प्रति भरोसे को काम करते हैं। आधुनिक समय में विकास की अंधी दौड़ के पीछे रह जाने का डर दिखलाकर ऊंचे साधन संपन्न अधिकतर कॉरपोरेट जगत एजेंसियां हमारे व्यापार को बढ़ाने के लिए ऐसे पढ़े-लिखे वर्ग को चयनित करती हैं जो उनके मुनाफे में ही वृद्धि करें।

वे कंपीटीशन की होड़ में अपने अनुकूल मूल्यांकन प्रणाली गठित करते हैं। बहुत बड़ी युवा बौद्धिक ऊर्जा अच्छी प्लेसमेंट के लालच में इन्हीं के पीछे भागती है। विज्ञान की प्रकृति को समझने की फुर्सत किसे हो और क्यों हो? इन्हें तो तकनीकी विशेषज्ञ बनाना होता है वैज्ञानिक मानसिकता जाए भाड़ में। J.E.E. Main में 2024 के लिए 12.3 लाख प्रार्थी हैं। ये कितना पैसा और ऊर्जा लगाकर (तथाकथित विज्ञान की) पढ़ाई कर रहे हैं। यह कैसी मानसिकता है विज्ञान के नाम पर? अनेक विश्वविद्यालयों (येल विश्वविद्यालय अमेरिका को मिलाकर) के शोध कह रहे हैं कि विद्यार्थियों का विश्व व्यापी रुझान आज ग्रेड एक्सीलेंस पर ज्यादा है, विज्ञान की समझ और संकल्पनाओं पर कम। इन शोधों का कहना है कि इस given सिस्टम में वैज्ञानिक अप्रोच से ज्यादा ग्रेड कंप्लायंस ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। यहां तक की रिसर्च स्कॉलर भी ऐसा करने व मानने को मजबूर होते हैं। शिक्षा में मूल्यांकन के क्राइटेरिया इस बात को लेकर तय कर दिए जाते हैं की शिक्षण सामग्री में क्या पढ़ाया गया था। कोई विद्यार्थी नवाचार या नये विचार के लिए कुछ करें भी तो क्या करें? आज शिक्षा यहां तक की विज्ञान की शिक्षा भी को भी कॉस्ट इफेक्टिव साधन के रूप में रखा जा रहा है। हमारी शिक्षा व्यवस्था विज्ञान के विद्यार्थियों को तथ्यों का संग्रह व सूचनाओं का संप्रेषण के रूप में ज्यादा रखती है। विज्ञान की प्रकृति में ही यह निहित है कि यह प्राकृतिक विश्व का अध्ययन है। इसमें अलौकिक या अतिप्राकृतिक बातों का कोई स्थान नहीं है। प्रकृति में नियम होते हैं जिनके माध्यम से यह समझ के दायरे में आती है। इसकी अपनी एक प्रक्रिया है। इसमें नए रहस्यों का उद्घाटन होता है। लेकिन यहां तो विज्ञान को ही रहस्यमयी बना कर पेश किया जाता है।

यदि अपने देश के स्तर पर देखा जाए तो वैज्ञानिक मानसिकता की बात मौलिक कर्तव्यों में शामिल तो हो गई है परंतु यही काफी नहीं है। यदि कोई नागरिक अवैज्ञानिक बातों में शरीक होता हो (अपने देश में तो मंत्रियों व उच्च अधिकारियों तक शामिल हैं) तो उनाम पर कानूनन क्या पाबंदी? यहां तो आधिकारिक रूप में अवैज्ञानिक बातों का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। इसके उलटे वैज्ञानिक मानसिकता की बात करने वाला आम नागरिक यदि विरोध भी करें तो उसे प्रताड़ित होना पड़ सकता है। यहां तक कि उसके लिए कोई बचाव भी नहीं है।

जीवन की अनिश्चितताओं व सामाजिक सुरक्षा के अभाव में स्वाभाविक है कि कोई भी व्यक्ति सहज सुगम युक्ति की ओर मुड़ेगा। मानव मनोविज्ञान यही कहता है। वह व्यक्ति शॉर्टकट का सहारा लेगा। वह वैज्ञानिक बहस में पड़ने की जहमत कम उठायेगा। 70152 60646

जनवरी-फरवरी की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

25 जनवरी

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की जयन्ती।

5 फरवरी (1919)

चौरी-चौरा काण्ड, जिसमें अंग्रेजों ने जुल्म के खिलाफ जनता के बहादुर सपूतों ने बगावत की आवाज उठाते हुए स्थानीय थाने में आग लगा दी थी।

10 फरवरी

महान् कवि व नाटककार बर्टोल्ट ब्रेष्ट का जन्म दिवस

18 फरवरी (1946)

भारतीय नौसेना के बहादुर नौजवानों ने अंग्रेजों के ख़िलाफ़ विद्रोह किया था जिसे हम नौसेना विद्रोह के नाम से जानते हैं।

19 फरवरी (1673)

महान क्रान्तिकारी वैज्ञानिक कॉपर्निकस का जन्म दिवस। इसे विज्ञान दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

27 फरवरी (1931)

महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद का शहादत दिवस।

चमत्कार : नए और पुराने

-बसंत चटर्जी

हमारा देश चमत्कारों का देश है। बड़े-बड़े 'चमत्कार' दिखाने वाले संत महात्मा और योगी पुरुष इस ऐतिहासिक भूमि पर पैदा हुए हैं। हमारे महान् शास्त्रों में भी प्रत्येक अवसर के लिए उपयुक्त चमत्कारों का सुंदर विधान है। जैसे पानी बरसने के लिए, संतान पाने के लिए, पैसा पैदा करने के लिए और तंदरुस्ती हासिल करने के लिए। हमारे यहां ये सब काम चमत्कारपूर्ण ढंग से यानी छूमंतर से होते हैं। सच तो यह है कि हमारा सारा इतिहास ही एक 'महान चमत्कार' है, इस अर्थ में कि इस इतिहास के बाद भी, हम जिंदा हैं।

हमारे यहां धर्म, नैतिकता और सामाजिक व्यवस्था की तरह ही राजनीति में भी चमत्कारों का विशेष महत्त्व है। सत्ता को सुरक्षित रखने में चमत्कारों ने हमेशा ही बड़ा चमत्कार दिखाया है और सभी युगों में हमारे शासकों ने उनका खूब उपयोग किया है। भारतीय अर्थशास्त्र के रचयिता, अद्वितीय, कूटनीतिज्ञ विष्णुगुप्त चाणक्य उर्फ कौटिल्य की स्थापना है कि मित्रपक्ष को प्रभावित और शत्रुपक्ष को भयभीत करने के लिए चमत्कारों का सहारा लीजिए और मजे से राज कीजिए। देखिए, वह अपने संरक्षक को कैसा विलक्षण परामर्श देते है :

'सम्राट् जब विजय के इच्छुक हों तो वह अपनी सर्वज्ञता तथा देवताओं के साथ अपने निकट संबंधों का व्यापक प्रचार कर के अपने अनुयायियों में विश्वास और उत्साह पैदा करें तथा शत्रुपक्ष के लोगों को हतोत्साहित और आतंकित करें'।

(अर्थशास्त्र, अं. पृष्ठ : 394-395)

देवताओं के साथ घनिष्ठ संबंधों का प्रचार करने के लिए राजा को क्या-क्या करना चाहिए, यह भी कौटिल्य की कुटिल भाषा में सुनिए :

'राजा पूजा के दौरान देवताओं के साथ बातचीत करे, जब कि यथार्थ में अग्निकुंड या चैत्य (मंदिर) में अथवा देवमूर्ति के भीतरी खोखले भाग में नीचे की तरफ से एक गुप्त सुरंग से आ कर राजा का कोई विश्वस्त गुप्तचर खड़ा हो जाए, इसी प्रकार जल से निकलने वाले नाग देवता और सोने की मूर्ति के अंदर बैठे लोगों के साथ राजा वार्त्तालाप करे, जब कि वास्तव में ये सब राजा के अपने गुप्तचर हों, यही लोग रात के समय जल के भीतर तेल में भिगोए समुद्री भाग का कोश रख कर आग लगाएं और अग्निशाला दिखाएं या लकड़ी और बांस बेड़े को शिला या जंजीर से बांध कर देवताओं के रूप में उस पर दर्शन दें। या फिर जलजंतुओं की बस्तियां या झिल्ली से मुंह ढांप कर मृग की अंतड़ी तथा केकड़ा, सूंस आदि जनजंतुओं की चरबी में तेल को सौ बार पका कर नाक पर लगाएं, और प्रसिद्ध करें कि रात्रिगम जल के भीतर आयाजाया करते हैं। तब यही लोग वरुण और नाग कन्याओं का संभाषण आदि दिखाएं और उन में झगड़ा दिखाने के लिए (जल में ही) मुह से आग और धुआं छोड़ें।

(अर्थशास्त्र, अं. पृ. : 396)

धार्मिक चमत्कारों के इस निवारण को अनुदित करते हुए 'अर्थशास्त्र' के अंगरेजी अनुवादक डॉक्टर शाम शास्त्री (मैसूर) यह टिप्पणी किए बिना न रह सके कि प्राचीन राजाओं द्वारा राजनीतिक उद्देश्यों से रचे गए जादुई करतबों के इस ब्योरे से इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर मिल जाता है कि हमारे पौराणिक साहित्य का उद्भव और विकास किन कारणों से हुआ? चाणक य की इस निर्मम स्पष्टवादिता के बाद किसी भी समझदार व्यक्ति को पुराणों में वर्णित चत्कारों की सत्यता में विश्वास नहीं रह सकता।

परिणाम यह है कि राजाओं के राजनीतिक उद्देश्य आज भी उतने ही घटिया, स्वार्थपूर्ण और घृणित हैं, जितने ढाई हजार वर्ष पहले थे और लोगों को श्रद्धाग्रस्त रखने के लिए चमत्कारों की आवश्यकता भी आज उतनी ही प्रबल है, जितनी पहले भी, देवमूर्तियां आज भी बोलती, हंसती और गाती हैं। कभीकभी तो शायद, भक्तजनों की दुर्दशा पर, पाषाण मूर्तियों की आंखों से आंसू भी छलक पड़ते हैं, जिन्हें एकत्र कर एक-एक बूंद संभाल कर रखने के लिए अंधी जनता की अपार भीड़ उमड़ पड़ती है।

आज नवीनता का युग है, इसलिए नए ढंग के चमत्कारों से दर्शकों की आंखें चकाचौंध की जाती हैं और बुद्धि पर परदा डाला जाता है ताकि, कौटिल्य की शिक्षा के अनुसार 'राजा निर्शिंचत हो कर पृथ्वी का उपभोग करें।' पृथ्वी का उपभोग करना ही तो राजा का सब से बड़ा कर्त्तव्य है!

शेष पृष्ठ 40 पर

तेरा वुजूद है अब सिर्फ़, दास्तां के लिए

अम्बुज पांडे

लोग कहते हैं कि साहिर नास्तिक थे। यह जानकर दिल को बड़ी तसल्ली होती है कि कोई रचनाकार नास्तिक होकर भी कितनी खूबसूरती से दुनिया को देख सकता है। उसकी नास्तिकता आपको आक्रांत नहीं करती, बल्कि आप उसकी दुनिया के लिए दुआएं मांगते हैं, उसके रचे भक्ति गीतों को गुनगुनाने लगते हैं। सच्चा नास्तिक आपको कितना मुग्ध कर सकता है ,,,, साहिर इसकी मिसाल हैं। अक़्सर आस्तिकों और धर्मावलंबियों ने दुनिया को सर्वाधिक पीड़ा पहुंचाई है, यह बात साहिर जानते थे। साहिर को मालूम था कि दुनिया का रहस्य आस्था व ईश्वर के सहारे चलता है, और उसी कुहेलिका में सब समाते जाते हैं। हर दुआ और बद दुआ के लिए आदम ईश्वर को खींच लाता है। उसे पूजता और लांछित करता है, लेकिन उसके बिना जी भी नहीं सकता ... !!

पर साहिर बड़ी खामोशी से इन सबसे बच निकलते हैं ...

'बच्चन'- साहब ने मदिरा से बहुत संयम बरता था, लेकिन एक बड़ी ज़मात को उन्होंने मैख़ाने तक पहुंचाया। जबकि दिन रात शराब में डूबा रहने वाला साहिर... इसे वर्ण्य विषय नहीं मानता। साहिर के होठों से लगी रहने के बावजूद मदिरा उसके कलम की रोशनाई न बन पाई, यह भी साहिर का ही संयम था। उनकी कविता में रजोगुण से ज्यादा सतोद्रेक का औदात्य था। एक अज़ीम शायर से दुनिया बेहद मुतास्सिर होती है, इसका भली-भांति निर्वाह साहिर वैयक्तिक जीवन में भी करते रहे। अविवाहित साहिर कभी उच्छृंखल व मर्यादाविमुख नहीं हुए ,,,, यह स्वभाव बड़ी स्पृहा जगाता है।

मुझे 'साहिर' और इमरोज़ दो सौत की तरह लगते हैं, जिनका दिल अमृता के लिए धड़कता था। अमृता और साहिर के तक़दीर में वस्ल नहीं थी। सब खो चुकने के बाद अमृता को ख़ते पेशानी मानकर 'साहिर' चला जाता है ,,,,

साहिर की कविता में विरोध बड़ी मासूमियत के साथ दर्ज़ होता है। वह आपको बिना विचलित किए, बड़े कलात्मक और अर्थपूर्ण ढंग से अपनी बात कहकर चल पड़ता है। प्रेमी युगल ताजमहल के सामने अपने इश्क़ और मोहब्बत के वादे करते हैं, कस्में खाते हैं। लेकिन साहिर अपनी प्रेयसी के कान में धीरे से शाहंशाह और उसकी दौलत की बात करके वहां से कूच कर जाता है। वह प्रकृति और प्रेम के सामने अपने को समर्पित कर देता है। वह दुनिया की फितरत जानता है ,,,, अमीरों और ग़रीबों को ठीक से पहचानता है ,,,, हर चेहरे पर खुदे ख़ुशी और ग़म को वह पढ़ लेता है ...

''मेरे सरकश तरानों की हक़ीक़त है तो इतनी है,
कि जब मैं देखता हूँ भूख के मारे किसानों को ...
ग़रीबों को, मुफ़लिसों को, बेकसों को, बेसहारों को,
सिसकती नाज़नीनों को, तड़पते नौजवानों को ...
हुकूमत के तशद्दुद को, अमारत के तकब्बुर को,
किसी के चिथड़ों को और शाहंशाही ख़ज़ानों को ...''

ग़रीब की कविता में ग़रीबी दर्ज़ होती है ,,,, असफल प्रेमी विछोह के गीत गाता है ,,,, शराबी मदमस्त होकर दुनिया को देखता और कुढ़ता है ...

एक साहिर ही है ,,,,जो बेजा कहीं गर्क नहीं होता। वह एक साथ ,,,, ग़रीब की जुबान बनता है ,,,, प्रेमियों के लिए अफ़साने लिखता है।

दारू से ज्यादा उसे ज़िन्दगी का नशा है ,,,, देवता से ज्यादा उसे इंसान अच्छे लगते हैं ,,,, भीड़ के बारे में बताता ,,,, गाता ,,,, भीड़ में गुम 'साहिर' एक दास्तां बन गया ...

वाणी अमृता

धरती को सोना बनाने वाले

मिल, कोठी, कारें,
ये सड़कें, ये इंजन
इन सब में
तेरी ही मेहनत की धड़कन
तेरे ही हाथों ने
दुनियां बनाई
तूने ही भरपेट
रोटी न खाई
तू ही लड़ेगा
सुबह की लड़ाई।

-ब्रज मोहन

प्रिय संपादक महोदय,
जय इंसान।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि डॉक्टर रणजीत की सुविख्यात पुस्तक ''भारत के प्रख्यात नास्तिक'' का द्वितीय संस्करण (2023) प्रकाशित हो गया है। इस परिवर्धित और संशोधित संस्करण में कुल 131 नास्तिक व्यक्तित्व हैं, जिसमें लगभग पचास व्यक्तित्वों को इस अद्यतन संस्करण में सम्मिलित किया गया है, इनमें प्रमुख हैं: सत्यानंद अग्निहोत्री, मानवेंद्र नाथ राय, जिद्दू कृष्ण मूर्ति, दर्शन सिंह आवारा, मन्मथनाथ गुप्त, भीष्म साहनी, करुणानिधि, ओशो रजनीश, गोविंद पनसारे, आर.पी. गांधी, लज्जाशंकर हरदेनिया, गिरीश कर्नाड, मेघराज मित्तर, गौहर रजा, कृष्ण बरगाड़ी, लवणम, विजयम, मार्कंडेय काटजू, गुरशरण सिंह, संदीप पांडेय आदि। अपने-अपने क्षेत्र के तज्ञ विद्वानों, कलाकारों, क्रांतिकारियों, वैज्ञानिकों, राजनेताओं, अभिनेताओं, लेखकों, कवियों, दार्शनिकों से भरपूर यह पुस्तक नास्तिक शब्द को उचित आदर व सम्मान दिलाने के अपने मूल उद्देश्य में सफल रही है। संपादक डाक्टर रणजीत ने मधुमक्खी की तरह श्रम करके अनेक स्रोतों से भारत के प्रख्यात नास्तिकों को एक पुस्तक में संजोये है। इसमें भारत के कोने-कोने से विविध जीवन-क्षेत्रों से संबंधित नास्तिकों को सम्मिलित किया है। उनका यह प्रयास सराहनीय है, विशेषकर हिंदी पाठकों के लिए किसी धरोहर से कम नहीं है। पाठक इन व्यक्तित्वों का अध्ययन करके इनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकता है और अपने जीवन की दिशा निर्धारित कर सकता है।

कह सकते हैं कि इन प्रख्यात नास्तिक व्यक्तित्वों के समावेश से पुस्तक अपनी पूर्णता के निकट पहुँच गई है। अब काफी हद तक पुस्तक अपने शीर्षक के साथ न्याय कर पा रही है। हालाँकि अभी भी अनेक प्रख्यात भारतीय नास्तिक इस पुस्तक में शामिल नहीं हो पाए हैं, जैसे कि प्रसिद्ध मशहूर फिल्मी अभिनेता अमोल पालेकर, ए.के. एंटनी, द हिंदू समाचार समूह के एन.राम, श्वेत क्रांति के जनक वर्गीज कुरियन आदि। विस्तार-भय से सबको एक पुस्तक में समेटना व्यवहारिक रूप से संभव भी नहीं है।

अपनी विषय-सामग्री के आधार पर यह एक संग्रहणीय पुस्तक बन गई है। इसके लिए हम डाक्टर रणजीत का आभार और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। **मनोज मलिक**

विद्यार्थी रचना

''तर्कशील'' का नारा

मनप्रीत कौर

ना धागे न ताबीज न किसी प्रकार का कोई दिखावा
जो हर बात पे तर्क करके चले तर्कशील है वही
साइंस युग में जो रहकर अंधकार में जी रहे

उनको उजाला दिखाना और उनके मनों से
चमत्कारों का भूत मिटाना है अभी
तर्कशील ने अपनाया नारा है यही

हर बात पर तर्क कर चलते हैं
इंसान है सबको इन्सानियत की राह पर
लाना व दिखाना है अभी

कुछ नहीं होता पैरों-हाथों में डाले धागों से कभी
अगर होता तो क्या मैं मुसीबतों व बीमारियों से बचती नहीं

''तर्कशील'' पढ़ने के बाद मैंने जाना
कितने देव पुरुष हार गए लोगों को अब
समझाना है यही

'मन की बात' न मानों उस पर विचार या तर्क
करे उसका निचोड़ निकालो यूंही किसी की बात को
झुठलाता नहीं कोई

तर्कशील को अपनाकर देखो समझ आ जाएगा
अपनी सोच को बदलना है कैसे।

मनप्रीत कौर,
गांव संधुआ (चमकौर साहिब) 98147-60010

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी
लड़ती रहेगी
गाती रहेगी
मुक्ति की राह पर

-शशि प्रकाश

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की मीटिंग का आयोजन हुआ

दिनांक 17-11-2023 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा की एक मीटिंग का आयोजन डॉ. अंबेदकर भवन तरावड़ी (करनाल) में किया गया। बैठक में पहुंचे सभी प्रतिनिधियों का स्वागत इकाई तरावड़ी के प्रधान पदम सिंह द्वारा किया गया।

बैठक को संबोधन करते हुए सर्वप्रथम राज्य कमेटी के सदस्य ईश्वर सिंह सफीदों ने कहा कि दुनिया में दो किस्म के लोग हैं। एक श्रम करके कमाने वाला और दूसरा मेहनतकशों की कमाई पर पलने वाला। समाज को आगे बढ़ाने के लिए तथा एक सुंदर समाज के निर्माण के लिए अंधविश्वासों के विरुद्ध कार्य करना समय की जरूरत है। सीवन से आए हुए साथी लक्ष्मी आनन्द ने अपनी बात रखते हुए कहा कि मरने के बाद कोई भी वापिस लौट कर नहीं आया, फिर अगला जन्म एवं पिछला जन्म के बारे में कोई कैसे जान सकता है।

बैठक में अपनी बात रखते हुए सोसायटी की नयी सदस्या शिखा तरावड़ी ने कहा कि शिक्षा शेरनी के दूध की भांति है। अत: समस्त महिलाओं का भी शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा पर एक कविता भी सुनाई। उसके बाद मा. कर्ण सिंह सफीदों ने कहा कि जिस दिन हमारे देश के लोग मंदिरों व अन्य धर्मस्थलों पर लंबी लाईन लगाने के बजाए स्कूलों लायब्रेरियों में जाने लग जाएंगे, उस दिन हमारा देश सही अर्थों में एक महान देश बन सकेगा।

राज्य कमेटी को कोषाध्यक्ष अनुपम सिंह ने सोसायटी सदस्यों से आर्थिक सहयोग देने तथा 'तर्कशील पथ' पत्रिका की सदस्यता अधिक से अधिक बढ़ाने की अपील की। कैथल इकाई के प्रधान कृष्ण राजौंद ने स्वयं के तर्कशील बनने के संस्मरण साझा किये। जीन्द से आए हुए साथी बलवान सिंह रडाना ने अपनी आपबीती सुनाते हुए बताया कि किस प्रकार से उस के परिवार ने अंधविश्वासों में पड़ कर लाखों रुपयों का नुकसान करवा लिया था। अपनी बात रखते हुए मा. कृष्ण चंद ने कहा कि अंधविश्वास फैलाने वाले चैनल स्कूल के बच्चों की बुद्धि को कुण्ठित करते हैं। इसके साथ ही मुस्कान तरावड़ी ने महिला उत्थान पर आधारित अपनी बात रखी तथा समाज में होते लड़कियों के साथ भेदभाव पर एक कविता भी सुनाई। अपनी बात रखते हुए प्रमोद तरावड़ी ने कहा कि ब्राह्मणवादी लोग दावा करते हैं कि देवी-देवताओं की मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा डाल देते हैं। परन्तु फिर वे अपने बाप दादाओं के मृतक शरीरों के प्राण क्यों नहीं डाल सकते?

कार्यक्रम को और अधिक मनोरंजक बनाते हुए सोसायटी के प्रदेशाध्यक्ष ने जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर उनके रहस्यों के बारे में समझाया। साथ ही उन्होंने अपनी बात रखते हुए बताया कि सोसायटी का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है कि जिस में लोगों में मानसिक समस्याएं उत्पन्न ही न हो सकें। साथ ही उन्होंने कहा कि सभी त्यौहार शोषक-शासक वर्ग द्वारा बनाए गए हैं और शोषित वर्ग को उसमें उलझाया गया है।

मैगजीन ''तर्कशील पथ'' के संपादक बलवन्त सिंह लेकचरार ने थोड़े शब्दों में सोसायटी का परिचय, सोसायटी के उद्देश्यों एवं तर्कशील सोसायटी द्वारा की जा रही गतिविधियों के बारे में अपनी बात रखी। उन्होंने बैठक में उपस्थित सभी साथियों से अपील की कि तर्कशील सोसायटी हरियाणा ने निर्णय लिया है कि तर्कशील सोसायटी पंजाब की भांति हरियाणा के स्कूलों में भी वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित विषयों पर विद्यार्थियों के टेस्ट लिए जाएं तथा उनमें प्रथम, द्वितीय आने वाले विद्यार्थियों को कुछ इनाम भी दिए जाएं। इसमें हरियाणा के समस्त प्रबुद्ध जनों से सहयोग लिया जाएगा।

बैठक में मंच संचालन की जिम्मेवारी मा. राकेश कुमार ट्रीमैन ने बाखूबी निभाई। अंत में साधूराम तरावड़ी द्वारा सभी तर्कशील सदस्यों का बैठक में पहुँचने का हार्दिक धन्यवाद किया गया। इकाई तरावड़ी के सभी सदस्यों ने बैठक में शामिल सभी सदस्यों के लिए जलपान एवं दोपहर के भोजन का बहुत बढ़िया इंतजाम किया था। इसके लिए इकाई तरावड़ी के साथी शाबाशी के हकदार हैं।

-0-0-0-

दीप पब्लिक स्कूल मेरी अकबरपुर में तर्कशील कार्यक्रम

दिनांक 05-08-2023 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा के साथियों ने दीप पब्लिक स्कूल मेरी अकबरपुर में चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमें फरियाद सिंह सनियाणा एवं राम प्रसाद मुगलपुरा ने विभिन्न प्रकार के जादू के ट्रिक दिखा कर उनके रहस्यों के बारे में समझाया। अपनी बात रखते हुए तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रदेशाध्यक्ष ने छात्रों को समझाया कि दुनिया में किसी के पास भी कोई अलौकिक शक्ति नहीं होती। उन्होंने सोसायटी द्वारा सभी देव पुरुषों के सामने रखी गई तर्कशील सोसायटी की 23 शर्तों की चुनौती के बारे में भी बताया। बीरु राम मुगलपुरा ने सोसायटी सदस्यों को पूरा सहयोग दिया।

स्कूल के निदेशक नरेश कुमार एवं प्रिंसीपल सतीश भारत ने इस कार्यक्रम की बहुत ही सराहना की। तर्कशील साथियों ने सभी छात्रों एवं पूरे स्टाफ को एक-एक 'तर्कशील पथ' पत्रिका तथा स्कूल की लाइब्रेरी के लिए 'देव पुरुष हार गये' पुस्तक की दो प्रतियां भी प्रदान की।

पृष्ठ 5 का शेष में मजदूरों का कोई सामाजिक जीवन नहीं है। इनका कोई संगठन नहीं है, कोई सांस्कृतिक पहचान और गतिविधि नहीं है। एक पूरा समाज बेचारगी की हालत में घुट-घुट कर जी रहा है।

संकट के ऐसे समय में हम फ़ातिमा शेख़ तथा सावित्रीबाई फुले जैसे मेहनतकशों के बीच शिक्षा और संस्कृति का विकास कराने वाले व्यक्तित्व को याद करें। उनसे प्रेरणा लेकर शिक्षा से वंचित मेहनतकशों को संगठित करें। ब्राह्मणवाद तथा पूंजी के गठजोड़ के षडयंत्रों के ख़िलाफ़ फ़ातिमा शेख़ तथा सावित्रीबाई फुले ने मेहनतकशों को जगाने की जो नींव रखी, उस पर नये संघर्ष खड़े किये जायें। आज एक बार फिर अपने समाज में शिक्षा और संस्कृति की ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए मेहनतकशों को संघर्ष की अगली पंक्ति में लाने की तैयारी करें।

हम फ़ातिमा शेख और सावित्रीबाई फुले को याद करें और सरकार की शिक्षा नीतियों के कारण शिक्षा से वंचित किए जाने की साज़िश के ख़िलाफ़ संघर्ष को संगठित करें। **93343-56085**

कविता

तानाशाह

तानाशाह को अपने किसी पूर्वज के जीवन का
अध्ययन नहीं करना पड़ता।
वह उनकी पुरानी तस्वीरों को जेब में नहीं रखता या
उनके दिल का एक्स-रे नहीं देखता।
यह स्वत: स्फूर्त तरीके से होता है कि
हवा में बंदूक की तरह उठा हुआ उसका हाथ या
बंधी हुई मुट्ठी के साथ पिस्तौल की नोक की तरह
उठी हुई अंगुली किसी पुराने तानाशाह की
याद दिला जाती है या
एक काली गुफा जैसा खुला हुआ उसका मुंह
इतिहास में किसी ऐसे ही खुले हुए मुंह की
नकल बन जाता है।
वह अपनी आंखों में
काफी कोमलता और मासूमियत लाने की कोशिश करता है
लेकिन क्रूरता, कोमलता से ज्यादा ताकतवर होती है,
इसलिए वह एक झिल्ली को भेदती हुई बाहर आती है
और इतिहास की सबसे ठंढी क्रूर आंखों में तबदील हो जाती है।
तानाशाह मुस्कुराता है
भाषण देता है और
भरोसा दिलाने की कोशिश करता है कि
वह एक मनुष्य है
लेकिन इस कोशिश में उसकी मुद्राएं और भंगिमाएं
उन दानवों-दैत्यों-राक्षसों की
मुद्राओं का रूप लेती रहती है
जिनका जिक्र प्राचीन ग्रंथों-गाथाओं-धारणाओं-विश्वासों में
मिलता है
वह सुंदर दिखने की कोशिश करता है
आकर्षक कपड़े पहनता है
बार-बार बदलता है
लेकिन इस पर उसका कोई वश नहीं कि
यह सब
एक तानाशाह का मेकअप बन कर रह जाता है।
इतिहास में तानाशाह कई बार मर चुका है
लेकिन इससे उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता
क्योंकि उसे लगता है, उससे पहले कोई नहीं हुआ है।

-मंगलेश डबराल

कृष्ण बरगाड़ी को याद करते हुए...

प्रेरणा, सबक और यादें...

कृष्ण बरगाड़ी तर्कशील आंदोलन के यशकायी नायक हैं, जिनका जीवन और कार्य उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है जो समाज में ज्ञान का प्रकाश फैलाना चाहते हैं। वे जब तक आंदोलन के साथ रहे दृढ़ कदमों से चलते रहे, नए रास्ते तलाशे। उन्होंने सदा निज त्यागकर आंदोलन को पहले रखा। अंधविश्वास और अज्ञानता के अंधेरे को हराने के लिए वे एक मशाल की तरह जले। लोगों तक वैज्ञानिक सोच लाने के लिए वे तर्कशील कारवां के नेता बने। रास्ते मे आती मुश्किलों से लड़ते रहे अपने कार्यों से दिखाया कि संस्था के लिए कार्य करते समूह के हित सदा बड़े होते हैं।

कैंसर जैसी बीमारी से बहादुरी से लड़ते हुए उन्होंने जाने के वक्त भी लोगों को एक सीख दी। जिंदगी का सफर थमने के बाद भी वे इंसानियत के प्रति वफा निभाई। मेडिकल रिसर्च के लिए उनके शरीर को प्रदान किया गया। जो उत्तर भारत का स्वयं द्वारा मेडीकल रिसर्च के लिए शरीर प्रदान करने की पहली घटना थी।

उनकी यादें हमारे मन में बसी हुई हैं ये यादें सदा चलते रहने की ताकत देती है। यह तर्कशील आंदोलन के कार्यकर्ताओं के कदमों का हौसला है। यह अंधविश्वास के अंधकार को हराने की प्रेरणा है।

हम अपने इस यश कायी नायक की 22वीं वर्षगाँठ पर उनके जीवन को नमन करते हुए उनके बताए मार्ग पर ईमानदारी से चलने का वचन देते हैं।

कृष्ण बरगाड़ी यादगारी सुबाई समागम 11 फरवरी 2024 (रविवार) को तर्कशील भवन बरनाला में होगा।

खेल और मानवता

सलाम ओनुस जबूर

भारत जैसे देश में जहां करोड़ों रुपये कमाकर आलीशान महलों में रहने वाले क्रिकेटर अपने ही देश के पीड़ित खिलाड़ियों के साथ खड़े होने से इनकार करते हैं, वहीं ट्यूनीशिया के टेनिस खिलाड़ी ओनेस जाबेओर ने खेल भावना की ऊंची मिसाल पेश करते हुए फिलिस्तीनी लोगों के पक्ष में आवाज उठाई है ।

मैच जीतने के बाद उन्होंने अपनी जीत पर गर्व करने की बजाय फिलिस्तीन में मानवता के विनाश की बात कही. उनके शब्दों में जब दुनिया में मानवता पर अत्याचार हो रहा है। दुनिया के ऐसे हालात में मेरी जीत का कोई खास मतलब नहीं है। फ़िलिस्तीन में निर्दोष लोगों, बच्चों को मरते देखना हृदयविदारक और दर्दनाक है। मैं सभी के लिए आज़ादी और शांति चाहती हूँ। उन्होंने जीती हुई धनराशि फ़िलिस्तीन को दान कर दी। ओन्स ने कहा कि ये कोई राजनीतिक संदेश नहीं बल्कि मानवतावादी संदेश है।

19 नवंबर 2023 को अहमदाबाद में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच हुए फाइनल मैच में जॉन नाम का एक ऑस्ट्रेलियाई युवक सुरक्षा घेरा तोड़ कर पिच पर बल्लेबाजी कर रहे भारतीय खिलाड़ियों के पास पहुंच गया। उसके हाथ में फिलिस्तीन का झंडा था। उन्होंने जो शर्ट पहन रखी थी, उस पर गाजा पर बमबारी बंद करो और फिलिस्तीन को आजाद करो के नारे लिखे हुए थे। इससे पहले कि सुरक्षाकर्मी उन्हें खेल के मैदान से बाहर ले जाते, जॉन ने देश और दुनिया में फिलिस्तीन के पक्ष में अपनी आवाज बुलंद की। उन्होंने वो कर दिखाया जो आज तक किसी क्रिकेटर ने नहीं किया। दुनिया कर सकती है। जॉन के उद्यम और मानवीय भावना को सलाम।

जनवरी – फरवरी 2024 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 11 अंक 1

तर्कशील सोसायटी के बढ़ते कदमों का सफ़र

पांचवी विद्यार्थी चेतना परीक्षा 2023 के सेकेंडरी पंजाब के विजेता विद्यार्थियों के साथ मुख्य मेहमान डॉ. कुलदीप सिंह दीप और तर्कशील सोसायटी पंजाब की कार्यकारिणी

पांचवी विद्यार्थी चेतना परीक्षा 2023 के मिडिल स्तर के विजेता विद्यार्थियों के साथ मुख्य मेहमान एंव तर्कशील सोसायटी पंजाब की कार्यकारिणी

सम्मान समारोह में कोरियो ग्राफी पस्तुत करने वाली टीम बाल कला मंच कुलोवाल (गढ़शंकर) के बाल कलाकार एंव राज्य कार्यकारिणी

विद्यार्थी चेतना परीक्षा के राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में उपस्थित विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक व तर्कशील कार्यकर्ता

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Cell. 98769 53561, 98728 74620
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....